सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 60, नई दिल्ली, शनिवार 10 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन के युद्ध में संयम ही अस्त्र है।

03 दिल्ली भर में लगाए जाएंगे सायरन – परवेश साहिब सिंह
06 संबंधों के बदलते समीकरण
08 चांदीपुर मिसाइल मिसाइल परीक्षण केंद्र पर सुरक्षा बढ़ाई गई;

"परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" अपने द्वितीय वार्षिकी समारोह में आपको आमंत्रित करता है

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से निष्पक्ष समाचार प्रदान करते हुए अपने 2 साल पूरे करने में सक्षम रहा। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

---- सम्मान समारोह -----

दिनांक 17 मई 2025,
स्थान :– कंस्टीट्यूशन क्लब आफ इंडिया, रफी मार्ग, नई दिल्ली,
समय :– प्रात 10 बजे से शाम 7 बजे तक,

मुख्य अतिथि ₹श्री शंभू सिंह₹, आई .ए .एस . सचिव
शिपिंग भारत सरकार (सेवा निवृत्त) शिपिंग मंत्रालय

आमंत्रित विशेष अतिथि

1 . श्री चंद्रमोहन आईएएस सेवा निवृत
2 . श्री अमर पाल सिंह जॉइंट कमिश्नर, भारत सरकार
3 . श्री आर के भटनागर, आईएएस सेवा निवृत
4 . साइकिलिस्ट योगेंद्र सिंह, परामर्शदाता
5 . श्री एम के गिरी, अधिकृत वरिष्ठ अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
6 . श्री अनिल छिक्कारा, उपायुक्त परिवहन सेवा निवृत, परामर्शदाता
7 . श्री महाराज सिंह, मोटर वाहन नियम/अधिनियम परामर्शदाता
8 . श्री अजय शाह, सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
9 . पायलट अनिल शर्मा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
10 . श्री प्रशांत चोपड़ा सड़क सुरक्षा परामर्शदाता
11 . श्री राजीव शरद सड़क सुरक्षा परामर्शदाता

12 . डॉ भरत सिंह, शिक्षाविद् (प्रिंस इंस्टीट्यूट आफ इन्नोवेटिव टेक्नोलॉजी ग्रेटर नोएडा गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश)
13 . श्री हेतराम
14 . श्री अशोक
15 . श्री राहुल गुप्ता
16 . श्री ए ई कौशिक
17 . श्री अशोक सक्सेना
18 . श्री अशोक नारंग
19 . श्री बरुड ठाकुर अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय भारत
20 . श्री नरेन्द्र

के साथ भारत देश में जनहित एवम् कल्याणकारी कार्यों में योगदान प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं/ संस्थाओं / ट्रस्ट को सम्मान प्रदान किया जाएगा।

' परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" के द्वितीय वार्षिकी समारोह में मुख्य रूप से

1 . सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने,
2 . दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य बनाने,
3 . लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य ?"
4 . "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
5 . "दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य कैसे बनाया जा सकता है?"

पर परामर्शदाताओं के विचार आप को प्राप्त होगे। इसके साथ इस समारोह में

1 . वक्ताओं को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2 . परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3 . सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4 . परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5 . समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े श्रेष्ठ एंकर, वीडियोग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिषाचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

– संजय कुमार बाटला
संपादक

ज्यादातर ई-रिक्शा निर्माताओं की बिक्री क्यों नहीं बढ़ती वो छुपे हुए कारण जिन पर कोई बात नहीं करता

संजय बाटला

ड्राइवर को ट्रेनिंग न देना – ग्रोथ का एक खामोश कातिल निर्माता अपने खरीदारों को एजुकेट नहीं करते। लेकिन समस्या इससे भी गहरी है

ड्राइवरों को कभी ठीक से ट्रेनिंग नहीं दी जाती। जब एक ई-रिक्शा ड्राइवर को सौंपा जाता है, तो कोई यह नहीं बताताः

कैसे धीरे और स्मूथ तरीके से ड्राइव करना है,

बिना झटके के एक्सीलरेशन या अचानक ब्रेकिंग के कैसे गाड़ी में ओवरलोडिंग से बचना है

कैसे शुरुआती खराबी के संकेत पहचानने हैं

नियमित सर्विसिंग क्यों जरूरी है सुरक्षा और लंबे वाहन जीवन के लिए

ड्राइवर को अक्सर बिना किसी बेसिक समझ के गाड़ी चलाने दिया जाता है।

और फिर क्या होता है ?

गाड़ियाँ खराब और ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर बहुत रफ चलाई जाती हैं।

मोटर और कंट्रोलर पर ज्यादा लोड आता है और वे स्ट्रेस में आ जाते हैं।

डिफरेंशियल, ब्रेक शूज़ और शॉकर बहुत जल्दी घिस जाते हैं।

चाहे आपके पार्ट्स कितने भी मजबूत क्यों न हों, खराब ड्राइविंग आदतें उन्हें जल्दी खराब कर देती हैं।

ज्यादातर फील्ड शिकायतें—चाहे वो मोटर हीटिंग हो, कंट्रोलर बर्निंग, डिफरेंशियल नॉइज़ या ब्रेक फेलियर अक्सर खराब ड्राइविंग हैबिट्स की वजह से होती हैं, ना कि खराब प्रोडक्ट या क्वालिटी की वजह से।

लेकिन इस अज्ञानता के परिणाम क्या होते हैं ?

बार-बार सड़क पर गाड़ी खराब होना

ग्राहकों की लगातार शिकायतें

निर्माता और डीलर के बीच भरोसे की कमी

जैसे निर्माता छोटे इश्यू पर तुरंत सप्लायर बदल देते हैं, वैसे ही डीलर भी जल्दी निर्माता बदल देते हैं।

और फिर क्या होता है ?

निर्माता लगातार संघर्ष करता रहता है एक समस्या से दूसरी में सिर्फ मौजूदा सेल्स को बचाने में लगा रहता है। हर समय फील्ड की फायर फाइटिंग में उलझा रहता है और ग्रोथ बस एक सपना बनकर रह जाती है।

कटु सच्चाई यह है: इन्हीं कारणों से निर्माता धीरे-धीरे अपने डीलरों का भरोसा खो देते हैं और एक बार जब भरोसा चला गया, सेल्स भी गिरने लगती है।

एक्सपैंशन की जगह, निर्माता उसी सिकुड़ते मार्केट में सर्वाइव करने की जद्दोजहद में फंसे रह जाते हैं।

फाइल संख्या / फ.नो. ए-11015/03/2023-डीजीसीडी(एसट.)
भारत सरकार/ गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया,
गृह मंत्रालय / मिनिस्ट्री ऑफ़ होम अफेयर्स,
महानिदेशक-अग्निशमन सेवा, नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षक
महानिदेशालय अग्निशमन सेवा, नागरिक सुरक्षा एवं होम गार्ड
स्थापना अनुभाग /एस्टेब्लिशमेंट सेक्शन
पूर्वी खंड-7, तल-7,
ईस्ट ब्लॉक-VII, लेवल-VII, आर.के. पुरम, नई दिल्ली आर.के. पुरम, नई दिल्ली-110066, दिनांक :09.05.2025
संयुक्त सचिव, भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग, रक्षा मंत्रालय, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली।
विषय: भूतपूर्व सैनिकों का नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवक के रूप में नामांकन-संबंधी।

महोदय,

यह आपके ध्यान में लाना है कि 07.05.2025 को भारत के 400 जिलों में एक राष्ट्रव्यापी नागरिक सुरक्षा मॉक ड्रिल अभ्यास आयोजित किया गया था। जिसमें हवाई हमले की चेतावनी का परिदृश्य सिम्युलेट किया गया था और इसके बाद ब्लैक आउट, अग्नि बचाव, खोज और बचाव, नागरिकों को सुरक्षित क्षेत्रों/बंकरों में निकालना, अस्थायी अस्पतालों का निर्माण आदि का भी अनुकरण किया गया था। इसके बाद 08.05.2025 को भारत सरकार के सचिव के साथ बैठक के दौरान माननीय प्रधान मंत्री ने नागरिकों को स्वयंसेवक के रूप में नागरिक सुरक्षा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करके नागरिक सुरक्षा को मजबूत करने का निर्देश दिया। यह निर्देश केंद्रीय गृह सचिव ने भी MHA में अपनी बैठक के दौरान 08.05.2025 को दोहराया था। महानिदेशक (एफएस, सीडी एंड एचजी) को पूर्व सैनिकों तक पहुंचने के लिए रक्षा मंत्रालय के साथ समन्वय करने के लिए कहा गया था

वर्तमान में सिविल डिफेंस 244 जिलों (सूची संलग्न) में कार्यरत एक स्वैच्छिक सेवा है और इसे यूनियन वॉर बुक के अनुसार शांति काल और तैयारी चरण या युद्ध काल के दौरान जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं। इसके अलावा सिविल डिफेंस आपदाओं के मामले में भी एक प्रतिक्रियाकर्ता है। इस स्वैच्छिक संगठन में भूतपूर्व सैनिकों के नामांकन से सिविल डिफेंस के मौजूदा ढांचे में वर्षों के अनुभव, उत्साह और ऊर्जा से संचित ज्ञान आएगा। भूतपूर्व सैनिकों को सिविल डिफेंस के रूप में नामांकित करने के प्रावधान

रक्षा स्वयंसेवकों को पहले से ही नागरिक सुरक्षा विनियम, 1968 में अधिसूचित किया गया है (प्रतिलिपि संलग्न है)।

अनुरोध है कि आपके सम्मानित कार्यालय से सभी भूतपूर्व सैनिकों (गैर आरक्षित सूची) को एक अनुरोध (इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम से जैसा उचित समझा जाए) दिया जाए, जिसमें सभी भूतपूर्व सैनिकों को नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवक के रूप में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इस संबंध में किसी भी अन्य स्पष्टीकरण के लिए कृपया ADG, नागरिक सुरक्षा, श्री उमेश शर्मा, कार्यालय संख्या 011-20863645 और ईमेल आईडी adgcom.dgfs-cdhg@gov.in से संपर्क किया जा सकता है।

इसे महानिदेशक (एफएस, सीडी एवं एचजी) का अनुमोदन प्राप्त है।

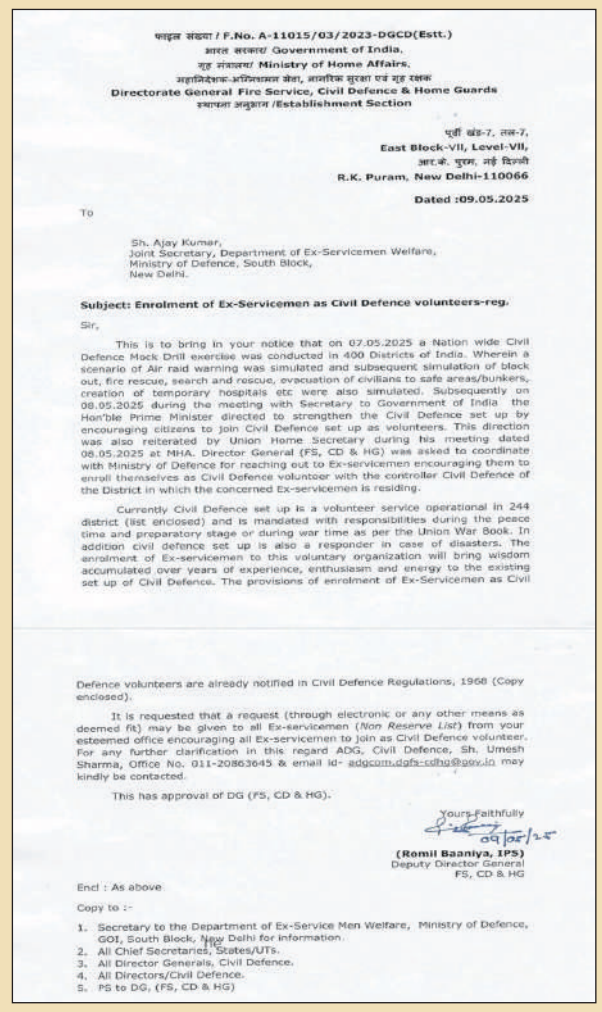

फाइल संख्या / F.No. A-11015/03/2023-DGCD(Estt.)
भारत सरकार/ Government of India,
गृह मंत्रालय/ Ministry of Home Affairs,
महानिदेशक-अग्निशमन सेवा, नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षक
Directorate General Fire Service, Civil Defence & Home Guards
स्थापना अनुभाग /Establishment Section

पूर्वी खंड-7, तल-7,
East Block-VII, Level-VII,
आर.के. पुरम, नई दिल्ली
R.K. Puram, New Delhi-110066

Dated :09.05.2025

To

Sh. Ajay Kumar,
Joint Secretary, Department of Ex-Servicemen Welfare,
Ministry of Defence, South Block,
New Delhi.

Subject: Enrolment of Ex-Servicemen as Civil Defence volunteers-reg.

Sir,

This is to bring in your notice that on 07.05.2025 a Nation wide Civil Defence Mock Drill exercise was conducted in 400 Districts of India. Wherein a scenario of Air raid warning was simulated and subsequent simulation of black out, fire rescue, search and rescue, evacuation of civilians to safe areas/bunkers, creation of temporary hospitals etc were also simulated. Subsequently on 08.05.2025 during the meeting with Secretary to Government of India the Hon'ble Prime Minister directed to strengthen the Civil Defence set up by encouraging citizens to join Civil Defence set up as volunteers. This direction was also reiterated by Union Home Secretary during his meeting dated 08.05.2025 at MHA. Director General (FS, CD & HG) was asked to coordinate with Ministry of Defence for reaching out to Ex-servicemen encouraging them to enroll themselves as Civil Defence volunteer with the controller Civil Defence of the District in which the concerned Ex-servicemen is residing.

Currently Civil Defence set up is a volunteer service operational in 244 district (list enclosed) and is mandated with responsibilities during the peace time and preparatory stage or during war time as per the Union War Book. In addition civil defence set up is also a responder in case of disasters. The enrolment of Ex-servicemen to this voluntary organization will bring wisdom accumulated over years of experience, enthusiasm and energy to the existing set up of Civil Defence. The provisions of enrolment of Ex-Servicemen as Civil Defence volunteers are already notified in Civil Defence Regulations, 1968 (Copy enclosed).

It is requested that a request (through electronic or any other means as deemed fit) may be given to all Ex-servicemen (Non Reserve List) from your esteemed office encouraging all Ex-servicemen to join as Civil Defence volunteer. For any further clarification in this regard ADG, Civil Defence, Sh. Umesh Sharma, Office No. 011-20863645 & email Id- adgcom.dgfs-cdhg@gov.in may kindly be contacted.

This has approval of DG (FS, CD & HG).

Yours Faithfully
(Romil Baaniya, IPS)
Deputy Director General
FS, CD & HG

Encl : As above

Copy to :-

1. Secretary to the Department of Ex-Service Men Welfare, Ministry of Defence, GOI, South Block, New Delhi for information.
2. All Chief Secretaries, States/UTs.
3. All Director Generals, Civil Defence.
4. All Directors/Civil Defence.
5. PS to DG, (FS, CD & HG)

आपका विश्वासी
09/05/25
(रोमिल बानिया, आईपीएस) उप महानिदेशक, एफएस, सीडी और एचजी
संलग्नः जैसा कि ऊपर बताया गया है
में कॉपीः-
1. सचिव, भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली को जानकारी हेतु भेजें।
2. सभी मुख्य सचिव, राज्य/संघ राज्य क्षेत्र।
3. सभी महानिदेशक, नागरिक सुरक्षा।
4. सभी निदेशक/नागरिक सुरक्षा।
5. महानिदेशक के निजी सचिव, (एफएस, सीडी एवं एचजी)

स्पेन घूमने का बना रहे प्लान तो जरूर देखें ये 3 जगहें, नजारे देख रह जाएंगे दंग

अगर आप भी स्पेन में घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको पारंपरिक फ्लेमेंको डांस, ला फेरेरिया, टोमाटीना, बुल रनिंग फेस्टिवल और म्यूजिक इवेंट आदि देखने जरूर जाना चाहिए। ऐसे में आज हम आपको स्पेन की कुछ खूबसूरत जगहों के बारे में बताने वाले है।

यूरोप महाद्वीप के सबसे सुंदर देशों में स्पेन का नाम शामिल है। यह घूमने के लिहाज से काफी अच्छी जगह है। स्पेन के बर्सिलोना, मलागा और कैनरी आइलैंड्स जैसी जगहों पर लोग लंबे ट्रिप पर आते हैं। स्पेन अपने खूबसूरत समुद्री तटों के लिए पूरी दुनिया में फेमस है। अगर आप भी स्पेन में घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो आपको पारंपरिक फ्लेमेंको डांस, ला फेरेरिया, टोमाटीना, बुल रनिंग फेस्टिवल और म्यूजिक इवेंट आदि देखने जरूर जाना चाहिए। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको स्पेन की कुछ खूबसूरत जगहों के बारे में बताने वाले है। जहां का नजारा देखने के बाद आपका भी इन जगहों पर जाने का मन हो जाएगा।

बर्सिलोना

अगर आप स्पेन गए हैं, तो आपको यहां के सबसे खास शहर बर्सिलोना जरूर घूमना चाहिए। यहां का शानदार आर्किटेक्चर, फुटबॉल, कला संस्कृति, नाइटलाइफ और सुंदर समुद्री तटों के लिए भी जाना जाता है। बर्सिलोना में लोग स्पेशल एंटोनी गौडी की वास्तुकला का नजारा देखने जाते है। यहां पर सग्रादा फमिलिया नामक चर्च देखकर खुद की आंखों पर भरोसा नहीं कर पाएंगे। यह डिजाइन काफी अद्भुत है। स्पेन में यह घूमने के लिए काफी अच्छी जगह है। यहां पर आप पार्क गुएल, ला रैंबला और कैंप नोउ देखने भी जा सकते हैं।

मैड्रिड

मैड्रिड स्पेन की राजधानी है और यह एक खास जगह है। मैड्रिड में आपको आधुनिकता और इतिहास का बेहतरीन संगम देखने को मिलेगा। एक जहां पर पुरानी इमारतों का डिजाइन आपको आकर्षित करेगा, तो वहीं नई इमारतों से भी आप नजर नहीं हटा पाएंगे। मैड्रिड में आप सैंटियागो बर्नबू स्टेडियम देखने जरूर जाएं। भले ही आप फुटबॉल प्रेमी नहीं भी हैं, तो यहां जाना आपको पसंद आएगा। वहीं यूरोपियन आर्ट और इतिहास में भारतीय पर्यटकों को रुचि होती है, उनके लिए Prado Museum और Reina Sofia Museum के लिए भी अच्छा है। आप यहां पर रॉयल पैलेस ऑफ़ मैड्रिड, ग्रैन विया, सैंटियागो बर्नबू स्टेडियम और प्राडो म्यूज़ियम आदि घूम सकते हैं।

सेविल, स्पेन

आपको सेविल में स्पेनिश संस्कृति का असली रंग देखने को मिलेगा। आप यहां पर अल्काजार पैलेस और सेविल कैथेड्रल जैसी जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं। इसके अलावा मूरिश राजाओं द्वारा बनाए गए फेमस शाही महल भी देखने के लिए जा सकते हैं। सेविल कैथेड्रल और ला गिराल्डा टॉवर भी घूमने जा सकते हैं, यह दुनिया के सबसे बड़े गॉथिक चर्चों में से एक है।

भगवान शिव को समर्पित है बिहार का ये फेमस मंदिर, दर्शन मात्र से पूरी होती हैं भक्तों की मुराद

बिहार में बोधगया, पटन देवी मंदिर और राजधानी पटना में स्थित हनुमान मंदिर के दर्शन के लिए रोजाना हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। बिहार में स्थित अशोक धाम एक ऐसा धार्मिक स्थल है, जोकि पूर्ण रूप से भगवान शिव को समर्पित है।

देश के पूर्वी भाग में स्थित बिहार प्रसिद्ध और ऐतिहासिक राज्य है। क्षेत्रफल के हिसाब से यह 12वां सबसे बड़ा राज्य है। वहीं ऐतिहासिक राज्य को बुद्ध की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। बिहार ऐतिहासिक चीजों के साथ ही कई धार्मिक स्थलों के लिए भी जाना जाता है। बिहार में बोधगया, पटन देवी मंदिर और राजधानी पटना में स्थित हनुमान मंदिर के दर्शन के लिए रोजाना हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। बिहार में स्थित अशोक धाम एक ऐसा धार्मिक स्थल है, जोकि पूर्ण रूप से भगवान शिव को समर्पित है। सावन और महाशिवरात्रि के मौके पर अशोक धाम में हजारों की संख्या में शिव भक्त अशोक धाम पहुंचते हैं। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको अशोक धाम के बारे में बताने जा रहे हैं।

अशोक धाम

बिहार के लखीसराय जिले में स्थित अशोक धाम भगवान शिव का फेमस और प्राचीन मंदिर है। अशोक धाम को इंद्रदमनेश्वर महादेव मंदिर के नाम से जाना जाता है। अशोक धाम बिहार की राजधानी पटना से करीब 125 करीब किमी है। वहीं यह बेगूसराय से 44 किमी दूर और बरौनी से करीब 39 किमी की दूरी पर मौजूद है।

धार्मिक मान्यता

बिहार राज्य के लखीसराय में स्थित अशोक धाम मंदिर को लेकर रोचक मान्यता है। बताया जाता है कि अशोक नाम का एक युवक रोजाना गाय-भैंस चराने आया करता था। एक दिन वह युवक अपने स्थानीय दोस्तों के साथ गिल्ली-डंडा खेल रहा था। तभी उसको शिवलिंग का ऊपरी भाग दिखा। इस घटना के बाद यह मंदिर अपने अस्तित्व में आया और लोग इसको अशोक धाम के नाम से जानते हैं।

मंदिर की खासियत

बता दें कि अशोक धाम मंदिर पूर्ण रूप से भगवान भोलेनाथ को समर्पित है। यह मंदिर सिर्फ लखीसराय ही नहीं बल्कि पूरे बिहार का फेमस और प्राचीन मंदिर माना जाता है। यहां पर हर समय भक्तों की भीड़ देखने को मिलती है।

स्थानीय लोगों के लिए भी अशोक धाम मंदिर काफी पवित्र स्थल है। लोगों का मानना है कि किसी भी विपदा या समस्या के दौरान मंदिर लोगों की रक्षा करता है। इस मंदिर की वास्तुकला भी लोगों को खूब आकर्षित करती है। अशोक धाम मंदिर को बिहार का देवघर भी बोला जाता है।

महाशिवरात्रि पर लगता है भक्तों का तांता

इस मंदिर में महाशिवरात्रि के मौके पर भक्तों का तांता लगता है। राज्य के हर कोने से लोग अपनी मुरादें लेकर अशोक धाम मंदिर पहुंचते हैं। वहीं इस दौरान मंदिर में अधिक चहल-पहल भी रहती है और जो भी महाशिवरात्रि के मौके पर सच्चे मन से अशोक धाम पहुंचता है, वहां पर उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। यहां पर सावन में मेला भी लगता है।

आसपास घूमने की जगहें

अशोक धाम के पास आप कई अन्य शानदार जगहों को एक्सप्लोर कर सकते हैं। आप यहां पर भगवती स्थान मंदिर, श्रृंगी ऋषि आश्रम और अभयनाथ मंदिर जैसे धार्मिक स्थलों पर घूमने के लिए जा सकते हैं। इसके अलावा किऊल नदी, काबर झील, अमरासनी हिल्स और लाल पहाड़ी जैसी खूबसूरत जगहें देख सकती हैं।

भगवान श्रीगणेश के 8 अवतारो की कथा

वक्रतुंड :- वक्रतुंड का अवतार राक्षस मत्सरासुर के दमन के लिए हुआ था। मत्सरासुर शिव भक्त था और उसने शिव की उपासना करके वरदान पा लिया था कि उसे किसी से भय नहीं रहेगा। मत्सरासुर ने देवगुरु शुक्राचार्य की आज्ञा से देवताओं को प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। उसके दो पुत्र भी थे सुंदरप्रिय और विषयप्रिय, ये दोनों भी बहुत अत्याचारी थे। सारे देवता शिव की शरण में पहुंच गए। शिव ने उन्हें आश्वासन दिया कि वे गणेश का आह्वान करें, गणपति वक्रतुंड अवतार लेकर आएंगे। देवताओं ने आराधना की और गणपति ने वक्रतुंड अवतार लिया। वक्रतुंड भगवान ने मत्सरासुर के दोनों पुत्रों का संहार किया और मत्सरासुर को भी पराजित कर दिया। वही मत्सरासुर कालांतर में गणपति का भक्त हो गया।

एकदंत :- महर्षि च्यवन ने अपने तपोबल से मद की रचना की। वह च्यवन का पुत्र कहलाया। मद ने दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य से दीक्षा ली। शुक्राचार्य ने उसे हर तरह की विद्या में निपुण बनाया। शिक्षा होने पर उसने देवताओं का विरोध शुरू कर दिया। सारे देवता उससे प्रताड़ित रहने लगे। मद इतना शक्तिशाली हो चुका था कि उसने भगवान शिव को भी पराजित कर दिया। सारे देवताओं ने मिलकर गणपति की आराधना की। तब भगवान गणेश एकदंत रूप में प्रकट हुए। उनकी चार भुजाएं थीं, एक दांत था, पेट बड़ा था और उनका सिर हाथी के समान था। उनके हाथ में पाश, परशु और एक खिला हुआ कमल था। एकदंत ने देवताओं को अभय वरदान दिया और मदासुर को युद्ध में पराजित किया।

महोदर :- जब कार्तिकेय ने तारकासुर का वध कर दिया तो दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने मोहासुर नाम के दैत्य को संस्कार देकर देवताओं के खिलाफ खड़ा कर दिया। मोहासुर से मुक्ति के लिए देवताओं ने गणेश की उपासना की। तब गणेश ने महोदर अवतार लिया। महोदर का उदर यानी पेट बहुत बड़ा था। वे मूषक पर सवार होकर मोहासुर के नगर में पहुंचे तो मोहासुर ने बिना युद्ध किये ही गणपति को अपना इष्ट बना लिया।

गजानन :- एक बार धनराज कुबेर भगवान शिव-पार्वती के दर्शन के लिए कैलाश पर्वत पर पहुंचा। वहां पार्वती को देख कुबेर के मन में काम प्रधान लोभ जागा। उसी लोभ से लोभासुर का जन्म हुआ। वह शुक्राचार्य की शरण में गया और उसने शुक्राचार्य के आदेश पर शिव की उपासना शुरू की। शिव लोभासुर से प्रसन्न हो गए। उन्होंने उसे सबसे निर्भय होने का वरदान दिया। इसके बाद लोभासुर ने सारे लोकों पर कब्जा कर लिया और खुद शिव को भी उसके लिए कैलाश को त्यागना पड़ा। तब देवगुरु ने सारे देवताओं को गणेश की उपासना करने की सलाह दी। गणेश ने गजानन रूप में दर्शन दिए और देवताओं को वरदान दिया कि मैं लोभासुर को पराजित करूंगा। गणेश ने लोभासुर को युद्ध के लिए संदेश भेजा। शुक्राचार्य की सलाह पर लोभासुर ने बिना युद्ध किए ही अपनी पराजय स्वीकार कर ली।

लंबोदर :- समुद्रमंथन के समय भगवान विष्णु ने जब मोहिनी रूप धरा तो शिव उन पर काम मोहित हो गए। उनका शुक्र स्खलित हुआ, जिससे एक काले रंग के दैत्य की उत्पत्ति हुई। इस दैत्य का नाम क्रोधासुर था। क्रोधासुर ने सूर्य की उपासना करके उनसे ब्रह्मांड विजय का वरदान ले लिया। क्रोधासुर के इस वरदान के कारण सारे देवता भयभीत हो गए। वो युद्ध करने निकल पड़ा। तब गणपति ने लंबोदर रूप धरकर उसे रोक लिया। क्रोधासुर को समझाया और उसे ये आभास दिलाया कि वो संसार में कभी अजेय योद्धा नहीं हो सकता। क्रोधासुर ने अपना विजयी अभियान रोक दिया और सब छोड़कर पाताल लोक में चला गया।

विकट :- भगवान विष्णु ने जलंधर के विनाश के लिए उसकी पत्नी वृंदा का सतीत्व भंग किया। उससे एक दैत्य उत्पन्न हुआ, उसका नाम था कामासुर। कामासुर ने शिव की आराधना करके त्रिलोक विजय का वरदान पा लिया। इसके बाद उसने अन्य दैत्यों की तरह ही देवताओं पर अत्याचार करने शुरू कर दिए। तब सारे देवताओं ने भगवान गणेश का ध्यान किया। तब भगवान गणपति ने विकट रूप में अवतार लिया। विकट रूप में भगवान मोर पर विराजित होकर अवतरित हुए। उन्होंने देवताओं को अभय वरदान देकर कामासुर को पराजित किया।

विघ्नराज :- एक बार पार्वती अपनी सखियों के साथ बातचीत के दौरान जोर से हंस पड़ीं। उनकी हंसी से एक विशाल पुरुष की उत्पत्ति हुई। पार्वती ने उसका नाम मम (ममता) रख दिया। वह माता पार्वती से मिलने के बाद वन में तप के लिए चला गया। वहीं उसकी मुलाकात शम्बरासुर से हुई।* शम्बरासुर ने उसे कई आसुरी शक्तियां सीखा दीं। उसने मम को गणेश की उपासना करने को कहा। मम ने गणपति को प्रसन्न कर ब्रह्मांड का राज मांग लिया। शम्बर ने उसका विवाह अपनी पुत्री मोहिनी के साथ कर दिया। शुक्राचार्य ने मम के तप के बारे में सुना तो उसे दैत्यराज के पद पर विभूषित कर दिया। ममासुर ने भी अत्याचार शुरू कर दिए और सारे देवताओं के बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया। तब देवताओं ने गणेश की उपासना की। *गणेश विघ्नराज के रूप में अवतरित हुए। उन्होंने ममासुर का मान मर्दन कर देवताओं को छुड़वाया।

धूम्रवर्ण :- एक बार भगवान ब्रह्मा ने सूर्यदेव को कर्म राज्य का स्वामी नियुक्त कर दिया। राजा बनते ही सूर्य को अभिमान हो गया। उन्हें एक बार छींक आ गई और उस छींक से एक दैत्य की उत्पत्ति हुई। उसका नाम था अहम। वो शुक्राचार्य के समीप गया और उन्हें गुरु बना लिया। वह अहम से अहंतासुर हो गया। उसने खुद का एक राज्य बसा लिया और भगवान गणेश को तप से प्रसन्न करके वरदान प्राप्त कर लिए। उसने भी बहुत अत्याचार और अनाचार फैलाया। तब गणेश ने धूम्रवर्ण के रूप में अवतार लिया। उनका वर्ण धुंए जैसा था। वे विकराल थे। उनके हाथ में भीषण पाश था जिससे बहुत ज्वालाएं निकलती थीं। धूम्रवर्ण ने अहंतासुर का पराभाव किया। उसे युद्ध में हराकर अपनी भक्ति प्रदान की।

उपासना एक आवश्यक धर्म कर्तव्य

हमारे नित्य कर्म में जिस प्रकार स्नान, भोजन श्रम/विश्राम आवश्यक हैं उसी प्रकार गायत्री उपासना के लिए एक छोटा समय भाग नियत रहना चाहिये। सद्बुद्धि से बढ़कर और कोई सम्पत्ति इस संसार में नहीं। जब कि साधारण मूल्य वाली वस्तुओं के उपार्जन के लिए हम इतना श्रम करते हैं तो क्या हमें इस धरती की सबसे श्रेष्ठ सम्पदा का उपार्जन करने के लिए कुछ भी समय न लगाने की हठ पर ही अड़ा रहना उचित है? गायत्री के प्रथम स्तर जिसमें जप, अनुष्ठानों, बीज मंत्रों और अमुक विधि/विधानों की आवश्यक होती है, सर्व साधारण के लिए सरल है। इसमें कोई भूल रहने पर भी हानि की संभावना नहीं रहती। थोड़ा करने या विधि/विधान की पूरी जानकारी न होने पर लाभ भले ही थोड़ा मिले पर हानि या प्रतिकूल फल की तो किसी भी दशा में कोई आशंका नहीं रहती। मानव प्राणी में मानवता की विशेषता को बढ़ाने वाली इस आध्यात्म/विज्ञान सम्मत परम श्रेयस्कर प्रक्रिया को हममें से प्रत्येक को किसी न किसी रूप में अपनाना ही चाहिए। दैनिक जीवन का एक आवश्यक धर्म/कर्तव्य समझ कर उसे अपने नित्य/कर्म में उचित स्थान देना ही चाहिये।

माँ बाप व शिक्षकों को बच्चों के प्रति संवेदनशीलता जरूरी: ममता मिश्रा

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। सविता स्मृति स्वरोज फाउंडेशन, बिलासपुर द्वारा जीवन की समझ विषय पर शिक्षक पालक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला सरकंडा बिलासपुर स्थित एबीएम पब्लिक स्कूल में वहाँ की प्राचार्य मोना चावडा के सहयोग से संपन्न हुई।

इस कार्यशाला में ममता मिश्रा जो कि मूक बधिर बच्चों की प्रशिक्षिका, संरक्षक और शहर की जानी मानी दिव्यांगों की समाज सेविका हैं। आपने अपने उद्बोधन में कहा कि मां बाप और शिक्षकों को बच्चों के प्रति बहुत ही संवेदनशील तरीके से और धीरज के साथ काम करने की जरूरत है। मां बाप और शिक्षकों को भी अपने बच्चों या छात्रों की तुलना दूसरे बच्चों से नहीं करना चाहिए। अपने बच्चों पर दबाव नहीं रखना चाहिए कि तुम्हें इंजीनियर या डॉक्टर ही बनना है। हमने तुम्हारे ऊपर इतना खर्च किया है तो तुम्हें मेरिट में आना ही होगा या यह बनना ही होगा। हमें बच्चों की क्षमता का भी

आंकलन करना चाहिए कि वह कितना कर सकता है। शिक्षकों और मां बाप तीनों को आपस में सामंजस्य बनाकर रखना चाहिए।

डॉक्टर रश्मि बुधिया ने सविता प्रथमेश को याद करते हुए कहा कि उन्होंने अपने कम जीवन में भी इतने अच्छे काम किए कि आज हम उन्हें याद कर रहे हैं। डॉक्टर बुधिया ने कहा कि हमें अपने बच्चों को छात्रों को शिक्षा का मूल गुण विनयशीलता सिखाना चाहिए, क्योंकि "विद्या ददाति विनयं" यदि मैं एक डॉक्टर होकर अपने मरीजों से अपने कर्मचारियों से सम्मानपूर्वक सहानुभूति से बात नहीं कर पाऊं तो मेरी शिक्षा का क्या महत्व। यही जीवन के मूल्य हैं। डॉक्टर रश्मि बुधिया जो शहर की जानी मानी स्त्री रोग विशेषज्ञ, समाजसेवी, पशुप्रेमी और पर्यावरण सेवी भी हैं, ने उपस्थित श्रोताओं को रोगों से बचने के लिए कई प्रकार की वैक्सीन की जानकारी भी दी।

कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी शिक्षकों एवं पालकों को संस्था की तरफ से प्रमाणपत्र अतिथि वक्ता ममता मिश्रा ने प्रदान किए। अतिथि वक्ताओं एवं प्राचार्य मोना चावडा का धन्यवाद संस्था के निदेशक प्रथमेशसविता ने पौधे देकर किया। कार्यक्रम का संचालन अकांक्षा बाजपेयी ने किया एवं आभार प्रदर्शन निदेशक शिवा मिश्रा ने किया। उपस्थित अतिथियों में कविता पटवर्द्धन, निदेशक दिव्या बाजपेयी, महिमा दुबे, चंद्रप्रदीप बाजपेयी, हेमंत चावडा, समर्पण मिश्रा, हर्ष मिश्रा व हेमंत दुबे मुख्य थे।

गहनों का वैज्ञानिक महत्व

औरतों का शरीर और मन पुरुषों की अपेक्षा कोमल, संवेदनशील माना गया है. औरतों के शरीर में हारमोंस के उतार चढाव का शरीर और मन, विचारों पर काफी प्रभाव होता है. घर परिवार की जिम्मेदारियों की बात की जाय तो औरतें तन-मन से समर्पित रहती है...ऐसे में प्राचीन ऋषियों ने कुछ ऐसे उपकरण बनाये जिससे औरतों के मन और स्वास्थ्य की रक्षा हो सके. प्रचलन में बढ़ने पर इनको सुन्दर गहनों का रूप मिलने लगा और यह नियमपूर्वक पहने जाने लगे... सोने के गहने गर्मी और चांदी के गहने ठंडी का असर शरीर में पैदा करते हैं. कमर के ऊपर के अंगों में सोने के गहने और कमर से नीचे के अंग में चांदी के आभूषण पहनने चाहिए. यह नियम शरीर में गर्मी और शीतलता का संतुलन बनाये रखता है..

1. चूड़ी पहनने के फायदे :- चूड़ी कलाई की त्वचा से घर्षण करके हाथों में रक्त संचार बढाती है. यह घर्षण ऊर्जा भी पैदा करता है जोकि थकान को जल्दी हावी नहीं होने देता..कलाई में गहने पहनने से श्वास रोग, हृदय रोग की सम्भावना घटती है. चूड़ी मानसिक संतुलन बनाने में सहायक है चटकी हुई या दरार पड़ी हुई चूड़ियाँ नहीं पहननी चाहिए. इससे नकारात्मक ऊर्जा बढती है.. लाल रंग और हरे रंग की चूड़ियाँ सबसे अच्छे असर वाली मानी जाती हैं.

2. बिछिया पहनने के फायदे :- विवाहित महिलाएं पैरो में बीच की 3 उँगलियों में बिछिया पहनती है. यह गहना सिर्फ साज-श्रृंगार की वस्तु नही है.. दोनों पैरों में बिछिया पहनने से महिलाओं का हार्मोनल सिस्टम सही रूप से कार्य करता है, बिछिया पहनने से थाइराइड की संभावना कम हो जाती है... बिछिया एक्यूप्रेशर उपचार पद्दति पर कार्य करती है जिससे शरीर के निचले अंगों के तंत्रिका तंत्र और मांसपेशियां सबल रहती हैं... बिछिया एक खास नस पर प्रेशर बनाती है जोकि गर्भाशय में समुचित रक्तसंचार प्रवहित करती है. इस प्रकार बिछिया औरतों की गर्भधारण क्षमता को स्वस्थ रखती है... मछली की आकार की बिछिया सबसे असरदार मानी जाती है. मछली का आकार मतलब बीच में गोलाकार और आगे पीछे कुछ नोकदार सी.

3. पायल पहनने के फायदे :- पायल पैरों से निकलने वाली शारीरिक विद्युत ऊर्जा को शरीर में संरक्षित रखती है...पायल महिलाओं के पेट और निचले अंगों में वसा (फैट) बढ़ने की गति को रोकती है... वास्तु के अनुसार पायल की छनक निगेटिव ऊर्जा को दूर करती है...चांदी की पायल पैरो से घर्षण करके पैरों की हड्डियाँ मजबूत बनाती हैं.. पैर में पायल पहनने से महिला की इच्छा-शक्ति मजबूत होती है.जिससे औरतें अपने स्वास्थ्य की चिंता किये बिना पूरी लगन से परिवार के भरण-पोषण में जुटी रहती हैं.. पैरों में हमेशा चांदी की पायल पहने. सोने की पायल शारीरिक गर्मी का संतुलन खराब करके रोग उत्पन्न कर सकती हैं

4. अंगूठी पहनने के फायदे :- अँगूठी

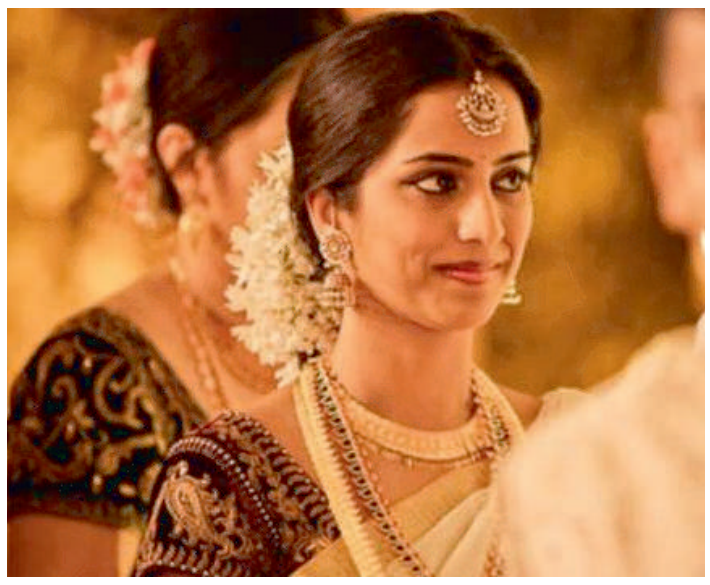

ऊर्जा के विकास, मानसिक तनाव दूर करने, जननेन्द्रिय पर नियंत्रण पाने, कामवासना पर नियंत्रण रखने और पाचनतंत्र को मजबूत बनाने हेतु मिलावट रहित सोने की अँगूठी पहनी जाती है। विभिन्न धातुओं की अँगूठी का शरीर पर अलग- अलग प्रभाव पड़ता है, ऐसे ही अलग-अलग रत्नों (नगों) का भी अपना अलग-अलग प्रभाव होता है

5. कर्ण-कुंडल पहनने के फायदे :- कर्ण-कुंडल भारतीय संस्कृति कर्ण-छेदन का भी एक विशेष महत्त्व है। चिकित्सकों और भारतीय दर्शनशास्त्रियों का मानना है कि कर्णछेदन से बुद्धिशक्ति, विचारशक्ति और निर्णयशक्ति का विकास होता है। वाणी के व्यय से जीवनशक्ति का ह्रास होता है। कर्णछेदन से वाणी के संयम में सहायता मिलती है इससे उच्छृंखलता नियंत्रित होती है और कर्णनलिका दोषरहित बनती है। यह विचार पाश्चात्य जगत के लोगों को भी जँचा और वहाँ आज फैशन के रूप में कर्णछेदन कराकर कुंडल पहने जाते हैं।

6. करधनी पहनने के फायदे :- करधनी यह मूलाधार केन्द्र को जागृत करके किडनी और मूत्राशय की कार्यक्षमता को बढ़ाती है तथा कमर आदि के दर्दों में राहत देती है।

उपवास के दौरान होती है कमजोरी, आते हैं चक्कर तो जानिए जबरदस्त उपाय

1 पहला और सबसे बेहतर तरीका भरपूर पानी पीना। जी हां, दिनभर में अगर अधिक कुछ खा नहीं रहे हैं, तो खूब पानी पीजिए, ताकि शरीर हाइड्रेट होता रहे और ऑक्सीजन का स्तर भी बना रहे। इस तरह से आप ऊर्जा की कमी भी महसूस नहीं करेंगे और चक्कर आने का तो सवाल ही नहीं उठता।

2 प्राणायाम - प्राणायाम कर आप ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ा सकते हैं जिससे चक्कर आने की समस्या नहीं होगी। इसके लिए जरूरी है गहरी सांस लें, ताकि मन, शरीर और मस्तिष्क के बीच संतुलन रहे। इस तरह से आप सारा दिन रिफ्रेश रह सकते हैं।

3 आंवला - विटामिन सी से भरपूर आंवले का सेवन करें, ताकि थकान कम हो और प्रतिरोधक क्षमता मजबूत हो। आप चाहें तो इसका जूस पी सकते हैं। इसके साथ हरे धनिया का सेवन भी बेहतरीन होगा।

4 सूखा धनिया - एक चम्मच सूखा धनिया खाने के बाद पानी पीजिए, या फिर धनिया पाउडर को पानी में मिक्स करके पिएं। लेकिन इसका सेवन आप को सुबह-सुबह करना होगा। यह चक्कर आने की समस्या से बचाएगा।

5 दही - जब भी आपको चक्कर महसूस हों, दही का सेवन करें। यह गर्मी को भी कम करेगा और ऊर्जा भी देगा, जिससे आपको चक्कर आने की परेशानी नहीं होगी।

6 बादाम - रातभर पानी में भिगोकर रखने के बाद सुबह बादाम का सेवन करना, चक्कर आने की समस्या से तो बचाएगा ही, दिमाग के लिए भी फायदेमंद होगा। आप चाहें तो इसे दूध के साथ पीसकर ले सकते हैं।

7 नींबू - नींबू का सेवन फलाहार के साथ, नींबू पानी बनाकर व अन्य तरीकों से कीजिए। यह विटामिन सी से भरपूर है और आपको चक्कर आने की समस्या से आसानी से निजात दिला सकता है।

सावधान रहें, घबराएँ नहीं : हवाई हमलों और अफवाहों के दौर में नागरिक क्या करें?

(Stay Alert, Not Afraid — A Civilian's Guide to Safety & Sanity in Air Attack Scenarios)

1. सबसे पहलेः जान बचाना प्राथमिकता है।

1. A घर में सबसे सुरक्षित कमरा पहचानें (जहाँ खिड़कियाँ न हों)।

1. B घर से बाहर हों तो पास के मजबूत ढांचे या निचली जगह में लेट जाएं

1. C रिकॉर्डिंग या विडियो बनाने के लिए बाहर न दौड़ें।

2. इमरजेंसी किट तैयार रखेंः- (पहचान पत्र, जरूरी दवाइयाँ, पानी, सूखा खाना, मोबाइल चार्जर, फ्लैशलाइट) किट एक बैग में रखें जो तुरंत उठाकर निकला जा सके।

3. अफवाहों से बचें, केवल आधिकारिक सूचना पर भरोसा करें, सरकारी ऐप (NDMA), AIR, और DD News जैसे विश्वसनीय स्रोतों से ही अपडेट लें।WhatsApp, Twitter या Facebook पर फैली खबरों की पुष्टि करें।

4. मानसिक संतुलन बनाए रखें

4. A दिन में 2 बार से ज्यादा खबरें न देखें।

4. B 4-4-4-4 बॉक्स ब्रीदिंग करेंः 4 सेकंड सांस लें → रोकें → बाहर छोड़ें → रोकें → दोहराएं।

4. C पूजा, प्रार्थना या ध्यान करें।

4. D बच्चों से डर की बात नहीं, दिनचर्या बनाए रखें (खेल, पढ़ाई, कहानियाँ)।

5. समुदाय के साथ जुड़ें

5. A पड़ोसियों से संपर्क रखें, बुजुर्गों की सहायता करें।

5. B कोई भी संदिग्ध चीज दिखे तो पुलिस को सूचित करें, न कि सोशल मीडिया पर डालें।

5. C फैक्ट-चेक वेबसाइट (PIB Fact Check, Alt News) से सत्यापन करें।

6. याद रखें — हिम्मत शोर नहीं करती, तैयारी करती है

7. अपने भीतर डर को जगह न दें, बस तैयारी रखें।

8. रोज़ जीवन की एक चीज़ पर ध्यान दें जो आपको ख़ुशी देती हो — संगीत, खाना बनाना, किताबें, या बच्चों के साथ समय।

"आप सैनिक नहीं हैं, लेकिन राष्ट्र की हिम्मत आप हैं।"

घबराएँ नहीं — सतर्क रहें, संगठित रहें और सकारात्मक रहें।

वर्तमान परिस्थितियों में कुछ जरूरी सावधानियां

ब्लैक आउट के निर्देशों का पालन करें, सायरन की आवाज सुनते ही घर की सभी लाइटें बंद कर दें। बालकनी और खिड़कियों से दूर रहें। अगर संभव हो तो ऐसे कमरे में जाएं जिसमें खिड़कियां ना हों।

घर पर अपनी एक मैडिकल किट तैयार रखें।

कुछ आवश्यक खाने के सामान (गेहूं/आटा, दालें, बिस्किट, तेल,चने/छोले,तेल, चीनी ,अचार,आलू, प्याज़ इत्यादि) का स्टॉक रखें।

घर में बैटरी/ टॉर्च और मोमबत्तियां जरूर तैयार रखें।

अगर धमाकों की आवाजें सुनाई देती हैं और हमले की स्थिति बन जाती है तो अगर संभव हो तो बेसमेंट या नीचे किसी सुरक्षित जगह पर चले जाएं।

अपना कीमती सामान, ज्वैलरी, नकदी, जरूरी कागजात, पहचान पत्र, जरूरी दवाईयां एक जगह पर बैग में इकट्ठा करके रखें ताकि आवश्यकता पड़ने पर तुरंत उठाकर निकला जा सके।

दिल्ली भर में लगाए जाएंगे सायरन – परवेश साहिब सिंह वर्मा

मुख्य संवाददाता / सुषमा रानी

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में नागरिकों की सुरक्षा और आपात स्थिति से निपटने की तैयारियों को और मजबूत करने के लिए, दिल्ली लोक निर्माण विभाग (PWD) ने नागरिक सुरक्षा निदेशालय के साथ मिलकर शुक्रवार दोपहर आईटीओ स्थित पीडब्ल्यूडी मुख्यालय की बहुमंजिला इमारत पर एयर रेड अलर्ट सायरन का परीक्षण किया। यह कदम भारत-पाकिस्तान के बीच जारी सैन्य तनाव को देखते हुए उठाया गया है, जिसके तहत राजधानी की ऊंची इमारतों पर सायरन लगाए जाएंगे।

दिल्ली के लोक निर्माण मंत्री परवेश साहिब सिंह ने बताया कि शहर की प्रमुख बहुमंजिला इमारतों पर 40 से 50 एयर रेड अलर्ट सायरन लगाए जाएंगे। आपात स्थिति में यह सायरन चेतावनी देने का काम करेंगे। सभी सायरनों को एक केंद्रीय कमांड सेंटर से नियंत्रित किया जाएगा और इनका संचालन राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) के अधीन होगा।

मंत्री ने कहा, "आज परीक्षण किया गया सायरन करीब 8 किलोमीटर की दूरी तक सुना जा सकता है। किसी भी आपात स्थिति में ये सायरन पांच मिनट तक बजाए जाएंगे, जिससे लोगों को समय रहते सतर्क किया जा सके और वे फौरन मेज़ के नीचे या बेसमेंट में सुरक्षित जगह तलाश सकें।"

शहरभर में सायरन लगाने की यह योजना नागरिक सुरक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी पहल है। दिल्ली सरकार आपदा प्रबंधन एजेंसियों के साथ मिलकर यह सुनिश्चित कर रही है कि सभी संवेदनशील और प्रमुख क्षेत्रों को कवर किया जाए और नागरिकों को समय पर सही दिशा-निर्देश मिल सकें।

PWD और नागरिक सुरक्षा की टीमें आने वाले दिनों में इन सायरनों की परीक्षण प्रक्रिया और निगरानी जारी रखेंगी ताकि जरूरत पड़ने पर वे पूरी तरह से तैयार रहे।

आज देश का जो वातावरण है उसमे हर दिल्लीवालों की भी सरकारी निर्देशों के पालन की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की देश का जन जन आप्रेशन सिंदूर चला कर आतंकवाद पर ठोस प्रहार करने और उसके बाद आतंकवाद के संरक्षक पाकिस्तान के भारतीय सीमा पर हमलों का करारा जवाब देने के लिए भारतीय सेना का आभारी है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की आज देश का जो वातावरण है उसमे हर दिल्लीवालों की भी सरकारी निर्देशों के पालन की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है और हमें अपने परिवार के साथ ही अपने बच्चों को भी जागरुक रखने की जरुरत है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्लीवालों से अपील की है कि देश में जो स्थिति है उसको लेकर दिल्ली की श्रीमती रेखा गुप्ता सरकार भी पूरी तरह से तैयार है और आम जन को अलर्ट करने के लिए आज दिल्ली सरकार द्वारा एयर रेड सायरन लगाया गया है।

उन्होंने कहा कि हमें भी एक जिम्मेदार नागरिक की तरह सरकार द्वारा बाताए गए निर्देषों का अनुसरण करना चाहिए। इसके साथ ही लोकल पुलिस को भी उनके कामों में सहयोग दें।

उन्होंने कहा कि इस पूरी लड़ाई में सोशल मीडिया की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका है इसलिए आप सभी किसी भी प्रकार की वीडियों को शेयर करने से पहले उसकी सत्यता और उसकी विश्वनीय सोर्सेज के बारे में जरुर सोचे। उन्होंने कहा कि साइबर अटैक जैसी कायरता भी हो सकती है इसलिए किसी भी प्रकार के लिंक को सोच समझकर ओपन करें।

सचदेवा ने अपिल की है कि भारतीय सेना द्वारा जारी किए गए प्रेस कॉन्फ्रेंस वक्तव्य पर विश्वास करें और सरकार द्वारा दी गई जानकारी और निर्देष पर अमल करें। उन्होंने कहा कि सेना की या किसी भी प्रकार की ऐसी जानकारी जिससे देश की सुरक्षा को खतरा हो, उसे सोशल मीडिया पर शेयर ना करें।

राजपाल कसाना बने साकेत जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष, रिकॉर्ड मतदान के बाद रिजल्ट घोषित

साकेत जिला बार एसोसिएशन के चुनाव में राजपाल कसाना अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं उन्हें 1237 वोट मिले। नरेंद्र शर्मा उपाध्यक्ष और अनिल कुमार बैसोया सेक्रेटरी चुने गए। 4223 मतदाताओं में से 3541 ने मतदान किया जो कि 83 .85 प्रतिशत रहा। हितेष बैसला निर्देश बिधूड़ी और पूजा अरोड़ा भी विभिन्न पदों पर निर्वाचित हुए। चुनाव 21 मार्च को कराए गए थे जिसे रद्द कर दिया गया था।

दिल्ली। साकेत जिला बार एसोसिएशन के लिए मतदान के बाद शुक्रवार देर रात परिणाम घोषित किए गए। अध्यक्ष पद पर राजपाल कसाना ने जीत दर्ज की, उन्हें कुल 1237 वोट मिले। वहीं नरेंद्र शर्मा 1189 वोटों के साथ उपाध्यक्ष और अनिल कुमार बैसोया 1591 वोटों के साथ सेक्रेटरी निर्वाचित हुए।

इस बार कुल 4223 मतदाताओं में से रिकार्ड 3541 ने मताधिकार का प्रयोग किया। इस बार का मतदान प्रतिशत 83.85 प्रतिशत रहा। साकेत जिला बार एसोसिएशन के चुनाव में एडिशनल सेक्रेटरी हितेष बैसला (1041), ज्वाइंट सेक्रेटरी निर्देश बिधूड़ी (1419), ट्रेजरार पूजा आरोड़ा (940) निर्वाचित हुईं।

21 मार्च को कराए गए थे चुनाव

वहीं मेंबर लाइब्रेरी विक्रम बिधूड़ी, सीनियर मेंबर एक्जीक्यूटिव भारत अहूजा व अजय कुमार तंवर, सीनियर एक्जीक्यूटिव वूमेन यामिनी शर्मा, लेडी मेंबर एक्जीक्यूटिव गरिमा सिंह, मेंबर एक्जीक्यूटिव निखिल राणा व पुनीत बशिष्ट चुने गए। दरअसल, 21 मार्च को बार एसोसिएशन के चुनाव कराए गए थे।

मतपत्रों से होने वाला साकेत जिला बार एसोसिएशन चुनाव अव्यवस्था और हंगामे के कारण रद्द कर दिया गया था। दोबारा चुनाव निष्पक्ष एवं सुचारू रूप से कराने के लिए विशेष समिति गठित की गई थी, जिसके चेयरपर्सन हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश आरके गाबा को बनाया गया था।

वोटिंग के लिए बनाए गए थे 20 मतदान केंद्र

साथ ही मतदाताओं के लिए नए प्राक्सिमिटी कार्ड जारी किए गए। इस बार ईवीएम से चुनाव नए सिरे से कराने की तैयारी की गई। सुबह आठ से शाम चार बजे तक मतदान हुआ। मतदान के लिए 20 मतदान केंद्र बनाए गए थे। सुरक्षा के मद्देनजर अदालत परिसर में दिल्ली पुलिस के साथ ही सीआरपीएफ की टुकड़ी भी तैनात रही।

सिल्वर लाइन सीनियर सिटीजन एसोसिएशन ने हिमाचल प्रदेश का दौरा किया

मुख्य संवाददाता

सिल्वर लाइन सीनियर सिटीजन एसोसिएशन चंडीगढ़ ने अपने सदस्यों की लगातार मांग पर 5 मई से 8 मई तक हिमाचल प्रदेश का दौरा किया। टीम ने सोलन, सराहन, कल्पा, सांगला घाटी और शिमला का दौरा किया और महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों को देखने के बाद चंडीगढ़ वापस आ गई। सोलन में मोहन मीकांस शिव मंदिर, रीकिंग पियो, कल्पा में कोठी मंदिर और बुद्ध प्रतिमा। छितर कूल (हिमाचल प्रदेश का अंतिम गांव) और उसके बाद सांगला घाटी में भारत चीन सीमा शुरू होती है। जाखू मंदिर, शिमला में रिज मॉल। समूह के सदस्य और नागरिक जागरूकता समूह के अध्यक्ष सुरिंदर वर्मा ने कहा कि यात्रा का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश में साथी सीनियर नागरिकों के साथ सामाजिक नेटवर्किंग करना और उनकी समस्याओं को साझा करना था। यात्रा की अनूठी विशेषता बसपा घाटी में टेंट में हमारा ठहरना था। सदस्यों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लिया, जिसने उन्हें अधिक ऊर्जा दी और उन्हें घरेलू तनाव से मुक्त रखा।

दिल्ली के अस्पतालों के चिकित्सा अधीक्षकों और निदेशकों के साथ सीएम रेखा गुप्ता ने की समीक्षा बैठक, दिए निर्देश; पढ़ें डिटेल

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली के अस्पतालों को आपात स्थिति के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया है। उन्होंने दवाओं की कमी को दूर करने और आपदा वार्ड स्थापित करने पर जोर दिया। साथ ही लू और डेंगू जैसी बीमारियों के लिए तैयार रहने को कहा। आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं और ऑनलाइन पंजीकरण की सुविधा को लागू करने की समीक्षा की गई।

नई दिल्ली: मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शुक्रवार को दिल्ली सचिवालय में दिल्ली सरकार के अस्पतालों के सभी चिकित्सा अधीक्षकों व चिकित्सा निदेशकों के साथ एक उच्चस्तरीय बैठक कर अस्पतालों में उपलब्ध चिकित्सा सेवाओं की समीक्षा की।

इस दौरान उन्होंने अस्पतालों में दवाओं की कमी के मामले को लेकर चिंता जाहिर की। उन्होंने इस समस्या को प्राथमिकता के आधार पर दूर करने का स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों व अस्पतालों के चिकित्सा अधीक्षकों को निर्देश दिया।

आवश्यक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश

इसके लिए एक निश्चित समय अवधि में कार्ययोजना तैयार कर रिपोर्ट सौंपने का निर्देश दिया है। साथ ही उन्होंने अस्पतालों को आपात स्थिति के लिए तैयार रहने और आवश्यक दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

उन्होंने सभी अस्पतालों में आपदा वार्ड स्थापित करने, बेड, आईसीयू व आवश्यक उपकरणों की उपलब्धता बढ़ाने का निर्देश दिया है। वैसे लोकनायक, जीटीबी सहित कई अस्पतालों में आपदा वार्ड मौजूद हैं।

लोकनायक अस्पताल के आपदा वार्ड में 70 बेड आरक्षित हैं। उन्होंने अस्पतालों में नियमित तौर पर मॉक ड्रिल करने का निर्देश दिया।

चिकित्सा सामानों की खरीद को पारदर्शी बनाने पर दिया जोर

उन्होंने कहा कि कुछ दिनों में गर्मी बढ़ने पर अस्पतालों में लू से पीड़ित मरीजों, मॉनसून में डेंगू व चिकनगुनिया जैसी बीमारियों के इलाज के लिए भी तैयारी आवश्यक है।

चिकित्सा सामानों की खरीद को पारदर्शी बनाया जाना चाहिए और समय पर खरीद सुनिश्चित होनी चाहिए। इसके अलावा अस्पतालों में डॉक्टरों व स्वास्थ्य कर्मियों की कमी दूर करने का भी निर्देश दिया। इस बैठक में दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह भी मौजूद रहे।

बैठक में मुख्यमंत्री ने दिल्ली सरकार के अस्पतालों में आयुष्मान भारत, वय वंदना योजना और आरोग्य मंदिर के क्रियान्वयन की तैयारियों व ओपीडी व आईपीडी के ऑनलाइन पंजीकरण की सुविधा लागू करने की योजना की भी समीक्षा की।

एमआरआई और सीटी स्कैन की कम जांच होने की समस्या होगी दूर

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार की कैबिनेट ने दो महत्वपूर्ण प्रस्तावों को स्वीकृति प्रदान की है। जिसमें ओपीडी और आइपीडी पंजीकरण की आनलाइन सुविधा शुरू करने और अस्पतालों में डायग्नोस्टिक सेवाओं में सुधार की योजना शामिल है।

इससे ओपीडी पंजीकरण आसान होगा। साथ ही एमआरआइ, सीटी स्कैन इत्यादि जांच की कमी की समस्या दूर होगी। उल्लेखनीय है कि दिल्ली सरकार के ज्यादातर अस्पतालों में सीटी स्कैन व एमआरआइ जैसी जांच सुविधाओं का अभाव है। इस वजह से मरीज परेशान होते हैं।

"सरहद के साए में भारत के भीतर की लड़ाई"

भारत आज बाहरी हमलों से ज़्यादा आंतरिक विघटन से जूझ रहा है। पंजाब–हरियाणा जल विवाद हो या पहलगाम आतंकी हमला—हर संकट के पीछे एक अदृश्य वैचारिक युद्ध छिपा है। जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र और विचारधारा के नाम पर देश के भीतर एक तीसरा मोर्चा खड़ा हो गया है। यह मोर्चा न गोलियों से लड़ता है, न बम से—यह चुपचाप देश की एकता और चेतना को तोड़ता है। जब तक यह मोर्चा नहीं पहचाना जाएगा, भारत बाहरी मोर्चों पर जीत कर भी आंतरिक रूप से हारता रहेगा।

डॉ. सत्यवान सौरभ

जब देश की सुरक्षा की बात होती है, तो ज़्यादातर नज़रें सरहद की ओर उठती हैं— वो रेखा जो हमें पाकिस्तान या चीन से अलग करती है। लेकिन भारत आज जिस सबसे खतरनाक युद्ध का सामना कर रहा है, वह न सीमा पर है, न दुश्मनों की गोलियों में। वह युद्ध भारत के भीतर चल रहा है—हमारी आत्मा, एकता और विचारधारा के खिलाफ।

हाल ही में हरियाणा और पंजाब के बीच पानी को लेकर उठा विवाद महज एक प्रशासनिक समस्या नहीं, बल्कि भारत के संघीय ढांचे की अस्थिरता और क्षेत्रीय असंतुलन की गंभीर चेतावनी है। जब नंगल बांध का जलस्तर बढ़ा, हरियाणा में बाढ़ की स्थिति बनी, और पंजाब ने इसका जिम्मा लेने से इनकार कर दिया, तब यह सिर्फ एक राज्य का दुसरे से विरोध नहीं था। यह उस एकता का टूटना था, जिसकी नींव पर भारत खड़ा है। वहीं दूसरी ओर, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में एक हिंदू पर्यटक की आतंकी हत्या ने यह स्पष्ट कर दिया कि कुछ ताकतें आज भी भारत को धार्मिक आधार पर बांटने का प्रयास कर रही हैं, और यह प्रयास बंदूक की गोली से ही नहीं, वैचारिक ज़हर से भी किया जा रहा है।

भारत के सामने अब तीन युद्धभूमियाँ हैं— सीमाओं पर सैन्य मोर्चा, वैश्विक मंच पर कूटनीतिक मोर्चा, और देश के भीतर चल रहा वैचारिक युद्ध, जिसे मैं 'आधा मोर्चा' कहता हूँ। यह आधा मोर्चा अदृश्य है, लेकिन सबसे घातक है। यह हमारे विश्वविद्यालयों, मीडिया, सोशल मीडिया और कभी-कभी हमारी राजनीति में भी दिखाई देता है। यह मोर्चा देश को विचारों से विभाजित करता है, धर्म, जाति, भाषा और क्षेत्र के नाम पर लड़वाता है, और एक सामान्य भारतीय के मन में राष्ट्र के प्रति अविश्वास भरता है।

इस मोर्चे पर लड़ने वाले बहुरूपिए हैं। ये वे लोग हैं जो भारत के टुकड़े होने की कल्पना को क्रांति कहते हैं, जो भारत माता की जय को साम्प्रदायिकता समझते हैं, और जो हर आतंकी घटना को 'प्रतिक्रिया' और 'पृष्ठभूमि' के चश्मे से देखते हैं। इनके लिए राष्ट्र कोई भावना नहीं, बल्कि आलोचना का विषय है। जब भारत की सेना शौर्य दिखाती है, तो इन्हें मानवाधिकार याद आते हैं। जब भारत वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हासिल करता है, तो ये 'गरीबी और भुखमरी' की याद दिलाते हैं। जब भारत वैश्विक मंच पर सम्मान पाता है, तो ये इसकी तुलना 'तानाशाही' से करने लगते हैं।

यह 'विचारधारा' धीरे-धीरे युवाओं को अपने जाल में लपेट रही है। विश्वविद्यालय, जो चरित्र निर्माण के केंद्र होने चाहिए, अब राष्ट्रविरोधी नारों की प्रयोगशाला बनते जा रहे हैं। एक समय था जब शिक्षा का उद्देश्य था – ₹सा विद्या या विमुक्तये₹ यानी जो मुक्त करे वही विद्या है। लेकिन आज की शिक्षा युवाओं को उलझा रही है—इतिहास को विकृत कर, स्वतंत्रता सेनानियों को जातियों में बांट कर, और राष्ट्र की अवधारणा को 'सांस्कृतिक वर्चस्व' का नाम देकर।

सोशल मीडिया ने इस आधे मोर्चे को धारदार बना दिया है। ट्विटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब पर एक संगठित प्रयास दिखता है, जिसमें भारत को 'हिंदू राष्ट्र', 'मनुवादी शासन', 'अल्पसंख्यक विरोधी देश' जैसे टैग दिए जाते हैं। ये टैग न केवल अंतरराष्ट्रीय छवि को प्रभावित करते हैं, बल्कि एक आम भारतीय को भी भ्रमित कर देते हैं। एक आम मुसलमान डर में जीने लगता है, एक आम दलित अलग-थलग महसूस करने लगता है, और एक सामान्य हिंदू अपराधबोध में जीने लगता है।

लेकिन यह वैचारिक युद्ध सिर्फ अकादमिक बहस या सोशल मीडिया पोस्ट तक सीमित नहीं है। इसके वास्तविक और खतरनाक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। पहलगाम की घटना में एक हिंदू पर्यटक को इसलिए मारा गया क्योंकि वह धर्म से 'हिंदू' था। यह केवल आतंकवाद नहीं, धर्म आधारित वैचारिक नफरत का चरम रूप है। यह घटना संकेत देती है कि भारत की विविधता को एकता में बदलने की हमारी कोशिशें अभी भी अधूरी हैं, और नफरत की जड़ें बहुत गहरी हैं।

भारत के इस आधे मोर्चे पर राजनीति की भूमिका भी बेहद संदेहास्पद है। जहां सत्ता में आने के लिए नेताओं को राष्ट्रवाद का झंडा उठाना पड़ता है, वहीं वोट पाने के लिए वे समाज को बांटने वाले विमर्शों को बढ़ावा देते हैं। कभी अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, कभी दलित आरक्षण की राजनीति, कभी क्षेत्रीय अस्मिता—इन सभी ने भारत की राष्ट्रीय पहचान को कमजोर किया है। राजनीतिक लाभ के लिए देश की एकता को दांव पर लगाना आत्मघाती है, लेकिन आज यही हो रहा है।

इस वैचारिक युद्ध का एक और चेहरा है— पानी, बिजली, संसाधनों और भाषाओं को लेकर क्षेत्रीय लड़ाइयाँ। क्या यह सोचने का विषय नहीं है कि एक ही देश के दो राज्य—हरियाणा और पंजाब—पानी के लिए एक-दूसरे को बाढ़ और सूखे में झोंकने लगे हैं? क्या यह भी वैचारिक युद्ध का ही हिस्सा नहीं है कि भारत के भीतर 'दूसरे राज्य से नफरत' की भावना पैदा की जाए? यही बात भाषाओं को लेकर भी है। हिंदी को थोपने के नाम पर दक्षिण में असंतोष, मराठी बनाम हिंदी, बंगाली बनाम असमिया—ये सब भारत की आत्मा के खिलाफ छेड़े गए 'आधे युद्ध' के उदाहरण हैं।

आज जरूरत इस बात की है कि भारत के इस आधे मोर्चे को उतनी ही गंभीरता से लिया जाए जितनी कि सीमा पर हो रहे सैन्य संघर्ष को। देश की सुरक्षा केवल टैंकों और मिसाइलों से नहीं होती, बल्कि विचारों की स्पष्टता, सामाजिक समरसता और राष्ट्र के प्रति आस्था से होती है। हमें यह समझना होगा कि 'देश की आलोचना' और 'देशविरोध' में फर्क है, लेकिन यह फर्क तब खत्म हो जाता है जब आलोचना का उद्देश्य सुधार नहीं, विनाश हो।

भारत को इस मोर्चे पर जीतने के लिए केवल सैनिकों की नहीं, बल्कि शिक्षकों, लेखकों, पत्रकारों, कवियों, एक्टिविस्टों और आम नागरिकों की जरूरत है। हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था को फिर से राष्ट्रनिर्माण की ओर मोड़ना होगा। हमें सोशल मीडिया पर राष्ट्र के पक्ष में भी एक वैचारिक मोर्चा खड़ा करना होगा। और सबसे महत्वपूर्ण, हमें राजनीति को मजबूर करना होगा कि वह देश की कीमत पर राजनीति न करे।

जो लोग इस आधे मोर्चे को 'स्वतंत्रता की आवाज' समझते हैं, उन्हें यह भी समझना होगा कि स्वतंत्रता की पहली शर्त है—एकता। एकता के बिना आज़ादी केवल एक भ्रम है। जो राष्ट्र अपने भीतर के दुश्मनों को नहीं पहचान पाता, वह बाहरी दुश्मनों से कब तक लड़ेगा?

भारत की असली परीक्षा युद्ध भूमि में नहीं, विश्वविद्यालयों की कक्षाओं, मीडिया के पन्नों, सोशल मीडिया के पोस्टों और संसद की बहसों में है। यह परीक्षा इस बात की है कि क्या हम भारत को सिर्फ एक भूखंड मानते हैं या एक जीवंत चेतना। यह चेतना केवल तब जीवित रह सकती है जब हर नागरिक, हर छात्र, हर राजनेता और हर लेखक यह समझे कि भारत की विविधता उसकी शक्ति है, कमजोरी नहीं।

इसलिए अब समय है इस 'आधे मोर्चे' को पूरी गंभीरता से लेने का। देश को टूटने से बचाने के लिए अब टैंकों से नहीं, विचारों से लड़ना होगा। और इस लड़ाई में हर भारतवासी एक सैनिक है—या तो राष्ट्र के पक्ष में, या राष्ट्र के खिलाफ।

माँ एक शब्द नहीं बल्कि वो चरित्र है, जिसने इस दुनिया को बनाया ही नहीं, बल्कि दुनिया को वो रूप दिया...

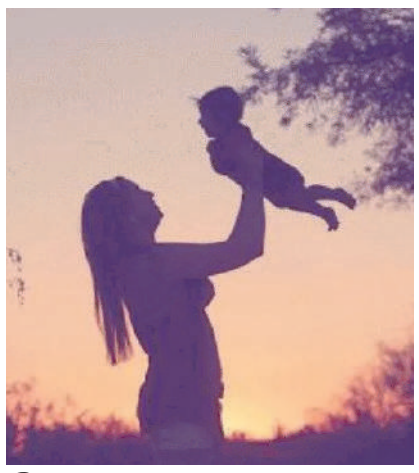

जिसको हम अपनी भाषा में सुंदरता को प्रेम के नाम से पुकारते है। इसकी तुलना हम किसी से नहीं कर सकते, क्योंकि खोज ही निर्मण की जननी है।

वर्तमान में हम भूल गये है कि हमारा जीवन उस माँ के परोपकार से है, जिसने हमको एक प्यारी सी पहचान के साथ एक आकर देने में अपना पूरा जीवन लगा दिया। लेकिन हम आज कहाँ खड़े है, स्वयं आप और हम देख सकते है

मातृ दिवस पर आप सभी को बहुत बहुत बधाई

दुनिया की सभी पूर्व व वर्तमान माताओं को मेरा कोटि कोटि प्रणाम

एड रीता भुइयार
जिला बिजनौर उप्र

विश्व प्रवासी पक्षी दिवस आज

इस वर्ष 10 मई को विश्व प्रवासी पक्षी दिवस मनाया जाएगा। विश्व प्रवासी पक्षी दिवस एक वैश्विक अभियान है जिसका उद्देश्य प्रवासी पक्षियों और उनके संरक्षण से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। इस वर्ष की थीम ₹ साझा स्थानः पक्षियों के अनुकूल शहर और समुदाय बनाना ₹ हमारे शहरों को पक्षियों के लिए अधिक अनुकूल बनाने के महत्व पर प्रकाश डालती है, जिससे प्रकृति और लोगों दोनों को लाभ होगा।

इस दिन लोग क्या करते हैं?

प्रत्येक मई के दूसरे सप्ताहांत पर, दुनिया भर में लोग पक्षी महोत्सव, शिक्षा कार्यक्रम और पक्षी-दर्शन भ्रमण जैसे सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करके विश्व प्रवासी पक्षी दिवस मनाते हैं।

सार्वजनिक जीवन विश्व प्रवासी पक्षी दिवस एक आधिकारिक संयुक्त राष्ट्र समर्थित कार्यक्रम है और यह कोई सार्वजनिक अवकाश नहीं है।

पृष्ठभूमि वैसे तो यह आयोजन आम तौर पर मई के दूसरे सप्ताहांत पर होता है, लेकिन पहला विश्व प्रवासी पक्षी दिवस 8-9 अप्रैल, 2006 के सप्ताहांत पर शुरू किया गया था। यह आयोजन पक्षियों के प्रवास के चमत्कारों और उनके संरक्षण की आवश्यकता की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित करने में मदद करने के लिए बनाया गया था। हर साल, पंजीकृत विश्व प्रवासी पक्षी दिवस आयोजनों की कुल संख्या में लगातार वृद्धि हुई है, साथ ही उन देशों की संख्या भी बढ़ी है, जहां ये आयोजन हुए।

किदवई नगर में भी सफल इंस्पेक्टर धर्मेंद्र कुमार राम की नेतृत्व कुशलता, मुठभेड़ में शातिर गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां अपराधियों के खिलाफ लगातार सफल मोर्चा खोले किदवई नगर पुलिस से मुठभेड़ में एक शातिर अपराधी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की गई है। पकड़ा गया अपराधी अब तक संगीन अपराधों की अनेक पदार्थों को भी अंजाम दे चुका है। इस मुठभेड़ के दौरान पकड़े गए अपराधी का दूसरा साथी अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से भाग निकला जिसकी भी तलाश लगातार की जा रही है।

किदवई नगर पुलिस को यह महत्वपूर्ण सफलता तब मिली जब वह आयुर्वेद पार्क के सामने वाहन चेकिंग कर रही थी। मुठभेड़ में पकड़े गए शातिर बदमाश की पहचान हनुमंत विहार थाना क्षेत्र के शिवजी पुलिया निवासी गोपाल उर्फ ढक्कल के रूप में हुई है। उस पर चोरी, लूट और छिनैती के लगभग 10 आपराधिक मामले दर्ज हैं।

अवगत कराते चलें कि जिस किदवई नगर पुलिस को इस शातिर अपराधी को जान जोखिम में डालकर की गई मुठभेड़ में गिरफ्तार करने जैसी महत्वपूर्ण सफलता मिली है। आजकल उस थाना किदवई नगर की कमान हर तरह के अपराधियों के खिलाफ लगातार सफल मोर्चा खोले निर्दोष फंसे नहीं और अपराधी बचे नहीं जैसी लोकहित की प्रबल विचारधारा के अनुरूप अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई और पीड़ितों की हर संभव सहायता में भी अग्रणी निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के भगवान और भाग्य यानी कर्म भरोसे रहने वाले तेजतर्रार, व्यवहार कुशल प्रभारी निरीक्षक इंस्पेक्टर

धर्मेंद्र कुमार राम के हाथ में है। सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए अपनी जुझारू नौकरी के अबतक कार्यकाल में अनेक अपराधियों को जेल की हवा खिला चुके जुझारू इंस्पेक्टर धर्मेंद्र कुमार राम के अब तक के कार्यकाल के विवेचन से यह भी साबित होता है कि हालात चाहे जैसे रहे हों लेकिन उन्होंने अपनी कर्तव्य के प्रति निष्ठा के साथ समझौता आज तक नहीं किया।

इसी के साथ उनकी कार्यशैली भी संभ्रांत असहाय लोगों की हितरक्षक और बहुत मैत्रीपूर्ण भी मानी जाती है ,जिसके अनुरूप ही वह जहां उचित पात्र लोगों की हर संभव सहायता करते हैं। वहीं कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ शठे शाठ्यम समाचरेत वाली कहावत चरितार्थ करने से भी नहीं चूकते। यही वजह है कि इंस्पेक्टर धर्मेंद्र कुमार की कर्तव्य के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा उनकी जुझारू नौकरी के अब तक के कार्यकाल में सभी संगीन घटनाओं का सटीक खुलासा करते हुए दर्जनों शातिरों को सबक सिखाने में भी सफल हो चुकी है। उनकी अगुवाई में शातिर अपराधी गोपाल उर्फ ढक्कल को मुठभेड़ में गिरफ्तार करने वाली टीम में चौकी प्रभारी किदवई नगर प्रवास शर्मा, साकेत नगर के चौकी प्रभारी अभिषेक सोनकर, सब इंस्पेक्टर नीरज राजपूत, सचिन राणा, अंकुश चौधरी, प्रकाश कुमार तिवारी, प्रियांशु दीक्षित, हेड कांस्टेबल मनोज कुमार कांस्टेबल मोहित कुमार और मो0 इरफान आदि शामिल रहे। इस शातिर बदमाश के पास से अवैध तमंचा, कारतूस और एक बाइक भी बरामद हुई है। इसके बाद अब उसके फरार साथी की भी तलाश की जा रही है।

भारत की पहली जीनोम-संपादित चावल की किस्में (कृषि क्षेत्र में नवाचार)

भारत विश्व का एक बड़ा कृषि प्रधान देश है और यहां की अर्थव्यवस्था बहुत हद तक कृषि पर निर्भर है। हाल ही में भारत ने अपनी पहली जीनोम-संपादित चावल की किस्में 'डीआरआर धान 100 (कमला)' और 'पूसा डीएसटी राइस 1' जारी की हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि हमारे देश के कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 4 मई 2025 के दिन आईसीएआर द्वारा विकसित देश की पहली जीनोम-संपादित धान की ये दोनों किस्में जारी की गईं हैं। वास्तव में ये वैज्ञानिक शोध की दिशा में नवाचार है। इन किस्मों की खास बात यह है कि इनमें विदेशी चावलों की किस्मों या विदेशी डीएनए को शामिल नहीं किया गया है। दरअसल विदेशी डीएनए शामिल नहीं होने के कारण भारतीय कृषि में इनकी पैदावार ठीक उसी प्रकार से की जा सकती है, जिस प्रकार से हमारे यहां पारंपरिक रूप से फसलें उगाई जाती रहीं हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो इन नयी किस्मों का विकास क्रिस्पर-कैस आधारित जीनोम-संपादित तकनीक का उपयोग करके किया गया, जो बिना विदेशी डीएनए को शामिल किए हुए जीव के आनुवंशिक सामग्री में सटीक परिवर्तन लाती है। धान की ये किस्में जहां एक ओर उपज में बढ़ोत्तरी करेंगी, वहीं दूसरी ओर संसाधनों की दक्षता को भी ये बढ़ाएंगी। इतना ही नहीं ये जलवायु की दृष्टि से भी लचीली बताईं जा रहीं हैं। और तो और ये किस्में जल-संरक्षण की दृष्टि से भी बहुत ही उपयोगी और लाभकारी सिद्ध होंगी।वैसे तो भारत विश्व का अनाज उत्पादन में एक आत्मनिर्भर देश बन चुका है लेकिन आज की वैश्विक परिस्थितियों में हमारे देश में भी अनेक प्रकार की खाद्य सुरक्षा चुनौतियां मौजूद हैं। मसलन आज भारत में विश्व की सर्वाधिक आबादी है। जलवायु परिवर्तन भी लगातार हो रहा है, ग्रीन हाउस गैसों में लगातार बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि ऐसी परिस्थितियों के बीच आईसीएआर द्वारा विश्व की पहली जीनोम संपादित धान की दो किस्मों का विकास भारतीय कृषि के लिए जहां एक ओर एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपलब्धि है, वहीं दूसरी ओर यह खाद्य सुरक्षा की दिशा में भी उठाया गया एक बड़ा और महत्वपूर्ण क्रांतिकारी कदम है। एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक में उपलब्ध जानकारी के अनुसार डीआरआर धान 100 (कमला) लोकप्रिय साँबा महसूरी किस्म पर आधारित है। साइट डायरेक्टेड न्यूक्लिऐस 1 (एसडीएन1) तकनीक का उपयोग करके साइटोकाइनिन ऑक्सीडेज 2 (सीकेएक्स2) जीन (जीएन1ए) को लक्षित करके दानों की संख्या में सुधार किया गया। इसके परिणामस्वरूप शीघ्र परिपक्वता (15-20 दिन पहले कटाई), सूखा-सहिष्णुता, उच्च नाइट्रोजन-उपयोग दक्षता प्राप्त होती है। उल्लेखनीय है कि इस किस्म को आईसीएआर-भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद द्वारा विकसित किया गया है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार अखिल भारतीय परीक्षण में डीआरआर धान 100 (कमला) की औसत उपज 5.3 टन प्रति हेक्टेयर पाई गयी जो साम्बा महसूरी (4.5 टन) से 19% अधिक है। वहीं दूसरी ओर पूसा डीएसटी चावल 1, मारुतेरु (एमटीयू) 1010 किस्म पर आधारित है और सूखे और लवण सहनशीलता को बढ़ाता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि एमटीयू 1010 किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है, क्योंकि इसका दाना लम्बा-बारीक होता है, और दक्षिण भारत में रबी सीजन के चावल की खेती के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। यह सूखे और लवणता सहित कई अजैविक तनावों के प्रति संवेदनशील है। पूसा डीएसटी चावल 1 लवणता और क्षारीयता युक्त

मृदा में एमटीयू 1010 की तुलना में 20% अधिक उपज देती है। एसडीएन1 जीनोम-एडिटिंग के माध्यम से विकसित, यह शुष्क और लवणीय सहनशीलता (डीएसटी) जीन को लक्षित करता है। इसके परिणामस्वरूप तटीय लवणता वाले क्षेत्रों में 30.4% अधिक उपज, क्षारीय मृदाओं में 14.66% अधिक तथा अंतर्देशीय लवणता वाले क्षेत्रों में 9.67% अधिक उपज प्राप्त होती है।इसे आईसीएआर-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित किया गया है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि एसडीएन-1 विदेशी डीएनए का उपयोग किये बिना छोटे सम्मिलन/विलोपन प्रस्तुत करता है, जबकि एसडीएन-2 विशिष्ट वांछित परिवर्तन प्रस्तुत करने के लिये टेम्पलेट डीएनए (मेज़बान के समान) का उपयोग करता है। पाठकों को बताता चलूं कि धान की नई उन्नत विकसित किस्में आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, पुडुचेरी, केरल, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के लिए उपयुक्त हैं। इन क्षेत्रों में करीब 5 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्रफल में इन क़िस्मों की खेती की जा सकेगी, जिससे धान के उत्पादन में 4.5 मिलियन टन की वृद्धि होगी। साथ ही ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन में 20 प्रतिशत यानि 3200 टन की कमी आएगी। बहरहाल, यहां यह गौरतलब है कि हमारे देश में खाद्य सुरक्षा के लिए धान का पहले से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है और अब इन किस्मों की खेती से धान के उत्पादन में करीब 45 लाख टन का इजाफा होगा, तो ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी करीब 20 फीसदी की कमी आएगी। आज ग्लोबल वार्मिंग के चलते जहां संपूर्ण विश्व में जल संकट गहराता चला जा रहा है, ऐसे में इन धान की किस्मों की खेती में कम पानी की खपत होगी और फसल पककर तैयार होने में भी कम समय लगेगा, जिसने किसानों को अगली फसल की बुआई के लिए भी पर्याप्त समय मिल सकेगा। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि भारत में हरित क्रांति की शुरुआत 1965-1968 के बीच मानी जाती है और डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को भारत में हरित क्रांति का जनक माना जाता है।हरित क्रांति के परिणामस्वरूप भारत में खाद्यान्न उत्पादन(गेहूं और चावल के उत्पादन में) अभूतपूर्व वृद्धि हुई थी।गौरतलब है कि हरित क्रांति के दौरान उच्च उपज वाली किस्मों के बीज, आधुनिक सिंचाई तकनीक, उर्वरक और कीटनाशकों का व्यापक रूप से उपयोग किया गया था। वास्तव में हरित क्रांति का मुख्य उद्देश्य खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना था, जिससे भारत में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। हरित क्रांति का प्रभाव यह हुआ कि इसने भारतीय कृषि को पूरी तरह से बदल दिया और भारत को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में यह उम्मीद जताई जा रही है कि धान की ये नई किस्में दूसरी हरित क्रांति की शुरुआत में अग्रणी भूमिका निभाएंगी। धान की इन दोनों किस्मों की विशेषताओं की यदि हम यहां पर बात करें, तो इन दोनों किस्मों की खेती से उपज में 19 प्रतिशत की वृद्धि होगी तथा ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन में 20 प्रतिशत की कमी आएगी। इतना ही नहीं, सिंचाई जल में 7,500 मिलियन घन मीटर की बचत होगी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि सूखा, लवणता एवं जलवायु तनावों के प्रति यह दोनों ही किस्में उच्च सहिष्णु हैं। ग्रीन हाउस गैसों में कमी से पर्यावरण संरक्षण को भी बल मिल सकेगा। अंत में यही कहूंगा कि चावल भारत की प्रमुख फसलों में से एक है और भारत में चावल का उत्पादन कृषि के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। चीन के बाद भारत विश्व में चावल का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है, और चावल का सबसे बड़ा निर्यातक भी।इन दोनों किस्मों के आने से निश्चित ही भारत में चावल उत्पादन में कहीं और अधिक बढ़ोत्तरी सुनिश्चित होगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि आईसीएआर की यह उपलब्धि(चावल की किस्मों का विकास) नई उम्मीदों को जगाती है। इससे भारतीय कृषि और अधिक सुदृढ़ और मजबूत होगी।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

आसान नहीं होता
एक प्रतिभाशाली स्त्री से प्रेम करना,
क्योंकि उसे पसंद नहीं होती जी हुजूरी,
झुकती नहीं वो कभी
जबतक न हो
रिश्तों में प्रेम की भावना।
तुम्हारी हर हाँ में हाँ और न में न कहना वो नहीं जानती,
क्योंकि उसने सीखा ही नहीं झूठ की डोर में रिश्तों को बाँधना।
वो नहीं जानती स्वांग की चाशनी में डुबोकर अपनी बात मनवाना,

वो तो जानती है बेबाक़ी से सच बोल जाना।
फ़ज़ूल की बहस में पड़ना उसकी आदतों में शुमार नहीं,
लेकिन वो जानती है तर्क के साथ अपनी बात रखना।
वो क्षण-क्षण गहने- कपड़ों की माँग नहीं किया करती,
वो तो सँवारती है स्वयं को अपने आत्मविश्वास से,
निखारती है अपना व्यक्तित्व मासूमियत भरी मुस्कान से।

तुम्हारी गलतियों पर तुम्हें टोकती है,
तो तकलीफ़ में तुम्हें सँभालती भी है।
उसे घर सँभालना बख़ूबी आता है,
और अपने सपनों को पूरा करना भी।
अगर नहीं आता तो किसी की अनर्गल बातों को मान लेना।
पौरुष के आगे वो नतमस्तक नहीं होती,
झुकती है तो तुम्हारे नि :स्वार्थ प्रेम के आगे।
और इस प्रेम की ख़ातिर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है।

हौसला हो निभाने का तभी ऐसी स्त्री से प्रेम करना,
क्योंकि टूट जाती है वो धोखे से,
छलावे से, पौरुषत्व के अहंकार से,
और फिर जुड़ नहीं पाती है,
किसी शल्य उपचार से।

पिंकी कुंडू

भारत-पाकिस्तान टेंशन- भारत का ताबड़तोड़ जवाबी एक्शन- छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं

भारत की फाइनल पारी- पाकिस्तान पर सबसे भारी- भारत की मुँहतोड़ जवाब की रणनीतिक तैयारी-आतंकवाद के खिलाफ़ वैश्विक समर्थन जारी- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ की नजरें भारत पाकिस्तान के अति तीव्र टेंशन पर लगी हुई है,

भारत ने पहलगाम घटना की जवाबी कार्यवाही ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाक ने अनेकों स्थानों पर मिसाइलें दागी, जिसके जवाब में भारतीय आर्मी ने अनेकों ड्रोन, मिसाइल नाकाम कर दी है, अब हमारा डिफेंस सिस्टम सभी एजेंसयाँ अलर्ट मोड में है, अनेकों राज्यों के अनेकों शहरों में ब्लैकआउट घोषित कर दिया गया है।लगातार सायरन बज रहे हैं, हमारे पूरे मीडिया के साथी दिन रात पैनी नज़र रखे हुए हैं, मैं भी लगातार करीब 20 घंटे पूरी घटनाओं पर नजर रखे हुए हूं। आज सुबह 6 तक संचार माध्यमों में आई पूरी जानकारी के आधार पर यह विशेष रिपोर्ट तैयार किया हूं।संयुक्त राष्ट्र सहित पूरी दुनियाँ के देश इस टेंशन पर नजर बनाए हुए हैं, पाकिस्तान पर भारत की प्रचंड जवाबी प्रहार जारी है, एलओसी पर मुँहतोड़ जवाबी कार्रवाई की जा रही है, पंजाब राजस्थान जम्मू कश्मीर गुजरात के अनेक शहरों में ब्लैक आउट कर दिया गया है। पाक ने अमेरिका से गुहार के बाद अमेरिका ने कहा भारत और पाकिस्तान आपस में निपटो, यानें अमेरिका ने हाथ झटक दिये हैं, मदद से इनकार कर दिया है। पाक़ द्वारा बॉर्डर पर समझौते के उल्लंघन लगातार कर रहाहै व बिना कारण जोरदार फायरिंग कर रहा है तथा भारत की जवाबी कार्रवाई से खलबली मची हुई है।चूँकि भारत द्वारा डिफेंस सिस्टम सहित लाहौर पेशावर के बाद अब कराची पोर्ट को भी तबाह कर दिया गया है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोगसे इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत क़ी जवाबी कार्रवाई से पाकिस्तान में खलबली, पाकिस्तान का एयर डिफेंस सिस्टम सहित कई पोर्ट तबाह कर दिए गए हैं। व भारत- पाकिस्तान टेंशन,भारत का ताबड़तोड़ जवाबी एक्शन, छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं।

साथियों बात अगर हम भारत के अनेकों राज्यों में ब्लैकआउट को समझने की करें तो,भारतसरकार के ऑपरेशन सिंदूर के बाद से पाकिस्तान की हालत खिसियानी बिल्ली जैसी हो गई है। भारतीय सेनाओं की मुस्तैदी को देखते हुए पाकिस्तान और कुछ न कर पाए लेकिन साइबर ड्रोन और मिसाइल अटैक बहुत बढ़ा सकता है।पंजाब के बॉर्डर इलाकों में पाकिस्तान की तरफ से ड्रोन अटैक किया गया है, पाकिस्तान की तरफ से पठानकोट एयरफोर्स स्टेशन को भी निशाना बनाया गया।पाकिस्तान ने जम्मू से लेकर जैसलमेर तक ड्रोन और मिसाइल से हमला किया है, भारत के एयर डिफेंस सिस्टम ने इन हमलों को नाकाम कर दिया है, जम्मू में पाक ने ड्रोन से एयरपोर्ट को निशाना बनाने की कोशिश की,पाकिस्तान की ओर से जम्मू से लेकर राजस्थान के जैसलमेर तक ड्रोन और मिसाइल से हमला किए गए।पाकिस्तान की ओर से किए गए इस ड्रोन अटैक के कारण जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, पंजाब के कई शहरों में ब्लैक आउट कर दिया गया है,कुपवाड़ा में भी सायरन बजने के बाद ब्लैक आउट किए जाने की खबर सामने आई है, हालांकि भारतीय सुरक्षा बलों की ओर से सामने आई जानकारी के अनुसार पाकिस्तान के ड्रोन अटैक को नाकाम कर दिया गया है। जम्मू ,सांबा, पठानकोट और आरएस पूरा में पाक ड्रोन और मिसाइल से हमला किया गया है,इंटरनेशनल बॉर्डर पर भीषण गोलाबारी की जा रही है, पाक मिसाइल और ड्रोन को मार गिराने में S 400 का इस्तेमाल का किया गया है।

साथियों बात अगर हम भारत पाक के बीच जंग के हालात आज 9 मई 2025 के सुबह 6 तक जानने की करें तो, भारत- पाकिस्तान के बीच जंग के हालात, जानिए ताजा अपडेट (1) जम्मू में सायरन बजने के बाद ब्लैक आउट (2) ड्रोन से हमले की कोशिश को किया नाकाम (3) एयर डिफेंस सिस्टम ने हमले को नाकाम किया (4) इंटरनेशनल बॉर्डर पर पाक की ओर से भारी गोलीबारी (5) कुपवाड़ा में भी सायरन बजने के बाद ब्लैक आउट (6) नागरिकों से घर से अंदर रहने को कहा गया है। (7) पाकिस्तान के ड्रोन अटैक का वीडियो भी सामने आया है। (8) जम्मू हवाई अड्डे को निशाना बनाने को कोशिश की गई थी। (9) भारत के एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तान के ड्रोन को मार गिराया (10) अखनूर और किश्तवाड़ में भी ब्लैकआउट। (11) जम्मू के अलावा पंजाब के फिरोजपुर और अमृतसर से भी ब्लैक आउट की खबरें सामने आई है।(12) जम्मू में फोन नेटवर्क में दिक्कत आ रही है. कॉल कनेक्ट नही हो पा रहा है। (13) राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में रेड अलर्ट घोषित किया गया। (14) चंडीगढ़, शिमला, अमृतसर, बठिंडा, भुज से विमानों के उड़ान रद्द कर दिए गए है। (15) राजस्थान के जैसलमेर, श्रीगंगानगर जिले में भी ड्रोन से हमला किया गया है। (16) जम्मू यूनिवर्सिटी के पास दो ड्रोन गिराए गए। (17) यह जानकारी सामने आई कि अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। (18) रुक-रुक कर पाकिस्तान की ओर से अभी भी ड्रोन भारतीय सीमा में आ रहे हैं. जिसे भारतीय डिफेंस सिस्टम

नाकामसाबित कर रही है। (19) मोहाली में दो घंटे के ब्लैकआउट की घोषणा कर दी गई है। (20) गुजरात के सर क्रीक में पाक ड्रोन को मार गिराया गया है (21) राजस्थान- दिल्ली में सरकारी कर्मचारियों की छुट्टी रद्द कर दी गई है। (22) धर्मशाला में आईपीएल का मैच रोक दिया गया है। (23) तीनों सेना प्रमुखों के साथ भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह बैठक कर रहे हैं। (24) अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो से जयशंकर ने बातचीत की है। (25) जालंधर पर हमले की कोशिश नाकाम कर दी गई है। (26) इंटरनेशनल बॉर्डर के बास भीषण गोलीबारी हो रही है, कई चौकियों को खाली कराया गया है। (27) राजस्थान के श्रीगंगानगर में रेड अलर्ट घोषित किया गया है। (28पीएम मोदी और एनएसए अजीत डोभाल के बीच मीटिंग़ हुई।

साथियों बात अगर हम भारत पाक तनाव से जुड़ी महत्वपूर्ण अपडेट की करें तो, नौसेना ने समुद्री हमले में कराची पोर्ट पर ताबड़तोड़ मिसाइलें दागी हैं, इन हमलों में कराची पोर्ट बताया जा रहा है की पूरी तरह से तबाह कर दिया गया है, पहलगाम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान से बढ़े तनाव के बीच भारतीय नौसेना ने पहले ही आईएनएस विक्रांत को अरब सागर में तैनात कर रखा है भारत-पाकिस्तान तनाव से जुड़े जरूरी अपडेट्स।(1) पाकिस्तान की तरफ से आरएसपुरा सेक्टर में भारी शेलिंग हो रही है। नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास कुपवाड़ा और बारामूला में भारी फायरिंग हो रही है। भारतीय सेना जवाब दे रही है। (2) सतवारी, सांबा, आरएस पुरा सेक्टर और अरनिया में 8 मिसाइलें दागीं। इन्हें भी भारतीय एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम ने नाकाम कर दिया। (3) पाक की तरफ से हो रहे हमलों को देखते हुए जम्मू में सीमा के पास रह रहे लोगों को बंकर में ले जाया गया है। पूरे कश्मीर में बिजली बंद कर दी गई है। इन इलाकों में पूरी तरह ब्लैक आउट (1) जम्मू-कश्मीरः जम्मू, उधमपुर, किश्तवाड़, अखनूर, सांबा, श्रीनगर और अनंतनाग (2) राजस्थानः बाड़मेर, बीकानेर और श्रीगंगानगर (3) पंजाबः चंडीगढ़, मोहाली, जालंधर, अमृतसर, होशियारपुर, गुरदासपुर, पठानकोट और तरनतारन (4) गुजरातः भुज, कच्छ और पाटण, भारतीय सेना ने रावलपिंडी, इस्लामाबाद, पेशावर और लाहौर में लोइटरिंग एम्युनिशन के जरिए जवाबी हमला किया है, इन इलाकों में बड़े धमाकों की खबर है, कराची भी भारतीय नौसेना के किसी संभावित एक्शन से घबराया हुआ है, गुरुवार रात का जवाबी हमला भी पूरी तरह आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाकर किया गया, सूत्रों ने यह भी स्पष्ट किया कि यह कार्रवाई ऑपरेशन सिंदूर का हिस्सा है, यह हमला पाकिस्तान की ओर से बार-बार हो रही उकसावे की कार्रवाई का करारा जवाब है. पाकिस्तान ने एक बार फिर रात के अंधेरे में कायराना हमला किया. गुरुवार रात को जम्मू, पंजाब और राजस्थान में कई जगहों पर हमले किए गए, एस-400 और 'आकाश' जैसे मुस्तैद एयर डिफेंस सिस्टम ने हर हमला नाकाम कर दिया। भारत ने जवाबी कार्रवाई में इस्लामाबाद तक मार की है. सियालकोट और लाहौर में भी ड्रोन दागे गए. भारत ने पाकिस्तान के दो ज़े एफ-17 और एफ-16 जेट भी मार गिराए हैं, रक्षा मंत्री ने पीएम को ताजा घटनाक्रम से अवगत कराया. पीएम लगातार स्थिति को मॉनिटर कर रहे हैं, सिंह ने सीडीएस जनरल और तीनों सेना प्रमुखों से भी बात की है. पीएम ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) से भी मुलाकात की, गृह मंत्री ने बीएसएफ और सीआईएसएफ के डीजी से बात की है। बीएसएफ के जिम्मे पाकिस्तान से लगती सीमा है तो सीआई एसएफ देश के महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की सुरक्षा संभालती है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत-पाकिस्तान टेंशन- भारत का ताबड़तोड़ जवाबी एक्शन-छेड़ोगे तो छोड़ेंगे नहीं।भारत की जवाबी कार्रवाई से पाकिस्तान में खलबली-पाकिस्तान का एयर डिफेंस सिस्टम सहित कई पोर्ट तबाह।भारत की फाइनल पारी- पाकिस्तान पर सबसे भारी- भारत की मुँहतोड़ जवाब की रणनीतिक तैयारी-आतंकवाद के खिलाफ़ वैश्विक समर्थन जारी।

भारत और ब्रिटेन के बीच फ्री ट्रेड एग्रीमेंट से होगा फायदा, रेंज रोवर से रोल्स रॉयस तक महंगी कारों को खरीदना हो सकता है सस्ता

परिवहन विशेष न्यूज

भारत-ब्रिटेन एफटीए भारत और ब्रिटेन के बीच हाल में ही फ्री टेड एग्रीमेंट पर साइन किए गए हैं। जिसके बाद कई क्षेत्रों में दोनों देशों को बड़ा फायदा मिल सकता है। एग्रीमेंट का फायदा ऑटोमोबाइल सेक्टर को भी होगा। कई ब्रिटिश कारों को अब भारत में खरीदना काफी सस्ता हो सकता है। किन निर्माताओं की कारों को अब भारत में कम कीमत पर खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत दुनिया के बड़े देशों के साथ लगातार अपने संबंधों को बेहतर कर रहा है। इसी क्रम में हाल में ही भारत और ब्रिटेन के बीच फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (India UK Free Trade Agreement) जैसे समझौते पर साइन किए गए हैं। इस एग्रीमेंट जैसे समझौते के बाद ऑटोमोबाइल क्षेत्र में भी बड़ा फायदा होगा। अब किन ब्रिटिश वाहन निर्माताओं की कारों को भारत में खरीदना सस्ता हो जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत और ब्रिटेन के बीच हुआ एग्रीमेंट

भारत और ब्रिटेन के बीच व्यापार को बढ़ाने के लिए फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर हाल में ही साइन किए गए हैं। इसके बाद ब्रिटेन से भारत आने वाली कई कारों को खरीदना सस्ता हो जाएगा। जानकारी के मुताबिक अभी तक विदेशों से भारत आने वाली कारों पर 100 फीसदी से ज्यादा का टैक्स (luxury car import duty) लगता है। लेकिन इस एग्रीमेंट के लागू होने के बाद इस टैक्स को कम करते हुए 10 फीसदी तक किया जा सकता है।

किन निर्माताओं को होगा फायदा

टैक्स में कमी होने के बाद कई ब्रिटिश वाहन निर्माताओं को इसका बड़ा फायदा मिलेगा। जानकारी के मुताबिक ब्रिटेन से भारत आने वाली करीब नौ निर्माताओं की 28 कारों को इसका फायदा मिल सकता है। इनमें मैक्लॉरेन की तीन, रोल्स रॉयस की तीन (cheaper Rolls Royce in India), बेंटले की दो, एस्टन मार्टिन की पांच, लोटस की तीन, लैंड रोवर की चार, जगुआर की एक और मिनी की चार कारें शामिल हैं।

कितनी है कीमत

ब्रिटेन से भारतीय बाजार में जिन कारों को ऑफर किया जाता है, उनकी कीमत लाखों-करोड़ों रुपये में है। भारत में 100 फीसदी से ज्यादा के टैक्स के बाद इन कारों की कीमत कई लाख रुपये तक बढ़ जाती है। जानकारी के मुताबिक बीएमडब्ल्यू के ब्रॉन्ड मिनी की ओर से कूपर को ऑफर किया जाता है जिसकी भारत में कीमत 48 लाख रुपये से शुरू हो जाती है। इसके अलावा लैंड रोवर और रेंज रोवर की कीमत 68-69 लाख रुपये से शुरू होती है। ब्रिटेन से भारत आने वाली सबसे महंगी कारों में रोल्स रॉयस सबसे ऊपर है। इसकी कारों की भारत में कीमत 6.95 करोड़ रुपये से 9.50 करोड़ रुपये के बीच है। इसके अलावा स्पोर्ट्स कार सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली एस्टन मार्टिन की कारों की कीमत तीन से नौ करोड़ रुपये के बीच है। लोटस की कारों की कीमत भी दो से तीन करोड़ रुपये, बेंटले की कारों की कीमत चार से पांच करोड़ रुपये और मैक्लॉरेन की कीमत चार से छह करोड़ रुपये के आस पास है।

किआ कैरेंस कुंजी की बुकिंग जारी, इस तारीख को हो जाएगी कीमतों की घोषणा, जानें कैसे हैं फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

किआ कैरेंस क्लैविस की बुकिंग शुरू भारतीय बाजार में किआ की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से आठ मई 2025 को नई एमपीवी के तौर पर Kia Carens Clavis को पेश किया है। इस एसयूवी के लिए आज से बुकिंग शुरू कर दी गई है और इसकी कीमतों की घोषणा किस तारीख को की जाएगी। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। साउथ कोरियाई वाहन निर्माता किआ की ओर से भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से आठ मई 2025 को ही नई एमपीवी के तौर पर Kia Carens Clavis को पेश किया गया है। इस एमपीवी के लिए बुकिंग भी शुरू कर दी गई है। क्लाविस की कीमतों की घोषणा किस तारीख को की जाएगी। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पेश हुई किआ कैरेंस क्लाविस

किआ मोटर्स की ओर से औपचारिक तौर पर नई एमपीवी Kia Carens Clavis को पेश कर दिया गया है। इसके साथ ही एमपीवी के फीचर्स, इंजन और अन्य जानकारी को भी सार्वजनिक किया गया है। इसे किआ के नए 2.0 डिजाइन के साथ ऑफर किया गया है। इसी डिजाइन पर निर्माता की ओर से EV9, Syros जैसी कारों को भी ऑफर किया जा रहा है।

जारी है बुकिंग

किआ की ओर से क्लाविस को पेश करते समय ही जानकारी दी गई थी कि वह इस नई एमपीवी के लिए बुकिंग को नौ मई 2025 की सुबह 12 बजे से बुकिंग को शुरू कर देगी। जिसके बाद इसके लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन डीलरशिप पर बुकिंग करवाई जा सकती है।

कब होगी कीमतों की घोषणा

किआ की ओर से जानकारी दी गई है कि वह Kia Carens Clavis की कीमतों की घोषणा 23 मई 2025 को कर देगी और कुछ समय बाद ही इसकी डिलीवरी को भी शुरू कर दिया जाएगा।

कितनी होगी कीमत

निर्माता की ओर से औपचारिक तौर पर इसकी कीमतों की घोषणा 23 मई को की जाएगी। तभी इसकी कीमत की सही जानकारी मिल पाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसकी संभावित एक्स शोरूम कीमत 12 लाख रुपये के आस- पास से शुरू हो सकती है और इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत करीब 22 से 23 लाख रुपये तक हो सकती है।

मिलते हैं बेहतरीन फीचर्स

किआ की ओर से कैरेंस क्लाविस एमपीवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है। इसमें 26.62 इंच ड्यूल स्क्रीन, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, 64 रंग एंबिएंट लाइट्स, 360 डिग्री कैमरा, एयर प्यूरीफायर, बोस ऑडियो सिस्टम, वायरलेस फोन चार्जर, टू स्पोक स्टेयरिंग व्हील, ड्यूल टोन इंटीरियर, ब्लैक साइड डोर गार्निश, 17 इंच अलॉय व्हील्स, पुश बटन स्टॉर्ट/स्टॉप, सेकेंड रो कैप्टन सीट्स, ऑल विंडो अप-डाउन के साथ ही पैनोरमिक सनरूफ और ADAS जैसे फीचर्स को दिया गया है।

किनसे है मुकाबला

किआ की ओर से कैरेंस क्लाविस को एमपीवी सेगमेंट में ऑफर किया जा रहा है। इस सेगमेंट में इसका मुकाबला JSW MG Hector, Mahindra Scorpio N, XUV 700, Tata Safari, Toyota Innova Crysta जैसी एमपीवी और एसयूवी के साथ होगा।

एमजी विंडसर प्रो की भारत में इतनी ज्यादा डिमांड, 24 घंटे में ही हो गई आठ हजार से ज्यादा बुकिंग, इतनी बढ़ गई कीमत

एमजी विंडसर प्रो बुकिंग जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर्स की ओर से छह मई को भारतीय बाजार में औपचारिक तौर पर MG Windsor Pro को लॉन्च किया गया था। निर्माता की ओर से इसके लिए बुकिंग भी शुरू कर दी गई थी। जिसके बाद 24 घंटों में ही नया रिकॉर्ड बना दिया है। निर्माता से मिली जानकारी के मुताबिक किस तरह का रिकॉर्ड 24 घंटों में बनाया गया है। आइए जानते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता MG मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री भारतीय बाजार में की जाती है। निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक लॉन्च के 24 घंटों में ही MG Windsor Pro EV ने नया रिकॉर्ड बनाया है। साथ ही इसकी कीमतों में क्यों बढ़ोतरी कर दी गई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG Windsor Pro EV ने बनाया रिकॉर्ड

एमजी की ओर से इलेक्ट्रिक गाड़ी के तौर पर ऑफर की गई विंडसर प्रो ने लॉन्च के 24 घंटों में ही नया रिकॉर्ड बना दिया है। निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक बुकिंग (MG Windsor Pro bookings) शुरू होते ही देशभर से इसके लिए बड़ी संख्या में बुकिंग मिली हैं। सिर्फ 24 घंटों में ही MG Windsor Pro के लिए आठ हजार बुकिंग (MG electric car demand) एमजी को मिल चुकी हैं।

कीमत में हुआ बदलाव

निर्माता की ओर से प्रो वेरिएंट की कीमतों में भी बदलाव (MG Windsor Pro price hike) कर दिया है। अब इस गाड़ी को भारत में 18.09 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया गया है। इसके BaaS स्कीम की कीमत को भी बढ़ाकर 13.09 लाख रुपये और 4.5 रुपये प्रति किलोमीटर कर दिया गया है।

छह मई को हुई थी लॉन्च

एमजी की ओर से विंडसर प्रो ईवी को छह मई 2025 को ही भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया था। लॉन्च के समय इसकी एक्स शोरूम कीमत 17.49 लाख रुपये रखी गई थी और इसे BaaS के तहत खरीदने पर कीमत 12.49 लाख रुपये रखी गई थी।

क्यों बढ़ाई कीमत

निर्माता की ओर से लॉन्च के समय ही इस बात की जानकारी दी गई थी पहली आठ हजार बुकिंग तक ही 17.49 लाख रुपये के इंट्रोडक्ट्री कीमत पर गाड़ी खरीदी जा सकेगी। इसके बाद कीमतों में बदलाव कर दिया जाएगा। अब 24 घंटे में ही आठ हजार बुकिंग मिलने के बाद एमजी की ओर से कीमतों में बदलाव कर दिया गया है।

किनसे है मुकाबला

एमजी मोटर्स की ओर से विंडसर प्रो ईवी को 449 किलोमीटर की रेंज और ADAS जैसे फीचर के साथ ऑफर किया गया है। इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला, Mahindra BE6, Hyundai Creta Electric, Tata Curvv EV, Tata Nexon EV जैसी इलेक्ट्रिक एसयूवी के साथ होता है। जल्द ही इसे Maruti Suzuki E Vitara और Toyota Hyryder Electric से भी चुनौती मिलेगी।

मर्सिडीज बेंज कर रही कारों को महंगा करने की तैयारी, जानें कब से और कितनी बढ़ जाएगी कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

मर्सिडीज-बेंज कारों की कीमत में बढ़ोतरी जर्मनी की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Mercedes Benz की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही अपनी कारों की कीमत बढ़ाने की तैयारी की जा रही है। किस सेगमेंट में कितनी कीमत बढ़ाई जाएगी। बढ़ी हुई कीमतों को कब से लागू किया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में दुनियाभर की कई वाहन निर्माता अपनी कारों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाती हैं। इसी क्रम में जर्मनी की वाहन निर्माता Mercedes Benz भी कई सेगमेंट में कारों को ऑफर करती है। निर्माता की ओर से जानकारी दी गई है कि वह देश में अपनी कारों की कीमतों को बढ़ाने की तैयारी कर रही है। मर्सिडीज की कारों को कब से और कितना महंगा (Mercedes-Benz Cars Price Hike) किया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महंगी होंगी Mercedes Benz की कारें

मर्सिडीज बेंज की ओर से जल्द ही कारों को महंगा कर दिया जाएगा। निर्माता की ओर से औपचारिक तौर पर इसकी जानकारी दी गई है। इसके साथ ही यह भी बताया गया है कि वह सभी मॉडल्स की कीमतों में अलग अलग बढ़ोतरी करेगी।

कब से बढ़ेगी कीमत

मर्सिडीज की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक कारों की कीमत को दो चरण में बढ़ाया जाएगा। निर्माता की ओर से बताया गया है कि एक जून से लेकर एक सितंबर 2025 के बीच दो चरणों में कीमत बढ़ाई जाएगी। जिससे ग्राहकों को कार खरीदने और योजना बनाने में समय मिल पाएगा। सितंबर 2025 से कीमत में बढ़ोतरी का दूसरा चरण लागू होगा, तब कीमत 1.5 फीसदी की दर से बढ़ जाएगी।

क्या है कारण

कीमत बढ़ाने को लेकर मर्सिडीज की ओर से कारण भी दिया गया है। निर्माता ने कहा है कि पिछले चार महीनों में विदेशी मुद्रा दर में लगातार 10 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। जिसके कारण सीबीयू उत्पादों की कीमत में भी बढ़ोतरी हुई है। निर्माता अब इस बढ़ोतरी का कुछ हिस्सा लोगों पर डालने की तैयारी कर रही है।

कितनी बढ़ेगी कीमत

मर्सिडीज बेंज ने बताया है कि वह अलग अलग मॉडल की कीमत में अलग अलग बढ़ोतरी करेगी। एंट्री लेवल कार की कीमत में 90 हजार रुपये तक की बढ़ोतरी की जाएगी। वहीं टॉप एंड लग्जरी गाड़ी की कीमत में 12.2 लाख रुपये तक बढ़ाए जाएंगे।

इन कारों की बढ़ेगी कीमत

मर्सिडीज के मुताबिक C200 की कीमत में 90 हजार रुपये बढ़ाए जाएंगे। GLC 300 4Matic की कीमत में 1.5 लाख रुपये, E200 की कीमत में दो लाख रुपये, GLE 300d 4Matic AMG Line की कीमत में 2.5 लाख रुपये, EQS 450 4Matic SUV की कीमत में तीन लाख रुपये, GLS 450 4Matic की कीमत में 3.1 लाख रुपये और Maybech S680 की कीमत में 12.2 लाख रुपये तक बढ़ाए जाएंगे।

किआ सिरोस को खरीदना हो गया महंगा, जानें किस वेरिएंट की कीमत में हुई कितनी बढ़ोतरी

परिवहन विशेष न्यूज

किआ सिरोस की कीमत में बढ़ोतरी साउथ कोरियाई वाहन निर्माता किआ की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Kia Syros की कीमतों को बढ़ा दिया है। किआ की ओर से कीमतों में कितनी बढ़ोतरी की गई है। किस वेरिएंट की कीमत में क्या बदलाव हुए हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। साउथ कोरियाई वाहन निर्माता किआ मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों को बिक्री के लिए भारतीय बाजार में उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Kia Syros की कीमतों को बढ़ा (Kia Syros price increase) दिया है। किआ की ओर से कीमतों में कितनी बढ़ोतरी की गई है। किस वेरिएंट के दाम में क्या बदलाव किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महंगा हुआ Kia Syros को खरीदना

किआ मोटर्स की ओर से सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Kia Syros को खरीदना अब महंगा हो गया है। निर्माता की ओर से इसकी कीमतों में 50 हजार रुपये तक बढ़ाए हैं। सबसे ज्यादा बढ़ोतरी इस एसयूवी के बेस वेरिएंट में ही की गई है।

बेस वेरिएंट की कीमत

Kia Syros के बेस वेरिएंट के तौर पर HTK को ऑफर किया जाता है। इस वेरिएंट को अभी तक 8.99 लाख रुपये में ऑफर किया जा रहा था। लेकिन अब बढ़ोतरी के बाद इसकी एक्स शोरूम कीमत 9.49 लाख रुपये हो गई है।

सेकेंड बेस वेरिएंट की कीमत

सिरोस एसयूवी के सेकेंड बेस वेरिएंट के तौर पर HTK (O) को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। इस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 9.99 लाख रुपये थी। लेकिन बढ़ोतरी के बाद अब इस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 10.29 लाख रुपये हो गई है। इसकी कीमत में 30 हजार रुपये की बढ़ोतरी की गई है।

HTK Plus भी हुआ महंगा

निर्माता की ओर से एक लीटर पेट्रोल इंजन के साथ HTK Plus को भी ऑफर किया जाता है। इस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत में भी 30 हजार रुपये तक बढ़ाए गए हैं। बढ़ोतरी से पहले इसे 11.49 लाख रुपये में ऑफर किया जा रहा था। लेकिन अब इसकी एक्स शोरूम कीमत 11.79 लाख रुपये हो गई है। एक लीटर मैनुअल ट्रांसमिशन के अलावा इसके HTK Plus Turbo DCT को भी महंगा कर दिया गया है। इसकी कीमत में भी 30 हजार रुपये की बढ़ोतरी की गई है जिसके बाद अब इसे 13.09 लाख रुपये में खरीदा जा सकता है।

डीजल वेरिएंट्स की कीमत में भी हुई बढ़ोतरी

किआ सिरोस को टर्बो पेट्रोल इंजन के विकल्प के साथ ही डीजल मैनुअल इंजन के साथ भी ऑफर किया जाता है। इस इंजन के साथ एसयूवी के HTK (O) वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत में 30 हजार रुपये बढ़ाए गए हैं। जिसके बाद इस वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 10.99 लाख रुपये की जगह 11.29 लाख रुपये हो गई है।

HTK Plus डीजल वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत में भी 30 हजार रुपये बढ़ाए गए हैं। जिसके बाद यह 12.79 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जा रहा है।

इन वेरिएंट्स की नहीं बढ़ी कीमत

निर्माता की ओर से कई वेरिएंट्स की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया है। इनमें एक लीटर टर्बो पेट्रोल मैनुअल का HTX, ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन वाला HTX Plus और HTX Plus (O), डीजल मैनुअल का HTX और डीजल ऑटोमैटिक के दोनों वेरिएंट शामिल हैं।

आईआईटी और आईआईएम से परे: आश्चर्यजनक पाठ्यक्रम जो आप भारतीय विश्वविद्यालयों में मौजूद नहीं जानते थे

विजय गर्ग

एक कैरियर पथ है कि कुछ भी लेकिन साधारण के लिए खोज रहे हैं? संगीत के माध्यम से चिकित्सा से लेकर विज्ञान के साथ जलवायु चुनौतियों को हल करने तक, भारतीय विश्वविद्यालय अब उन पाठ्यक्रमों की पेशकश कर रहे हैं जो मोल्ड को तोड़ते हैं। यहां ताजा, भविष्य के लिए तैयार विकल्पों पर एक नज़र है जिसके बारे में आपने नहीं सुना होगा - लेकिन चाहिए।

वे दिन गए जब डॉक्टर या इंजीनियर बनना महत्वाकांक्षा का एकमात्र बेंचमार्क था। आज की तेजी से विकसित हो रही दुनिया में, प्रौद्योगिकी और वैश्विक चुनौतियों से प्रेरित, नए कैरियर पथ उभरे हैं, जिससे छात्रों को विशेष और भविष्य के लिए तैयार विकल्पों की एक विस्तृत श्रृंखला मिल रही है। यहां कुछ आला और ऑफबीट पाठ्यक्रम हैं जो अब भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा पेश किए गए हैं जो इस बदलाव को दर्शाते हैं।

1.। पर्यावरण इंजीनियरिंग यह क्या है: सीधे शब्दों में कहें, यह पाठ्यक्रम छात्रों को विकास को अधिक टिकाऊ बनाने के लिए सुसज्जित करता है। इसका उद्देश्य सक्रिय और प्रतिक्रियाशील दोनों दृष्टिकोणों के माध्यम से पर्यावरणीय प्रणालियों के प्रबंधन में विशेषज्ञता का निर्माण करना है। स्रोत पर प्रदूषण को कम करने और होने पर इसे नियंत्रित करने के लिए सर्वोत्तम उपलब्ध तकनीकों का उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

आप इसे कहां पा सकते हैं: बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (बिट्स) पिलानी ने 2023 में पर्यावरण इंजीनियरिंग में चार सेमेस्टर का एमटेक लॉन्च किया।

पर्यावरण इंजीनियरिंग में स्नातक जल गुणवत्ता विशेषज्ञों और पर्यावरण डिजाइन इंजीनियरों के रूप में काम कर सकते हैं। चित्र क्रेडिट: कैरोल इंजीनियरिंग कॉर्पोरेशन आप इसके साथ क्या पता लगा सकते हैं: यह उन इंजीनियरों के लिए आदर्श है जो स्थिरता के क्षेत्र में काम करना चाहते हैं। यह पाठ्यक्रम दरवाजे खोलता है जैसे:

पर्यावरण स्वास्थ्य और सुरक्षा (ईएचएस) प्रबंधक वायु गुणवत्ता विशेषज्ञ सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट इंजीनियर पर्यावरण डिजाइन इंजीनियर 2.। साइबर फिजिकल सिस्टम में बीटेक यह क्या है: साइबर-फिजिकल सिस्टम्स (सीपीएस) डिजिटल और भौतिक दुनिया को पाटते हैं - स्वयं ड्राइविंग कारों या एआई-संचालित कारखानों के बारे में सोचें। यह पाठ्यक्रम वास्तविक समय के बुद्धिमान प्रणालियों के निर्माण के लिए कंप्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल सिस्टम और डेटा विज्ञान को एकीकृत करता है आप इसे कहां पा सकते हैं: मणिपाल विश्वविद्यालय, मैंगलोर और वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी साइबर-भौतिक प्रणालियों में चार साल की बीटेक की पेशकश करते हैं।

आप इसके साथ क्या पता लगा सकते हैं: स्नातक बुद्धिमान, वास्तविक दुनिया प्रणालियों के डिजाइन और निर्माण के लिए सुसज्जित हैं जहां कंप्यूटर, सेंसर, मशीनें और नेटवर्क मूल रूप से बातचीत करते हैं। कैरियर पथ में शामिल हैं:

साइबर इंजीनियर रोबोटिक्स डेवलपर एंबेडेड सिस्टम आर्किटेक्ट एआई शोधकर्ता ऑटोमेशन इंजीनियर 3। मेडिकल कोडिंग यह क्या है: एक मेडिकल कोडर विश्व स्तर पर स्वास्थ्य प्रणाली में उपयोग किए जाने वाले मानकीकृत सार्वभौमिक कोड में डॉक्टरों के नोट्स, निदान और प्रक्रियाओं का अनुवाद करता है। यह चिकित्सा बिलिंग प्रक्रिया में पहला कदम है, जो रोगी के इतिहास को ट्रैक करने, अस्पतालों को बीमाकर्ताओं से जोड़ने और बिलिंग संचालन को कारगर बनाने में मदद करता है।

मेडिकल कोडर स्वास्थ्य सेवा के व्यावसायिक पक्ष में शामिल हो जाते हैं और अस्पतालों और बीमा एजेंसियों के बीच लिंक को सहज रखने में मदद करते हैं। मेडिकल कोडर स्वास्थ्य सेवा के व्यावसायिक पक्ष में शामिल हो जाते हैं और अस्पतालों और बीमा एजेंसियों के बीच लिंक को सहज रखने में मदद करते हैं। चित्र क्रेडिट: शटरस्टॉक प्रतिनिधि छवि आप इसे कहां पा सकते हैं: दिल्ली में स्वास्थ्य प्रबंधन और अनुसंधान केंद्र स्नातकोत्तर और कार्यकारी डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इंपीरियल इंस्टीट्यूट ऑफ क्लिनिकल रिसर्च, अहमदाबाद, एक और तीन महीने के प्रमाण पत्र कार्यक्रम प्रदान करता है। आप इसके साथ क्या पता लगा सकते हैं: यह स्वास्थ्य सेवा के व्यवसाय या प्रशासनिक पक्ष में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए एकदम सही है। नौकरी की भूमिकाओं में शामिल हैं:

चिकित्सा लेखा परीक्षक स्वास्थ्य सूचना तकनीशियन अनुपालन अधिकारी 4। मुसोपैथी यह क्या है: मुसोपैथी चिकित्सा के लिए ध्वनि के सार्वभौमिक गुणों का अध्ययन करके संगीत के चिकित्सीय गुणों की पड़ताल करती है। यह यह आकलन करने के लिए स्वास्थ्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी को मिश्रित करता है कि ध्वनि मानव भलाई को कैसे प्रभावित करती है। जबकि यह संगीत चिकित्सा के साथ ओवरलैप होता है, होम्योपैथी चिकित्सीय परिणामों के लिए ध्वनि के वैज्ञानिक अनुप्रयोग में निहित है।

आप इसे कहां पा सकते हैं: IIT मंडी ने 2024 में यह पाठ्यक्रम पेश किया। यह स्नातकोत्तर (एमएस) और पीएचडी कार्यक्रम दोनों प्रदान करता है।

आप इसके साथ क्या पता लगा सकते हैं: यह उभरता हुआ क्षेत्र करियर के लिए स्नातक तैयार करता है जैसे: संगीत-आधारित चिकित्सक (मुसोपैथिस्ट) संगीत चिकित्सा में हेल्थकेयर विशेषज्ञ

संबंधों के बदलते समीकरण

विजय गर्ग

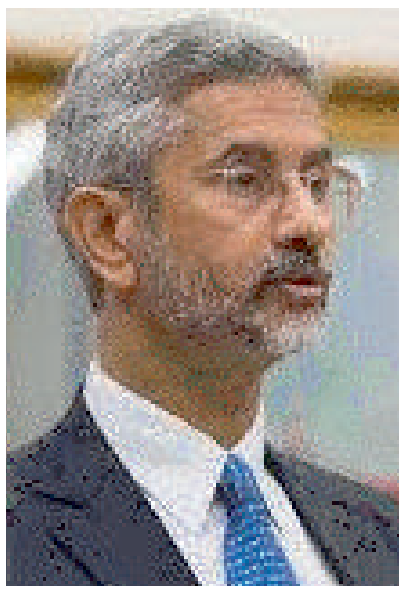

भारत में विवाह सिर्फ एक सामाजिक परंपरा नहीं, बल्कि इसे एक संस्था का दर्जा हासिल है। इससे गहरी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अवधारणा जुड़ी है। विवाह वह संस्था है, जो दो व्यक्तियों को जीवन भर के लिए प्रेम, भरोसे और समर्पण के रिश्ते में बांधती है। विवाह का उद्देश्य केवल एक-दूसरे का साथ निभाना नहीं, बल्कि एक संपूर्ण परिवार की नींव रखना भी होता है। यही वजह है कि विवाह से उत्पन्न होने वाले रिश्ते समाज की रीढ़ माने जाते हैं। हैं। विवाह जैसी संस्था ताउम्र सह- :-जीवन की पैरवी करती है। हमारे देश में विवाह सदियों पुरानी परंपरा है, जिसके बिना सब कुछ अधूरा सा महसूस होता है। हमारा समाज विवाह से उपजे रिश्ते को न केवल स्वीकार करता है, बल्कि इज्जत भी देता है। इतनी समृद्ध परंपरा वाले इस देश में क्षणिक रिश्तों की ओर भागने की कोशिश की जा रही है। क्षणिक रिश्तों के फायदे समाज में प्रचारित किए जा रहे हैं, पर सवाल है कि यह सब किसलिए किया जा रहा है? क्या फिर पाश्चात्य संस्कृति की यह किसी बाजारवाद से प्रेरित है या कुत्सित त्सित साजिश, जिसकी दिलचस्पी भारतीय संस्कृति को हमेशा कमजोर करने में रही है। इन दिनों परंपराओं में यकीन करने वाले भारत में एक नया शब्द तेजी से उभारा जा रहा है, वह है- 'नैनोशिप' यह शब्द एक 'डेटिंग एप' ने पेश किया है, जिसमें दावा किया गया कि वर्ष 2025 में रूमानी रिश्तों की परिभाषा इसके जरिए बदल जाएगी। 'नैनोशिप' के बारे में भारत में पहले कोई चर्चा नहीं होती थी। यह चर्चा तो तबसे होने लगी, जब डेटिंग एप ने हौले से 'ईयर इन स्वाइप 2024' नामक एक रपट परोस दी। यह एप प्रति वर्ष ऐसी रपट में डेटिंग के अलग-अलग तरीके बताता है। इस बार भी इस रपट में ऐसा ही किया गया, जब 'नैनोशिप' की अवधारणा लोगों सामने रख कर दावा किया गया कि यह एक ऐसा नया तरीका है, वर्ष 2025 में डेटिंग की दुनिया को अलग तरह से प्रभावित कर सकता है और प्यार करने की । परिभाषा 1 को I तरह बदल सकता है। सवाल उठता है। भारतीय समाज में ऐसी अवधारणा का प्रसार क्यों किया रहा है? क्या यह विचार हमारी संस्कृति और मूल्यों के अनुकूल है ? दरअसल, 'नैनोशिप' एक ऐसा रिश्ता है जो बेहद अल्पकालिक होता है। यह यह कुछ घंटों, दिनों या हफ्तों के लिए हो सकता है। अठारह से चौतीस वर्ष के बीच के आठ हजार युवाओं के बीच सर्वे में यह पाया गया कि रोमांस और तात्कालिक जुड़ाव उनके लिए बहुत मायने रखता है। विशेष रूप से कुंआरे युवाओं के लिए 'नैनोशिप' आकर्षक विकल्प बन क्योंकि इसमें कोई जिम्मेदारी या सामाजिक बंधन नहीं होता। यह रिश्ता सिर्फ 'पल र की खुशी' के लिए होता है। मगर सवाल यह है। क्या आठ हजार लोगों का सर्वेक्षण एक पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करता है? भारत की 1 करोड़ से अधिक है और उसमें भी युवा वर्ग करोड़ों की संख्या में है। ऐसे में मात्र आठ हजार लोगों के विचारों के आधार पर एक सामाजिक रुख को स्थापित करना न केवल भ्रामक है, बल्कि समाज को गलत दिशा में धकेलने के समान भी है। सवाल यह भी है कि क्या एक सीमित और लक्षित सर्वे से पूरे देश की मानसिकता का अनुमान लगाया जा सकता है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है जिसका उत्तर खोजने की जरूरत है।

जो लोग इसके महिमामंडन में जुटे हैं, उनका तर्क है कि इस रिश्ते में भावात्मक जुड़ाव शून्य या नाममात्र होता है। इसमें किसी पर कोई दायित्व नहीं। न ही लंबे समय तक किसी का बोझ ढोने की मजबूरी। जिस प्रकार देश में 'नैनोशिप' को बढ़ावा देने की कोशिशें हो रही हैं, उनमें बाजारवाद साफ महसूस होता है। आज 'डेटिंग एप' एक बड़ा उद्योग बन चुका है जो रिश्तों को एक उपभोग की वस्तु के रूप में परोस रहे हैं। इससे बाजार को नए उत्पाद और नए ग्राहक मिलते हैं। सवाल है कि क्या यह प्रेम की तलाश है या मुनाफे का गणित ? बाजार में उपभोक्ताओं को भावात्मक संबंध' नहीं, बल्कि 'संतोषजनक अनुभव' चाहिए, जिसे जब चाहे लिया और जब व चाहे छोड़ा जा सके। यह भारतीय समाज की भावपूर्ण, स्थायित्व और समर्पण की मूल भावना के विपरीत है।

हमारे समाज की सबसे बड़ी ताकत उसका पारिवारिक ढांचा है। इसलिए विवाह को केवल व्यक्तिगत निर्णय नहीं, बल्कि सामाजिक संस्था माना गया है। विवाह में सात फेरे जैसी रस्में जीवन भर साथ निभाने का वचन हैं। यह रिश्ता केवल दो व्यक्तियों के बीच नहीं बल्कि दो परिवारों के बीच होता है। इसमें समाज की भागीदारी होती है और यही सामाजिक समर्थन एक परिवार को मजबूती देता है हमारी संस्कृति में विवाह को जन्म-जन्मांतर का बंधन माना जाता है। इसमें शारीरिक या तात्कालिक आकर्षण से कहीं अधिक एक गहन भावनात्मक और आध्यात्मिक जुड़ाव होता है। ऐसे में केवल मस्ती और पल भर के संतोष पर आधारित 'नैनोशिप' जैसे रिश्ते क्या हमारे समाज में स्वीकार किए जा सकत सकते हैं?

हाल के वर्षों का अनुभव बताता है कि सह-जीवन में धोखा और बिखराव एवं हिंसा की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं। प्रेम के रिश्ते में बंधने का दावा करने वाले लोगों ने किस प्रकार अपने साथी को निर्ममता से मौत के घाट उतारा है, यह कई बार देखा गया है। जब रिश्तों में स्थायित्व और जिम्मेदारी नहीं होती, तब उनका परिणाम अक्सर मानसिक तनाव, अकेलेपन और कभी-कभी अपराध तक पहुंच जाता है। 'नैनोशिप' जैसे रिश्तों में तो भावना और जिम्मेदारी का बिल्कुल अभाव ही है। ऐसे रिश्ते एक अस्थिर सामाजिक वातावरण ही बना सकते हैं जिसमें लोग सिर्फ अपनी तात्कालिक इच्छाओं के लिए जीते हैं। ऐसे लोगों के पास यह सोचने का समय ही नहीं होता कि उनके कर्मों का प्रभाव समाज और अन्य लोगों पर क्या होगा ?

सवाल यह नहीं है कि यह नया विचार हमारे समाज को किस कदर प्रभावित कर पाएगा, बल्कि सवाल तो यह है कि हम इसके प्रभावों के प्रति कितने जागरूक हैं? यह समय चुनौतीपूर्ण और सजग होने का है। पश्चिम का अंधानुकरण कर हम पहले ही बहुत कुछ खो चुके हैं। अब हमें बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि रिश्तों में धैर्य, समझदारी, समर्पण और जिम्मेदारी कितनी जरूरी है। हमें बाजार की ओर से से थोपे जा जा रहे 'नए 'चलन' को आंख मूंद कर स्वीकार करने के बजाय अपनी संस्कृति और परंपराओं को ध्यान में रख कर उसका मूल्यांकन करना चाहिए।

संभव है 'नैनोशिप' जैसे रिश्ते पश्चिमी देशों के समाज में फिट बैठते हों। उनके यहां व्यक्तिगत स्वतंत्रता सामाजिक जिम्मेदारियों से ऊपर है, लेकिन भारत में यह विचार सिर्फ अस्थिरता, निराशा और टूटन ही लाएगा। हमारे देश में रिश्ते सिर्फ निजी नहीं हैं, रिश्तों को सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यता प्राप्त है। हमारे पारंपरिक समाज के लिए इस तरह के अल्प अवधि के रिश्ते न केवल अस्वीकार्य हैं, बल्कि यह सांस्कृतिक हमला भी है। यह विवाह बनाम वासना का मामला है, जिसके जरिए रिश्तों की परिभाषा बदलने की कोशिश की जा रही है।

लंबी लड़ाई को खत्म करने की कोशिश

भारत ने पाकिस्तान को जो उत्तर दिया है, उसके व्यापक अर्थ हैं। यह एटीएम की मानसिकता और अंग्रेजों के षड्यंत्रों को समाप्त करने की शुरुआत है',...

मैं अपनी बात अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प की उस टिप्पणी से करूंगा जिसमें उन्होंने कहा है कि भारत में यह लड़ाई एक हजार से भी ज्यादा समय से चल रही है। अब अगली बात। इस बार पाकिस्तानी सेना पहलगाम पर अपने जिहादियों से हमला करवा कर सचमुच धोखा खा गई। वैसे तो नियम है कि जब कोई सेना दूसरे देश पर हमला करती है तो वह उस देश की क्षमता, इतिहास और स्वभाव का पहले आकलन कर लेती है। पाक सेना स्वयं या अपने प्रशिक्षित जिहादियों द्वारा भारत में कहीं न कहीं हमला करती रहती है। उस हमले का रूप चाहे कोई भी क्यों न हो। 'हजार जख्म देकर लहूलुहान करना', यह युद्ध का नया सिद्धांत है। इसमें खर्चा कम होता है और मनोवैज्ञानिक लाभ ज्यादा मिलता है। पाकिस्तानी सेना पिछले कई दशकों से यही कर रही है। इस लम्बे अरसे में उसने भारत की प्रतिक्रिया का आकलन भी कर लिया है। मुम्बई हमले के बाद पाक सेना को अंदेशा था या नहीं, लेकिन भारत के लोगों को आशा थी कि सरकार इस हमले का सही उत्तर देगी। लेकिन देसी-विदेशी दबावों के चलते उसने वह उत्तर नहीं दिया। उसके बाद पाक सेना के थिंक टैंकों ने भारतीय प्रतिक्रिया को लेकर शायद अंतिम निष्कर्ष भी निकाल लिए कि भारत ज्यादा से ज्यादा अमेरिकी शक्तियों के आगे गुहार लगाएगा। लेकिन पाक सेना को पुलवामा हमले के बाद की प्रतिक्रिया से सबक लेना चाहिए था या फिर कम से कम ऐसे मामलों में भारत की प्रतिक्रिया को लेकर निकाले गए निष्कर्षों को संशोधित कर लेना चाहिए था। लेकिन पाक सेना ने ऐसा नहीं किया।

वह पुराने जमाने के निष्कर्षों को लेकर ही वार-रूम में भारत के खिलाफ रणनीति बनाती रही। मुझे लगता है यदि पाक सेना के मुखिया जनरल बाजवा होते तो शायद आधुनिक युग में भारत की संभावित प्रतिक्रिया का नई सिरे से आकलन अवश्य करवाते। इसका कारण है। वे देसी मुसलमान थे। वे जाट थे जिनके पुरखे मुगल शासन में कभी मुसलमान बन गए थे। उनके गुण-अवगुण वही थे जो हमारे गुण-अवगुण हैं। लेकिन इस समय पाक सेना के मुखिया आसिम मुनीर एटीएम मूल के मुसलमान हैं। एटीएम मूल के मुसलमानों में भारत पर हमले करने वाले अरब, तुर्क और मुगल स्टाक के मुसलमान हैं जिनकी बची खुचा नस्लें भारत में ही रह गई हैं। यह वह स्टाक है जिसके बारे में कहा जाता है कि रस्सी जल गई लेकिन ऐंठन नहीं गई। एटीएम का भारत (जिसमें पाकिस्तान भी शामिल है) से कुछ लेना-देना नहीं है। इनकी खोपड़ी में अभी भी यह कीड़ा घुसा हुआ है कि कि वे कभी भारत के शासक थे। वे अभी भूतकाल से बाहर नहीं आए हैं। मुनीर अरब मूल के हैं। एटीएम मानता है कि हिंदू-मुसलमान अलग-अलग राष्ट्र हैं। इतना ही नहीं वह यह भी मानता है कि इस्लामी राष्ट्र हिंदू राष्ट्र से श्रेष्ठ है। अंग्रेज एटीएम की इस बीमारी को समझ गए थे। इसीलिए वे जाते वक्त हिंदुस्तान का एक टुकड़ा तोड़ कर एटीएम के हाथ दे गए थे, ताकि वह निरंतर भारत से लड़ता रहे। जिन्ना आदि तो एटीएम के मोहरे थे। यही कारण है कि पाकिस्तान की पहचान स्थापित करने के लिए शुरू से ही एटीएम ने वहां की शिक्षा प्रणाली कर कब्जा कर लिया था। लेकिन इतने दशकों बाद भी पाकिस्तान में सिंधी, पश्तून, बलोच, जाट, राजपूत, गुज्जर, वाल्मीकि इत्यादि नई कृत्रिम पहचान को अपना न सके। वे अपने हजारों हजारों साल के पुराने इतिहास से अपना नाता न तोड़ सके। पाकिस्तान में सिन्धी, बलूच, पश्तून, बलती, दरद सभी इससे अलग होना चाहते हैं। पाक सेना के मुखिया जनरल मुनीर इसीलिए घबराहट में हैं। वे इस्लामाबाद में जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं, गला फाड़ रहे हैं, कि मुसलमान हिंदुओं के साथ नहीं रह सकते।

हम दोनों अलग अलग हैं। हमारा कुछ भी सांझा नहीं है। हम हिंदुओं से कहीं श्रेष्ठ हैं। लेकिन पश्तून, बलोच व सिन्धी चिल्ला रहे हैं कि मुनीर तुम झूठ बोल रहे हो। हमारा तुम से यानी एटीएम से कुछ सांझा नहीं है। मजहब सांझा होने से इतिहास व पहचान सांझा नहीं हो जाती। मुनीर जानता है कि एटीएम ने पहले भी सेना के बल पर ही भारत पर कब्जा किया था। अब भी मुनीर के पास सेना है, शायद वह अपने आप को आज का मोहम्मद बिन कासिम समझता है। वह अपनी आज की सेना के बल पर भारत को डराना चाहता है। सेना तो हिंदुस्तान में अंग्रेजों के पास भी थी। यह भी सच है कि उस सेना में कुछ अफसरों को छोड़कर बाकी सब हिंदुस्तानी ही थे। लेकिन 1857 में और फिर विश्व युद्धों में मोहन सिंह ने व सुभाष चंद्र बोस ने उसी सेना में विद्रोह करवा दिया था जिसके कारण अंग्रेजों को यहां से जाना पड़ा था। पाक की आज की सेना में भी एटीएम के लोग बड़े पदों पर कब्जा किए हैं, बाकी सेना तो देसी मुसलमानों की ही है। एटीएम के मुनीर को अपनी इस सेना पर भी अपनी धाक जमानी है। पाकिस्तान के सिविल प्रशासन को भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना है। पहलगाम का हमला इसी में से निकला है। लेकिन उसने यह अंदाजा नहीं लगाया कि अब भारत भी पहले वाला भारत नहीं रहा। पहलगाम के उत्तर में जो भारत ने किया, वह नए भारत का उत्तर है। उस भारत का जिसके बारे में गलवान की घटना के बाद किसी ने कहा था, अब भारत आंख में आंख डाल कर बात करता है। वह एटीएम द्वारा एक हजार साल पहले शुरू की गई लड़ाई को जीतना चाहता है। मैं हैरान हूं कि अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प ने कैसे समझ लिया कि यह लड़ाई एक हजार से भी ज्यादा समय ले चली आ रही है। भारत में किसी ने भी मुनीर के आज के हमले को इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नहीं समझा। पहलगाम हिंसा के बाद भारत ने जनरल मुनीर को जो उत्तर दिया, वह इसी बात का संकेत है कि भारत एक हजार से चली आ रही इस लड़ाई को अब उसकी अंतिम परिणति तक पहुंचाना चाहता है। एक हजार साल पहले भारत पर हमला करने वाला मोहम्मद बिन कासिम भी अरब था और 2025 में हमला करने वाला जनरल मुनीर भी अरब मूल का है। लेकिन तब से लेकर अब तक सिंधु नदी में बहुत पानी बह चुका है। इस बार जो भारत ने उत्तर दिया है, उसका एक दूसरा पहलू भी है। अब तक यह समझा जाता था कि भारत और पाकिस्तान के बीच झगड़ा कश्मीर को लेकर है। मुनीर ने मजहब के आधार पर अपने द्विराष्ट्र सिद्धांत को प्रस्थापित करते हुए कहा भी कि कश्मीर हमारी दुखती रग है। भारत में भी कुछ लोग ऐसा ही मानते हैं। यही कारण है कि वे अब भी जी-जान से औरंगजेब जैसे लोगों की कब्रों को किसी भी तरह बचाने के काम में लगे हुए हैं। लेकिन मुनीर भी जानते हैं कि उनकी अपनी सोच में भी कश्मीर ही मसला नहीं है। एटीएम के लिए मसला भारत को किसी भी तरह इस्लामी देश बनाना है।

इसलिए आतंकवादियों की जो नस्लें तैयार की जा रही हैं, कश्मीर तो उसका पहला पड़ाव है। जिहादियों के लिए उनकी असली यात्रा तो उसके बाद शुरू होती है। यही कारण है कि अब तक तो भारत सरकार की क्रिया-प्रतिक्रिया भी अपने ही जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में ही होती थी, चाहे जम्मू कश्मीर का वह क्षेत्र नियंत्रण रेखा के इस पार हो या उस पार हो। लेकिन अब नए भारत को समझ आ गया है कि मसला कश्मीर नहीं है, मसला एटीएम की वह बीमार मानसिकता है जो अभी भी मोहम्मद बिन कासिम के जमाने में जी रही है। यही कारण है कि भारत ने बहावलपुर तक जाकर जिहादियों के प्रशिक्षण शिविरों को नष्ट किया। बहावलपुर का जम्मू-कश्मीर से कोई ताल्लुक नहीं है, वह पश्चिमी पंजाब का हिस्सा है। भारत ने पाकिस्तान को जो उत्तर दिया है, उसके व्यापक अर्थ हैं। वह एटीएम की मानसिकता और अंग्रेजों द्वारा भारत के खिलाफ किए गए षड्यंत्रों को समाप्त करने की शुरुआत कही जा सकती है। यह उन लोगों को तो सुकून पहुंचाएगा ही जिनके प्रियजन पहलगाम हमले में मारे गए थे, लेकिन यह पश्तूनों, बलोचों और सिंधियों के लिए भी उत्सव पर्व है। यह पर्व कुछ और वर्गों को भी सुकून देगा, लेकिन हमें जयचंदों से सचेत रहने की जरूरत है।

पाक को कड़ा सबक

पहलगाम में आतंकी हमले के उपरांत पाकिस्तान को भारत ने कड़ा सबक सिखा दिया है। ऐसे समय में सभी राजनीतिक दलों को एकजुटता दिखानी होगी ताकि हर रोज मौत के तांडव से बचा जा सके। क्या सुकून था, क्या हरियाली थी, लेकिन दरिंदगी करने वाले आतंकवादियों को तनिक दर्द नहीं आया कि नई नवेली दुल्हन के सामने उसके पति को मौत के घाट उतार दिया, बच्चों के सामने बाप को मारना, इससे बड़ा काफिर कौन हो सकता है? पत्नियों के विवाह की मेहंदी नहीं गई थी अभी, उनको पति के खून से रंग दिया। कैसे मंसूबे और कैसी कसक, जो छीन ले गई हंसती खेलती जीवन लीलाएं! पहलगाम में हुए इस हमले की घटना पर जितना भी दुख जताया जाए वह दुख कम है। इस हमले ने देश के सभी लोगों के दिलों पर दुखों का एक गहरा भाव प्रकट किया है। इस हमले में मारे गए निर्दोष लोगों का क्या कसूर था? इस दुख को जितना कम करने की कोशिश कर रहे हैं यह दुःख बढ़ता जा रहा है और बदले की भावना को उत्तेजित कर रहा था। पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 पर्यटकों को बिना वजह से मार दिया गया। इस हमले में नवविवाहित दुल्हनों का सुहाग का चूड़ा भी नहीं उतरा था कि आतंकवादियों ने उनको मौत के घाट उतार दिया, विधवा बना दिया। शादी के बाद अपने अरमानों को लेकर कश्मीर घाटी में हनीमून मनाने पहुंचे पर्यटकों को क्या मालूम था कि अब हम घर नहीं पहुंच पाएंगे और इस घाटी में ही अंतिम सांस लेंगे। बहुत ही निंदनीय और जघन्य अपराध हुआ है, जो आतंकवादियों ने मजहब पूछ-पूछ कर गोली मारी है।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, फिर भी यहां पर हिंदुओं को निशाना बनाया जा रहा है। भले ही केंद्र सरकार के धारा 370 व 35 ए निरस्त करने के बाद कश्मीर में आतंकी घटनाओं में काफी गिरावट व विकास कार्य गति पकड़ रहे थे, लेकिन आतंकवादियों ने पहलगाम में यह मजहबी आतंकवादी हमला करके गोलियां केवल हिंदुओं पर नहीं, बल्कि कश्मीरियत, पर्यटन, रोजगार व विकास पर मारी हैं। सरकार हर स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति के तहत कार्य कर रही है, मगर कहा जाता है कि लातों के भूत बातों से कहां सुधरते हैं। जिन्हें जन्नत का शौक है, उन्हें देश की सेना ने जहन्नुम की यात्रा करवा दी है। कुंठित मानसिकता व मजहबी कसक खतरनाक होती है। कर्नाटक के शिवमोगा जिले के निवासी मंजूनाथ राव (47) अपने परिवार-पत्नी पल्लवी राव और बेटे अभिजय (18) के साथ छुट्टियां मनाने के लिए पहलगाम पहुंचे थे। मिनी स्विट्जरलैंड कहे जाने वाले इस क्षेत्र में उनका सैर-सपाटा खूनी मंजर में तब्दील हो गया। पल्लवी ने हमले के बाद एक रिश्तेदार को फोन पर बताया कि शुरुआत में उन्हें लगा कि यह सेना का कोई अभ्यास है, लेकिन कुछ ही देर में सब कुछ बदल गया। जैसे ही वे बस से उतरकर घास के मैदान की ओर बढ़े, आम कपड़ों में एक आतंकी ने उनके पति को सिर में गोली मार दी। वहां पर जितने सिंदूर मिटे, सेना के सिंदूर ऑपरेशन से विधवाओं को कुछ राहत मिली होगी। अब सवाल यह है कि क्या पाक सबक लेगा या दोबारा ऐसी हरकतें करेगा?

मिट्टी में मिलाया आतंक

वाह, देश के जांबाज सैनिको! क्या निशाना था, क्या लक्ष्य चिह्नित किए गए और मात्र 25 मिनट के ऑपरेशन में ही उन अड्डों, मुख्यालयों, मस्जिदों और मदरसों को मिट्टी और मलबा कर दिया गया, जहां आतंकी पनाह लेते थे। वे पाप, हिंसा और गुनाह के 'हरम' थे। पहलगाम नरसंहार में यहीं के आतंकियों ने हमारी बहू-बेटियों के 'सिंदूर' मिटा दिए थे। एक ही प्रतिघात में 35 साल पुराने प्रतिशोध भी ले लिए गए। प्रधानमंत्री मोदी ने इसे 'ऑपरेशन सिंदूर' नाम दिया था। उनका यह कथन भी सार्थक साबित हुआ कि आतंकियों की बची-खुची जमीन को मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। हमारी सेनाओं ने 6-7 मई की दरमियानी रात में 1.05 बजे से 1.30 बजे के मात्र 25 मिनट के समय में आतंकियों के 9 अड्डे मिट्टी में मिला दिए और 100 से अधिक आतंकियों को ढेर कर दिया। लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मुहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन आतंकी संगठनों के मुख्यालयों को भी नेस्तनाबूद कर दिया। जैश के सरगना मसूद अजहर की टिप्पणी ही हमारे हमलों की आक्रामकता की पुष्टि करती है-काश! मैं भी मर जाता, तो अच्छा होता।' ऑपरेशन में उसकी पत्नी, बेटे, बहन-बहनोई, भांजा-भांजी, भांजे की बीवी, भतीजा आदि खानदान के 10 लोगों को भी 'मिट्टी' होना पड़ा। सरगना के करीबी 4 लोग भी मारे गए। पहलगाम में आतंकियों ने भारत की बेटियों को कहा था-तुम्हें नहीं मारेंगे। जाओ और मोदी को बता दो।' मोदी को तो खुद एहसास था कि 'सिंदूर' मिटाया गया है, लिहाजा उनके आदेश पर सेनाओं ने साझा ऑपरेशन तय कर, सटीक खुफिया जानकारी के आधार पर, रात के अंधेरे में 24 मिसाइलें दाग कर आतंकियों के बिल बिखेर दिए, लेकिन पाकिस्तान की हुकूमत और फौज को भनक तक नहीं लगी। पाकिस्तान का 'डिफेंस सिस्टम' सोया ही रहा। यह फौज किस आधार पर परमाणु हथियार के इस्तेमाल के दंभ भरती रही है? वाह सैनिको! तुम्हें देश का सलाम, नमन और साधुवाद! देश के लिए यह गौरव और गर्व का दिन है। हालांकि 21 आतंकी ठिकाने चिह्नित किए गए थे। अर्थात 12 आतंकी बिल अभी शेष हैं।

हम अफसोस कर रहे हैं कि हाफिज सईद, मसूद अजहर, सलाहुद्दीन सरीखे आतंकी सरगनाओं को जिंदा क्यों छोड़ा गया? शायद अब वे देखेंगे कि अपनों की मौत कितनी भयावह और पीड़ादायक होती है! बहरहाल अभी तो भारत की सेनाओं ने आतंकवाद का प्रथम चरण ही 'मिट्टी' किया है। आरंभ है प्रचंड, पाकिस्तान होगा खंड-खंड! आतंक के बिलों में अब भी 'सपोले' जिंदा हैं। उन्हें भी कुचलना है। अभी तो पाकिस्तान की प्रतिक्रिया, उसका संभावित पलटवार, शेष है। पाकिस्तान ने कबूल किया है कि उसके 31 लोग मारे गए हैं, जबकि कई घायल हुए हैं। उसके पंजाब में आपातकाल घोषित किया गया है। हमने सिर्फ उन्हें मारा है, जिन्होंने हमारी बहू-बेटियों का 'सिंदूर' पोंछ दिया था। उन्हें 'सिंदूर' की कीमत और उसका महत्व क्या पता! बहरहाल भारतीय ऑपरेशन में किसी भी सैन्य प्रतिष्ठान, दफ्तर और रिहायशी इलाके या इमारत को खंडित नहीं किया गया है। यह आतंकियों पर ही लक्षित आक्रमण था। भारत के विदेश मंत्री जयशंकर ने सभी बड़े देशों को ब्रीफ किया है कि हमला आतंकी अड्डों और हत्यारों पर किया गया। चीन और तुर्किये के बयान पाकपरस्त रहे, क्योंकि यह उनकी विवशता थी। अब यदि पाकिस्तान ने पलटवार कर हमला किया, तो पूरा पाकिस्तान हमारी सेनाओं के निशाने पर होगा। फिर युद्ध हो सकता है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल ने स्पष्ट चेतावनी दे दी है। हमारी सेनाएं और अद्र्धसैन्य बल फिलहाल 'सुपर अलर्ट' हैं। कर्मचारियों की छुट्टियां रद्द कर दी गई हैं। बहरहाल अब हमें आतंकवाद पर स्पष्ट राष्ट्रीय नीति बनानी होगी। भारत पाकिस्तान को 'आतंकी देश' और 'शत्रु देश' घोषित करे। पाकिस्तान के मारे गए फौजियों के ताबूतों पर राष्ट्रपति और सेना प्रमुख जनरल मुनीर के नाम के फूल अर्पित किए गए। ताबूतों को पाकिस्तान के झंडे में लपेट कर फौजियों ने सलामी दी। आतंकियों को राजकीय सम्मान से 'अलविदा' कहा जाएगा, तो पाकिस्तान की आतंकी सोच बेनकाब होती है। इस छोटे से ऑपरेशन से पाकिस्तान की फौज को मनोवैज्ञानिक तौर पर लकवा मार सकता है, यह विशेषज्ञों का मानना है। सेनाओं ने पाकिस्तान के भीतर 100 किलोमीटर तक हमला किया, पाक की फौज को भारत की सेनाओं की क्षमता का एहसास हो जाना चाहिए।

सज्जनता का अनुशीलन हो, मानव को पथ का पता रहे !'

भारतीय सेना ने भारत के 15 शहरों पर, पाकिस्तान के हमलों को नाकाम करते हुए, पाकिस्तान को करारा जबाब दे दिया है और पाकिस्तान ने भारतीय सेना के पहले ही प्रहार में भारत से मुंह की खाई है। भारतीय सेना ने जहां एक ओर पाक एयर डिफेंस सिस्टम को तबाह कर दिया, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान के तीन लड़ाकू विमानों को भी मार गिराया है। भारत के जम्मू से राजस्थान के जैसलमेर तक पाकिस्तान के सभी हमलों को भारतीय सेना ने अपने डिफेंस सिस्टम से हवा में ही नाकाम कर दिया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि पाकिस्तान ने बुधवार(8 मई 2025) को रात को जम्मू-कश्मीर के अवंतीपुरा, श्रीनगर व जम्मू, पंजाब के पठानकोट, अमृतसर, कपूरथला, जालंधर, लुधियाना, आदमपुर, भटिंडा व चंडीगढ़ तथा राजस्थान के नाल (बीकानेर), फलोदी, उत्तरलाई (बाड़मेर) और गुजरात के भुज सहित उत्तरी और पश्चिमी भारत में कई सैन्य ठिकानों पर हमला करने का प्रयास किया था। इन्हें एकीकृत काउंटर यूएएस ग्रिड और वायु रक्षा प्रणालियों ने बेअसर कर दिया गया। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि पाकिस्तान आतंकवाद और आतंकियों का गढ़ है और वह हमसे सूचनाएं लेकर आतंकियों को छिपाता है। भारत के आपरेशन 'सिंदूर' के बाद जब पाकिस्तान के नौ ठिकानों पर सैकड़ों आतंकवादी मारे गए, तो उन्हें पाकिस्तानी ध्वज में लपेटकर पाकिस्तान द्वारा उन्हें श्रद्धांजलि दी गई, यह दर्शाता है कि पाकिस्तान आतंकवाद और आतंकियों के सहारे ही चलता है और वह आतंकवाद और आतंकियों को प्रश्रय देता है। पूरे विश्व में आज पाकिस्तान की पोल खुल चुकी है। हमने जहां पाकिस्तान के आंतकी ठिकानों पर हमला किया, वहीं पाकिस्तान ने एक तरह से भारत के साथ युद्ध छेड़ते हुए हमारे देश के विभिन्न रिहायशी इलाकों और गुरूद्वारा तक पर हमला किया, लेकिन भारतीय सेना बहुत ही सशक्त है और सेना ने पाकिस्तान को करारा सबक सिखाते हुए मुंहतोड़ जवाब दिया है। सच तो यह है कि पाकिस्तान भारत के ऑपरेशन सिंदूर से बिलबिला चुका है। भारत ने जिस तकनीकी दक्षता के साथ पाकिस्तानी हमलों को हर स्थान पर नाकाम किया और जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम को भी तबाह किया, वह उत्साहित करने वाला है तथा साथ ही यह दर्शाता है कि हमारी सेनाओं के मुकाबले पाकिस्तानी सेनाएं कहीं भी नहीं ठहरती हैं। सच तो यह है कि भारत पाकिस्तान की किसी भी आक्रामकता का जवाब उतनी ही तीव्रता और उसी शैली में देने में पूरी तरह से सक्षम और एक बहुत ही मजबूत देश है। देश की सीमाओं पर तैनात एस-400 एयर डिफेंस मिसाइल हो (जिसने पाकिस्तानी मिसाइलों को निष्प्रभावी बना दिया) या फिर हार्पी ड्रोन, भारत ने इनकी मदद से लाहौर के एयर डिफेंस रडार को ध्वस्त/नाकाम कर दिया ।सच तो यह है कि आज युद्ध पारंपरिक नहीं रहें हैं और विज्ञान और तकनीक का युग है।विज्ञान के इस युग में तकनीक युद्ध में बहुत काम आती है। आज की स्थिति यह है कि भारत अब रक्षा के पारंपरिक तरीकों से कहीं आगे बढ़ चुका है। कहना ग़लत नहीं होगा कि पाकिस्तान की हमलों की कार्रवाई पूरी दुनिया के सामने उसकी गैर-जिम्मेदाराना राष्ट्र वाली छवि की ही पुष्टि करती है। भारत ने आतंकवाद के खिलाफ प्रहार किया, वहां की आम जनता व सैन्य ठिकानों पर नहीं। पाकिस्तान हमलों को लेकर अफवाह पर अफवाहें फैला रहा है। उसके मंसूबे ठीक नहीं हैं, लेकिन हमारी सेनाओं ने पाकिस्तान का भ्रम कुछेक घंटों में ही दूर कर दिया। हमारी सेनाओं ने पाकिस्तानी हमलों को नाकाम करके सटीकता का परिचय दिया है। सच तो यह है कि भारत के एकीकृत काउंटर यूएएस ग्रिड और वायु रक्षा प्रणालियों ने कारगर ढंग से अपना काम किया है। पाकिस्तान हमारे रक्षा तंत्र में सेंध लगाना चाहता था, लेकिन भारत से पार पाना पाकिस्तान के वश की बात नहीं है ।सच तो यह है कि भारत के मुकाबले पाकिस्तान कहीं भी नहीं ठहरता है। आज जहां भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, वहीं हमारे देश की सेनाएं पाकिस्तान की तुलना में बहुत बड़ी,काफी उन्नत और मजबूत हैं। हम अपनी सेना पर पाकिस्तान के मुकाबले 9 गुना ज्यादा खर्च कर रहे हैं, वहीं पाकिस्तान दुनिया के सबसे फिसड्डी देशों की श्रेणी में शुमार है और विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के ऋण पर पूरी तरह से निर्भर है। यदि हम यहां पर विश्व बैंक 2024 के आंकड़ों को देखें तो भारत की जीडीपी 3.88 ट्रिलियन डॉलर है, वहीं पर पाकिस्तान की 0.37 मिलियन डॉलर। हमने जापान को पछाड़कर विश्व की चौथी बड़ी आर्थिक शक्ति होने का गर्व हासिल किया और इस समय हम 4.187 ट्रिलियन डॉलर के आंकड़े तक पहुंच गए हैं। इतना ही नहीं, हमारे देश का विदेशी मुद्रा भंडार 688 अरब डॉलर है, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान का विदेशी मुद्रा भंडार केवल 15 अरब डॉलर है। पाकिस्तान बरसों-बरसों से आतंकवाद का खूनी खेल खेलता रहा है और उसकी आर्थिक हालत आज बहुत ही पतली हो चुकी है। पाकिस्तान के हुक्मरान अपने निजी स्वार्थों को भुनाने के लिए आज पाकिस्तान के आवाम को मौत का पैगाम बांट रहे हैं। आज पाकिस्तान में न तो नेतृत्व नाम की कोई चीज़ रही है और न ही पाकिस्तान में नैतिकता नाम ही की कोई चीज़ शेष बची है, और वह भारत पर आनन-फानन में हमले पर हमले कर रहा है, लेकिन पाकिस्तान हर तरफ मुंह की खा रहा है। हमारे देश के सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान में वायु रक्षा रडार और प्रणालियों को निशाना बनाया और लाहौर की रक्षा प्रणाली को पलों में निष्क्रिय कर दिया ।पाठक जानते हैं कि भारत ने लाहौर, इस्लामाबाद, कराची और सियालकोट पर हमला बोला है। बताया जा रहा है कि भारत के इस हमले में पाकिस्तान को भारी नुकसान हुआ है ।वास्तव में यह भारत की एक बहुत बड़ी सफलता है ।भारत एक जिम्मेदार देश है और वह अब भी काफी संयम बरत रहा है। हाल फिलहाल,पाकिस्तान को बहुत क्षति पहुंची है, लेकिन पाकिस्तान इस बात को खुले रूप से स्वीकार नहीं कर रहा है। पाकिस्तान अभी भी लगातार अपने आवाम के बीच सांप्रदायिक उत्तेजना या युद्ध उन्माद पैदा कर रहा है और उसके आला मंत्री भी जिम्मेदारी का परिचय नहीं दे रहे हैं। वे आपस में ही लड़ रहे हैं। भारत के आपरेशन 'सिंदूर' के बाद पाकिस्तान में हड़कंप मचा हुआ है। ख़बरें तो यहां तक आ रहीं हैं कि पाकिस्तान ने अपने ही सेना प्रमुख पर कार्रवाई की है। सूत्रों की मानें तो आसिफ मुनीर को हिरासत में ले लिया गया है और पाकिस्तान की सरकार ने उन्हें आर्मी चीफ को हटा दिया है और उनकी जगह लेफ्टिनेंट जनरल शाहिद इमरान मिर्जा को पाकिस्तान आर्मी की कमान सौंपे जाने की चर्चा तेज हो गई है। सच तो यह है कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तानी सेना पर सवाल उठने लगे हैं। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान ने आर्मी पर आरोप लगाया है कि उसने आतंकियों के ठिकानों से जुड़ी अहम जानकारियां भारत को लीक कीं। यह भी सामने आया है कि बीएलए ने पाकिस्तान की कई चौकियों पर कब्जा कर अपने झंडे लगा दिए हैं। पाकिस्तान के कई पायलटों ने तो जंग में जाने तक से इंकार कर दिया बताते हैं ।भारत के बड़े हमले में पाक अधिकृत कश्मीर को बड़ा नुकसान हुआ है। यह भी कि अरब सागर में भारतीय नेवी पाक के करीब पहुंच चुकी है। भारतीय सेना द्वारा एक पाकिस्तानी पायलट भी पकड़ लिया गया है। इतना ही नहीं, अमेरिका से भी पाकिस्तान के लिए बुरी खबर सामने आई है। जानकारी के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने पाकिस्तान को फटकार लगाई है। मीडिया रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि पेशावर के 20 इलाकों में ताबड़तोड़ धमाके हुए हैं और पाकिस्तान के 10 शहरों में एमरजैंसी लागू कर दी गई है ।लाहौर, कराची और इस्लामाबाद में जहां ब्लैकआउट लागू कर दिया गया है वहीं पर बहावलपुर में बड़ा धमाका हुआ। पाक सीमा पर भारत की तोपें गरज रही हैं, और बहावलपुर में बड़े धमाके के बाद ब्लैकआऊट व एमरजैंसी लागू है। भारतीय नौसेना ने कराची पोर्ट पर भी समुद्री कार्रवाई की है। इतना ही नहीं, यह भी सामने आया है कि पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत की राजधानी क्वेटा में चार अलग-अलग जगहों पर श्रृंखलाबद्ध हमले हुए। हाल फिलहाल, दोनों देशों के बीच युद्ध जैसा तनाव कायम है, लेकिन अब जरूरत इस बात की है कि हम मनोबल को बनाए रखें और अफवाहों पर ध्यान नहीं दें। पाकिस्तान लगातार अफवाहों पर अफवाहें फैला रहा है, हमें इनसे बचना होगा। हमें यह चाहिए कि हम भारतीय सेनाओं के किसी मूवमेंट आदि की फोटो, वीडियो आदि सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर साझा न करें, ब्लैक आउट का ध्यान रखें। कहना ग़लत नहीं होगा कि युद्ध किसी भी समस्या का स्थाई हल नहीं होता है। पाकिस्तान को यह समझना चाहिए कि वह आतंकवाद व युद्ध के बल पर कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता है। भारत का संदेश हमेशा से ही स्पष्ट रहा है कि वह शांति चाहता है, लेकिन अपनी संप्रभुता और सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करेगा। भारत पंचशील के सिद्धांतों का हमेशा हमेशा से पालन करता आया है और आगे भी करता रहेगा। पाठकों को बताता चलूं कि संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान, अनाक्रमण, घरेलू मामलों में गैर-हस्तक्षेप, समानता और पारस्परिक लाभ, और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पंचशील के सिद्धांत हैं।बहरहाल, 'ऑपरेशन सिंदूर' पहलगाम आतंकी हमले का जवाब है। इसके विपरीत, भारतीय सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाने के पाकिस्तान के विफल मंसूबे दरअसल पाकिस्तान की फितरत को ही दर्शाते हैं। आज युद्ध की आशंकाओं के बीच, देश भर में सिविल डिफेंस डिल, ब्लैक आउट अभ्यास और विभिन्न आपातकालीन तैयारियों को बढ़ावा दिया जा रहा है, जो दर्शाता है कि भारत किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार है।

इस माहौल के बीच आज हम सभी को एकजुट और सतर्क रहने की जरूरत है। आज लगभग लगभग पूरा विश्व हमारे साथ है, जबकि पाकिस्तान के साथ बहुत कम देश हैं, क्यों कि सभी पाकिस्तान के बारे में यह बात जानते हैं कि पाकिस्तान आतंकवाद का गढ़ है। दूसरे शब्दों में कहें तो दशकों-दशकों से पाकिस्तान आतंकवाद को प्रश्रय देता रहा है, और उसका षड्यंत्रकारी खेल पूरी दुनिया के सामने बेनकाब हो चुका है। पाकिस्तान को यह समझना चाहिए कि भारत सिर्फ और सिर्फ आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई कर रहा है। भारत का मकसद उसके साथ युद्ध करना कतई नहीं है, लेकिन पाकिस्तान नहीं मानता है तो भारत कड़ी से कड़ी कार्रवाई करेगा ही। पाकिस्तान को यह समझना चाहिए कि आतंकवाद और उकसावे की नीति से न तो पाकिस्तान का कोई अपना हित सधने वाला है और न ही क्षेत्र में शांति स्थापित होने वाली है। अंत में एक कविता के माध्यम से यही कहूंगा कि -'हे ईश्वर, मालिक, हे दाता, हे जगत नियंता दीनबंधु। हे परमेश्वर प्रभु हे भगवन हे प्रतिपालक हे दयासिंधु। सच्चिदानंद घट घट वासी, हे सुखराशि करूणावतार। हे विघ्नहरण मंगलमूर्त, हे शक्तिरूप हे गुणागार। सभ्यता यशस्वी हो जाय, मानवता का फैले प्रकाश।। सब दिव्य दृष्टि के पोषक हो, कर दो कुदृष्टि का सर्व नाश !! इतिहास गढ़े जाएँ प्रतिपल, पृष्ठों में अकलंकता रहे ! सज्जनता का अनुशीलन हो, मानव को पथ का पता रहे !!'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

कुरैशी सिंह: धर्म से परे नया भारत

गजेन्द्र सिंह

हर दौर में कुछ चेहरे ऐसे होते हैं जो इतिहास की दिशा मोड़ देते हैं — और नए भारत की कहानी में कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ऐसे ही दो नाम बनकर उभरे हैं। पहलगांव में हुए कायराना आतंकी हमले के बाद जब देश शोक और आक्रोश से भर गया था, तब इन दो जांबाज़ महिलाओं ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के संकल्प से न केवल राष्ट्र को भरोसे की नई भाषा दी बल्कि भारत की चुप्पी को एक शक्तिशाली हुंकार में बदल दिया। आज ये दोनों मिलकर 'कुरैशीसिंह' के नाम से जानी जाती हैं — एक ऐसी जोड़ी जो भारत की एकता, ताकत और आशा की सच्ची प्रतीक बन चुकी है।

कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह — दो अलग पृष्ठभूमियों से आने के बावजूद, इन दोनों की भावना एक ही है: मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने का जुनून। गुजरात की धरती से निकली कर्नल कुरैशी भारत की पहली महिला अधिकारी बनीं जिन्होंने बहुराष्ट्रीय सैन्य अभ्यास का नेतृत्व किया। संयम, साहस और रणनीति की मिसाल बन चुकीं कुरैशी के परिवार में देशभक्ति विरासत की तरह है जिसे वह गर्व से जीती हैं। वहीं, विंग कमांडर व्योमिका सिंह — "आकाश की बेटी" — बचपन से ही उड़ान भरने का सपना लेकर बड़ी हुईं और भारतीय वायुसेना में हेलीकॉप्टर पायलट बनकर उन्होंने इसे सच कर दिखाया। जब-जब वो उड़ान भरती हैं, ऐसा लगता है जैसे पूरे भारत की उम्मीदें उनके पंखों में सवार हो जाती हैं।

इनकी कहानी सिर्फ़ दो महिलाओं की नहीं है बल्कि वह प्रतीक है उस नए भारत की, जहां बेटियां सिर्फ़ सीमाओं की रक्षक नहीं, बल्कि देश की आवाज़ बनकर खड़ी होती हैं। पहलगांव आतंकी हमले के बाद शुरू हुआ 'ऑपरेशन सिंदूर' भारत की सैन्य शक्ति के साथ-साथ उसकी नैतिक दृढ़ता का परिचायक बना। इस अभियान के तहत आतंकवादी ठिकानों पर सटीक ज़मीनी हमले, वायुसेना की अद्भुत हवाई कार्रवाइयाँ, दुश्मन के संचार और वित्तीय नेटवर्क को ध्वस्त करना और आतंकवाद के केंद्रों को पूरी तरह निष्क्रिय करना शामिल था। 'सिंदूर' नाम अपने आप में भारतीय संस्कृति के सम्मान, पहचान और प्रतिबद्धता को दर्शाता है — और यही भावना इस पूरे अभियान में स्पष्ट रूप से झलकती है।

साउथ ब्लॉक में हुई ऐतिहासिक प्रेस वार्ता में कर्नल कुरैशी और विंग कमांडर सिंह ने देश को आश्वस्त करते हुए न सिर्फ़ रणनीति का खुलासा किया बल्कि भारत की एकता को एक नई परिभाषा दी। कर्नल कुरैशी ने स्पष्ट कहा, "यह बदला नहीं है, यह एक संदेश है: आप भारत को तोड़ नहीं सकते, बांट नहीं सकते, और इसकी आवाज़ को कभी दबा नहीं सकते।" वहीं विंग कमांडर सिंह ने कहा, "हम यह वर्दी नष्ट करने के लिए नहीं, बल्कि शांति की रक्षा के लिए पहनते हैं। पर अगर चुनौती मिले, तो हम इसकी रक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।" यह क्षण सिर्फ़ सैन्य नेतृत्व का नहीं, बल्कि नैतिक नेतृत्व का भी एक नया आयाम बन गया।

एक मुस्लिम महिला कर्नल और एक हिंदू महिला वायुसेना अधिकारी का मिलकर नेतृत्व करना, अपने आप में एक क्रांतिकारी दृश्य था। इसने दुनिया को दिखा दिया कि भारत में नेतृत्व न जाति से तय होता है, न धर्म से — बल्कि हिम्मत, काबिलियत और देशभक्ति से तय होता है। भारत की बेटियाँ अब सिर्फ़ इंतज़ार नहीं करतीं — वो सामने आती हैं, नेतृत्व करती हैं और देश को गौरव दिलाती हैं।

ऑपरेशन सिंदूर के परिणाम भी उतने ही प्रेरणादायक रहे। प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार, इस अभियान में प्रमुख आतंकी ठिकानों को नष्ट किया गया, सीमा पार के प्रशिक्षण शिविरों को ध्वस्त किया गया, और अत्याधुनिक निगरानी के ज़रिए कई संभावित हमलों को पहले ही रोक दिया गया। इस अभियान ने भारत की सैन्य, कूटनीतिक और सामाजिक शक्ति को नई ऊँचाई दी है।

'कुरैशीसिंह' अब सिर्फ़ एक नाम नहीं बल्कि एक नए भारत की पहचान बन चुका है — ऐसा भारत जो सत्यनिष्ठा, समावेश और साहस से प्रेरित होकर आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में जब दुनिया भर में लोकतंत्र लड़खड़ा रहे हैं और समाजों में बंटवारा बढ़ रहा है, भारत ने एकता, ताकत और अटल मूल्यों की राह पर चलना चुना है। और इस राह की अगुआई कर रही हैं दो महिलाएं, जो अपने रैंक से नहीं, अपने कर्मों से भारत का भविष्य गढ़ रही हैं।

अब भारत की बेटियाँ दरवाज़ों पर दस्तक नहीं देतीं — वे दरवाज़े खोलती हैं और सबसे आगे खड़ी होती हैं।

27वीं ईस्टेनजोन डेवलपमेंट काउंसिल की बैठक स्थगित, अमित शाह नहीं आयेगें रांची

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची।पूर्वी क्षेत्रीय विकास परिषद् की 27वीं बैठक में शामिल होने के लिए रांची नहीं आयेगें 9 को गृहमंत्री अमित शाह . जिस शाह ने गत वर्ष कोलकाता में आयोजित बैठक में झारखंड - बंगाल- -ओडिशा सीमाक्षेत्र में नार्कोटिक ड्रग्स का बढ़ता व्यापार पर ध्यान देने हेतु कहा था जिसके बाद ब्राउन शुगर व्यापार के पर आदित्यपुर क्षेत्र में पुलिस की सक्रियता बढ़ी थी.नशीली पदार्थों का विनष्टिकरण के क्रम में सरायकेला खरसावां जिले के सीनी के पास देश का सर्वाधिक ड्रग्स को विनष्ट किया गया जो रिकार्ड था .

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की झारखंड यात्रा टल गयी है. उन्हें पूर्वी क्षेत्रीय परिषद् की 27वीं बैठक में शामिल होने के लिए रांची आना था. पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक 10 मई को झारखंड की राजधानी रांची में होनी थी. इस बैठक को अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया है. सभी संबंधित राज्यों को सूचित कर दिया गया है कि 10 मई को प्रस्तावित बैठक को स्थगन हेतु, बैठक की नयी तारीख बाद में जारी की जायेगी.

झारखंड में 10 मई को प्रस्तावित होने वाली पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक की तैयारी जोरों से हो रही थी. मुख्य सचिव अलका तिवारी लगातार इसकी जानकारी ले रही थीं. गृह मंत्री अमित शाह को पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक की अध्यक्षता करनी थी. उनका 9 मई को ही रांची आने का कार्यक्रम था. बैठक में बतौर उपाध्यक्ष मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को भी उपस्थित रहना था. उनके अलावा बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, बिहार के उप-मुख्यमनंत्री सम्राट चौधरी, जल संसाधन मंत्री विजय चौधरी, ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी को भी बैठक में शामिल होना था. जिनका मुल समस्या झारखंड में रह रहे ओडिया जनमानस का आज तक विकास नहीं होना ,लोगों का अधिकार आदि पर विभिन्न समय पर दिये गये आवेदनों पर झारखंड सरकार के साथ संपर्क कर समस्याओं का समाधान मुख्य रूप से जनता अपेक्षित थीं ।इसी बीच पुनः मामले को गंभीरता को लेकर दोनों राज्य एवं केन्द्र को निवेदन किये जाने की सूचना मिली है ।

इस प्रस्तावित बैठक में झारखंड से मुख्य सचिव अलका तिवारी, विकास आयुक्त अविनाश कुमार समेत वरीय प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों को बैठक में मौजूद रहने के निर्देश दिये गये थे.जहां पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के आने की पुष्टि नहीं हुई थी. झारखंड में प्रशासनिक तैयारी लगभग पूरी कर ली गयी थी. रांची नगर निगम के प्रशासक ने एयरपोर्ट रोड से लेकर रातू रोड, कडरू, अरगोड़ा व अन्य क्षेत्रों में सफाई की व्यवस्था में होनी थी. इस बैठक को अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया है।

(प्रोपेगेंडा और झूठी ख़बरों से सतर्क रहें) "जब खबरें बनती हैं हथियार: युद्ध, प्रोपेगेंडा और फेक न्यूज"

युद्ध के दौरान फैलाई गई झूठी खबरें न केवल सैनिकों और आम नागरिकों की सुरक्षा को खतरे में डालती हैं, बल्कि समाज में भय और नफरत का भी प्रसार करती हैं। यह न केवल जनता की भावनाओं को भड़काती है, बल्कि सच्चाई की नींव को भी कमजोर करती है। कई बार युद्ध के मैदान से बहुत दूर बैठे लोग भी इन झूठी खबरों के शिकार बन जाते हैं और इससे राष्ट्र की एकता और संप्रभुता को भारी क्षति पहुँचती है।

प्रियंका सौरभ

युद्ध का समय हमेशा से मानव इतिहास का सबसे तनावपूर्ण और संवेदनशील दौर रहा है। जब दो देशों के बीच टकराव चरम पर होता है, तब सिर्फ हथियारों की ही नहीं, बल्कि सूचनाओं की भी लड़ाई लड़ी जाती है। प्रोपेगेंडा और झूठी ख़बरें इस संघर्ष का एक अनिवार्य हिस्सा बन जाती हैं। यह स्थिति विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों के बीच युद्ध के समय अत्यंत जटिल हो जाती है।

यह प्रोपेगेंडा क्यों खतरनाक है ?

युद्ध के दौरान फैलाई गई झूठी खबरें न केवल सैनिकों और आम नागरिकों की सुरक्षा को खतरे में डालती हैं, बल्कि समाज में भय और नफरत का भी प्रसार करती हैं। यह न केवल जनता की भावनाओं को भड़काती है, बल्कि सच्चाई की नींव को भी कमजोर करती है। कई बार युद्ध के मैदान से बहुत दूर बैठे लोग भी इन झूठी खबरों के शिकार बन जाते हैं और इससे राष्ट्र की एकता और संप्रभुता को भारी क्षति पहुँचती है।

इतिहास के सबक

1965, 1971 और कारगिल युद्ध के दौरान भी दोनों देशों ने प्रोपेगेंडा का भरपूर उपयोग किया था। पाकिस्तान ने 1965 में अपने 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' को लेकर भारतीय क्षेत्र में असंतोष फैलाने की कोशिश की थी, जबकि 1971 के युद्ध में भारत ने रेडियो और प्रिंट मीडिया के जरिए अपने सैनिकों और जनता में आत्मविश्वास बनाए रखा। कारगिल युद्ध में भी फर्जी तस्वीरें और विकृत आंकड़े दोनों ओर से साझा किए गए थे।

कैसे फैलता है प्रोपेगेंडा ?

आज की डिजिटल दुनिया में सोशल मीडिया, वॉट्सएप, यूट्यूब और फेक न्यूज वेबसाइट्स के जरिए अफवाहें तेजी से फैलती हैं। फर्जी वीडियो, फोटोशॉप की गईं तस्वीरें और झूठे दावे किसी भी घटना को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत कर सकते हैं। ऐसे में एक साधारण व्यक्ति के लिए यह पहचानना मुश्किल हो जाता है कि क्या सच है और क्या झूठ।

जिम्मेदार नागरिक की भूमिका

युद्ध के समय एक जागरूक और जिम्मेदार नागरिक होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें हर सूचना को बिना जांचे-परखे साझा करने से बचना चाहिए। विश्वसनीय समाचार स्रोतों पर ही भरोसा करें और हर खबर की पुष्टि करें। अगर कोई संदेश या वीडियो संदिग्ध लगे, तो उसे आगे न बढ़ाएं।

प्रोपेगेंडा की मनोवैज्ञानिक चालें

प्रोपेगेंडा का असर केवल सूचना पर ही नहीं, बल्कि लोगों के मानसिक ढांचे पर भी पड़ता है। युद्ध के दौरान डर, असुरक्षा और घृणा जैसी भावनाओं का अधिकतम लाभ उठाया जाता है। यह न केवल समाज को विभाजित करता है, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य पर भी गंभीर असर डालता है।

सरकार और मीडिया की जिम्मेदारी

सरकार और मीडिया की भी जिम्मेदारी बनती है कि वे जनता को सटीक और प्रमाणिक जानकारी तक पहुंचाएं। प्रेस की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए, झूठी खबरों और प्रोपेगेंडा के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। मीडिया को भी यह समझना चाहिए कि उनकी जिम्मेदारी केवल खबर देना ही नहीं, बल्कि खबर की सच्चाई को बनाए रखना भी है।

डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता

आज जब सूचनाएं मिनटों में दुनिया भर में फैलती हैं, तब डिजिटल साक्षरता की महत्ता और बढ़ जाती है। आम नागरिकों को यह सिखाना जरूरी है कि वे किस तरह से फर्जी खबरों की पहचान कर सकते हैं और उन्हें कैसे रोका जा सकता है। इसके लिए स्कूलों, कॉलेजों और सामुदायिक केंद्रों में नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

सत्य की ताकत

सच्चाई की शक्ति कभी क्षीण नहीं होती, चाहे युद्ध का कितना भी कठिन समय क्यों न हो। यह केवल उन लोगों पर निर्भर करता है जो सत्य की रक्षा के लिए खड़े होते हैं। इतिहास गवाह है कि झूठ के महल लंबे समय तक टिक नहीं पाते। यही कारण है कि एक जागरूक और सतर्क समाज ही असली विजय प्राप्त कर सकता है।

मीडिया और सोशल मीडिया का बदलता परिदृश्य

वर्तमान समय में, सोशल मीडिया का प्रभाव पारंपरिक मीडिया से भी अधिक हो गया है। यह एक ऐसा मंच है जहां कोई भी व्यक्ति पत्रकार, संपादक या प्रसारक बन सकता है। इसका लाभ न केवल आम लोग बल्कि आतंकी संगठन और विदेशी खुफिया एजेंसियां भी उठा रही हैं। वे फर्जी अकाउंट, बॉट्स और डिजिटल ट्रोल्स के माध्यम से अफवाहें फैलाकर सामाजिक तनाव पैदा कर सकते हैं।

साइबर युद्ध का खतरा

युद्ध का स्वरूप केवल सीमाओं तक सीमित नहीं है। आजकल साइबर युद्ध एक नया मोर्चा बन चुका है, जिसमें प्रोपेगेंडा और झूठी खबरें एक महत्वपूर्ण हथियार हैं। यह न केवल सूचना को विकृत करता है, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता को भी नुकसान पहुंचा सकता है। ऐसे में साइबर सुरक्षा एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाता है।

सामाजिक जिम्मेदारी और सजगता

हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम केवल सच्ची और प्रमाणिक जानकारी को ही फैलाएं। हमें यह समझना चाहिए कि झूठी खबरें केवल सच्चाई को ही नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों और सामाजिक सद्भावना को भी नुकसान पहुंचाती हैं। युद्ध का समय देशभक्ति और मानवता की कठिन परीक्षा का समय होता है। इस दौरान प्रोपेगेंडा से बचना और सत्य का समर्थन करना हर नागरिक का कर्तव्य है। याद रखें, युद्ध केवल हथियारों से नहीं, बल्कि सत्य और विवेक से भी जीता जाता है।

युद्ध का समय केवल सैन्य ताकत का नहीं, बल्कि सच्चाई और विवेक की परीक्षा का भी होता है। प्रोपेगेंडा से बचना और सच्ची जानकारी तक पहुंचना हर नागरिक की जिम्मेदारी है। हमें न केवल सूचनाओं की सत्यता की जांच करनी चाहिए, बल्कि समाज में एकता और सहिष्णुता को बनाए रखना भी जरूरी है। याद रखें, युद्ध केवल हथियारों से नहीं, बल्कि सत्य और विवेक से भी जीता जाता है। एक जागरूक समाज ही सच्ची विजय का आधार होता है।

चांदीपुर मिसाइल परीक्षण केंद्र पर सुरक्षा बढ़ाई गई; कल एक महत्वपूर्ण बैठक होगी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: पाकिस्तानी हमले की आशंका के मद्देनजर बालासोर के चांदीपुर मिसाइल रेंज में सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। पूर्वी रेंज के डीआईएजी सत्यजीत नायक ने घाटी को सुरक्षित करने के लिए कल एक सुरक्षा बैठक बुलाई है। बताया जा रहा है कि यह बैठक दोपहर दो बजे पीएक्सई परिसर में हो सकती है ।यह बैठक चांदीपुर स्थित रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरओ) कार्यालय में भी आयोजित होने की संभावना है। बताया गया है कि बैठक में आईटीआर निदेशक, पीएक्सई निदेशक, जिला कलेक्टर और एसपी शामिल होंगे।

देश में वर्तमान युद्ध जैसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए रक्षा प्रतिष्ठानों की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए कड़े कदम उठाए जा रहे हैं। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज और प्रूफ एवं परीक्षण प्रतिष्ठान (पीएक्सई) की सुरक्षा व्यवस्था की व्यापक समीक्षा करना है। यह बैठक भी पीएक्सई परिसर में ही आयोजित होने की संभावना है। बालासोर के एसपी ने सभी संबंधित अधिकारियों को बैठक की तैयारियां पूरी करने और समन्वय को प्रभावी बनाने के लिए मिलकर काम करने का निर्देश दिया है। इस संबंध में तटीय सुरक्षा से जुड़े अधिकारियों को भी बैठक में भाग लेने को कहा गया है। इससे समुद्री क्षेत्र की सुरक्षा के बारे में भी पूरी जानकारी मिलेगी।

चांदीपुर स्थित मिसाइल परीक्षण केंद्र पर सुरक्षा कड़ी कर दी गई है। यहां सुरक्षा के चार स्तरों पर विचार किया गया है। सबसे पहले ओडिशा पुलिस को तैनात किया गया है, फिर सेना, फिर डीआरडीओ की अपनी

सुरक्षा टीम और अंत में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) सुरक्षा का चौथा स्तर प्रदान कर रही है। सभी सुरक्षा एजेंसियां हर गतिविधि पर नजर रख रही हैं और किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए सतर्क हैं।

कल होने वाली बैठक में सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत करने के लिए विभिन्न विभागों से आवश्यक जानकारी एवं सुझाव लिए जाएंगे। यह बैठक राष्ट्रीय सुरक्षा के नजरिए से काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है, जहां गंभीर स्थिति को ध्यान में रखते हुए ठोस निर्णय लिए जाएंगे।

माँ-बहनों के सिंदूर से कभी-भी ना खेलना...

माँ-बहनों के सिंदूर से कभी-भी ना खेलना,
वो देश उजड़ जाएगा महंगा पड़ेगा झेलना।
पाकिस्तान के आतंकी शिविरों पे ये हमला,
क्यों,आमंत्रण दिया मौत को जो न सम्हला।
अब देखों हमारा शौर्य व सिंदूर की ताकत,
आतंक ने कितनी बड़ी मोल ले ली आफत।

माँ-बहनों के सिंदूर से कभी-भी ना खेलना,
वो देश उजड़ जाएगा महंगा पड़ेगा झेलना।
हमें गर्व हमारी भारतीय सेना व शासन पर,
अब थर-थर काँप रहें हो क्यों लग रहा डर।
अमानवीय शिविर नष्ट हो रहें बाल हैं बांका,
सब बीलों में छिप गए भाग खड़े हुए आका।

माँ-बहनों के सिंदूर से कभी-भी ना खेलना,
वो देश उजड़ जाएगा महंगा पड़ेगा झेलना।
कौन जैश, लश्कर और हिजबुल बत्ती गुल,
आतंकियों को पालनेवालों के पैरों में शूल।
घर में घुसके मारा और सुरक्षित लौट आए,
ये देखों कितने टुकड़े हुए उन्हें कौन बताए।

संजय एम तराणेकर

भुवनेश्वर हवाईअड्डा हाई अलर्ट पर,हवाई अड्डे के बाहर संदिग्ध बैग मिला, जांच के बाद जब्त

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ने के मद्देनजर देश के विभिन्न राज्यों के हवाई अड्डों पर हाई अलर्ट जारी कर दिया गया है। इसी तरह भुवनेश्वर स्थित बीजू पटनायक हवाई अड्डे पर भी हाई अलर्ट जारी कर दिया गया है ।हवाई अड्डे पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। इसके अलावा, सुरक्षाकर्मी हवाई अड्डे पर यात्रियों के पहचान दस्तावेजों की भी सख्ती से जांच कर रहे हैं। भारत-पाकिस्तान युद्ध की स्थिति के बीच, भुवनेश्वर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के बाहर एक संदिग्ध बैग मिलने से थोड़ी देर के लिए हड़कंप मच गया। सामान की ट्रॉली में रखे बैग की जांच कुत्ते और बम निरोधक दस्ते द्वारा की गई। निरीक्षण के बाद संदिग्ध बैग को जब्त कर लिया गया। इसलिए, यह पता लगाने के लिए खोज शुरू हुई कि यह बैग कैसे आया और कहां से आया ।भारत-पाकिस्तान युद्ध की स्थिति को देखते हुए ओडिशा के विभिन्न हिस्सों में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। सुरक्षा बल सभी संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रख रहे हैं। इसका पता तब चला जब एक यात्री अपना बैग भूल गया।

सीधा वार, आर या पार।

सीने में ज्वाला, निगाहों में अंगार,
फौलाद से भी सख्त हिंद का ललकार,
अब न केवल सरहदें कांपेंगी,
दुश्मन के दिल भी थर्राएंगे बार-बार।

लहू में खौलता इतिहास का गुस्सा,
हर कतरे में बसा प्रतिशोध का झोंका,
यह न सिर्फ युद्ध, यह प्रतिशोध है,
यह इज्जत का संग्राम है,
यह हिंद का अभिमान है।।

अबकी बार न रुकेंगे, न झुकेंगे,
हर गद्दार का हिसाब लेंगे,
इस बार न कूटनीति, न समझौता,
सीधा वार, आर या पार।

मिसाइलों की गर्जना, टैंकों का शोर,
हर कोने में गूंजेगा हिंद का जोर,
उधमपुर से कराची तक,
लद्दाख से बलूचिस्तान तक,
सियाचिन की चोटी से कराची के तट तक,
हर बंकर, हर चौकी, हर मोर्चा,
गूंज उठा 'जय हिंद' के नारों से।

धधक उठेगी जमीन, कांप उठेगा आसमान,
हर धमाके में गूंजेगा हिंदुस्तान,
न चट्टानें रोक पाएंगी, न नदियाँ बहा पाएंगी,
हर बंकर में लहराएगा तिरंगा।

हर गोली में वंदे मातरम्,
हर सांस में भारत मां का जयकार,
मिट जाएंगे, मगर झुकेंगे नहीं,
यही है हिंद का वचन, यही है रण का इकरार।

अबकी बार इतिहास नहीं,
भविष्य का युद्ध है ये,
सिर्फ जीतेंगे, सिर्फ मिटाएंगे,
भारत की अस्मिता, हर हाल में बचाएंगे।

जय हिंद! जय भारत!

-प्रियंका सौरभ

बिरसा जयंती पर रांची में संस्कृति मंत्रालय, कलिंगा भारती सम्मानित करेगा बिरसा मुंडा परिवार

रांची में होगा भव्य आयोजन

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड- झारखंड

रांची, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की तरफ से कलिंगा भारती फाउंडेशन द्वारा रांची में आगामी 11 मई 2025 को विरसा मुंडा जयंती समारोह का भव्य आयोजन आर्यभट्ट सभागार मे किया जायेगा जहां बिरसा मुंडा के परिवार के सदस्य भी भारी संख्या में मौजूद रहेंगे ।

इस भव्य समारोह का विधिवत उद्घाटन राज्य के प्रथम नागरिक राज्यपाल झारखंड संतोष गंगवार करेंगे । जहां विशिष्ट अतिथि के रुप में ओडिशा के पूर्व राज्यपाल रघुवर दास सहित केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ भी मंचासीन होगें । यहां सी पी सिंह आदि अनेक दिग्गज नेता मौजूद शिरकत करेंगे । इस समारोह में सामाजिक चेतना को लेकर जल ,जंगल बचाने उसके साथ सामंजस्य स्थापित कर मानव हक के लिए लड़ाई लड़ने वाले भगवान बिरसा मुंडा के व्यक्तित्व पर विद्वानों

द्वारा प्रकाश डाला जाएगा । संस्कृति के अग्रदूत विरसा मुंडा के जयंती पर विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसमें जैसे गीत , संगीत आदि धीरज महतो, अश्वनी महतो , हेमलता कुमारी से लेकर बिरसा नटुआ दल सोनाहातु की तरफ से सुचादं महतो , प्रभात कुमार महतो नटराज कला केन्द्र ईचागढ़, सरायकेला,लक्खी नाथ महतो न्यू झारखंड कला संगीत केंद्र , बूढाम, लखन गुड़िया द्वारा खूटकाटी मुंडारी गीत , रेबती महतो , चक्रधर महतो करम आखाडा, बुआ डुगरी करम दल चंदन क्यारी , संगीत दल अद्वितीय पारोमिता चौधरी , सुदिप्ता चक्रवर्ती गायन दल , नेहा कुमारी सोनिका मुंडा , आदि अपना कला बिखेरेंगे।

इस कार्यक्रम में बिरसा मुंडा के परिवारिक सदस्यों को सम्मानित किया जायेगा ।जिसमें सुखराम मुंडा, लखीमनी देवी, जौनी मुंडा , जंगल सिंह मुंडा , लखीमनी मुंडा ,सावनी मुंडा , बुधराम मुंडा ,सावनी मुंडा, रवि मुंडा , सुमी मुंडा, कानु मुंडा, सुभद्रा मुंडा, लखीरानी मुंडा , बिरसा मुंडा , नारायण मुंडा आदि सामिल रहेगें।

इस बाबत जानकारी आयोजन समिति के अध्यक्ष राजाराम महतो तथा दिली से आये कलिंगा भारती फाउंडेशन के अध्यक्ष अक्षय सामल ने दी ।

दम है तो तो फिर कहना—"मोदी को बता देना।"

आता हमें हर शत्रु को जड़ से मिटा देना,
दम है तो तो फिर कहना—₹मोदी को बता देना।₹
कलमा पढ़कर बना मुल्क, बलमा बना मुनीर,
घर में घुसकर हुआ हलाला, चाहते है कश्मीर।

बाल न बांका कर सके, रच कितने दुष्चक्र,
हिंद के रक्षक जब बने, हरी-सुदर्शनचक्र।
शांति लगे जब दाव पर, हम भी करते युद्ध,
कृष्ण बने अब सारथी, नहीं अकेले बुद्ध।

हर बात को नज़रअंदाज किया, पर हम नहीं रुकते,
हमारे संघर्ष की कहानी में, इतिहास भी हैं झुकते।
बिना डरे, बिना थके, हम अपनी राह तय करेंगे,
दुश्मनों को चेतावनी, हम फिर लाहौर फतह करेंगे।

आता हमें हर शत्रु को जड़ से मिटा देना,
दम है तो तो फिर कहना—₹मोदी को बता देना।₹
भारत की धरती में शक्ति का संदेश दुनिया को बता दे,
हमारे कदमों में वो शक्ति बसी है, जो हर किले को गिरा दे।

- डॉ सत्यवान सौरभ

रांची में बन रही थी सेना की वर्दी आर्मी इंटलीजेंस ,एटीएस ने मारे छापे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , विगत तीन दिन से भारत-पाकिस्तान में जारी युद्ध के कारण दुनियां की नजर भारत के सैन्य शक्ति पर है पर ऐसे माहौल मे झारखंड की राजधानी रांची में एक ऐसे दुकान का पता चला है, जिसमें भारतीय लड़ाकू सेना की वर्दी तैयार हो रही है. लखनऊ मिलिट्री इंटेलिजेंस से मिली विशेष जानकारी के आधार पर झारखंड एटीएस (आतंक रोधी दस्ता) और एमआई ने शुक्रवार 9 मई को रांची में संयुक्त तलाशी ली. तलाशी के दौरान दीपाटोली कैंट के सामने बूटी मोड़ के पास एक दुकान से भारतीय सेना की लड़ाकू वर्दी और कपड़े बरामद हुए हैं.

बताया जा रहा है कि बिना अनुमति के ये वर्दियां बनायीं जा रहीं थीं. इस दुकान से लोगों को ये कपड़े बेचे भी जा रहे थे. इस मामले की विस्तृत जांच शुरू कर दी गयी है. भारत-पाकिस्तान सीमा पर चल रहे तनाव के कारण अलर्ट की स्थिति को

देखते हुए, ऐसी नकली वर्दी का इस्तेमाल राष्ट्रविरोधी तत्व कर सकते हैं. अगर ऐसा होता है, तो यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकता है.

भी कपड़े और बनी हुई वर्दियों को जब्त कर लिया गया है. आर्मी की वर्दी बनाने का क्या उद्देश्य था किन लोगों को ये वर्दियां बेची जातीं हैं, इसका पता लगाने में एटीएस जुटी है. जांच एजेंसियां सभी संभावित कोणों से मामले की जांच कर रही है. इस सिलसिले में किसी की गिरफ्तारी अब तक नहीं हुई है.

₹आर्मी इंटेलिजेंस द्वारा उनसे बूटी मोड़ स्थित गणेश आर्मी स्टोर में सर्च करने में मदद मांगी गई थी. एटीएस की टीम वहां आर्मी इंटेलिजेंस की मदद को लेकर गई थी. दरअसल लखनऊ आर्मी इंटेलिजेंस में सूचना मिली थी कि गणेश आर्मी स्टोर में सेना की वर्दी आम लोगों को भी बेची जा रही है. इसके अलावा कुछ अन्य जानकारियां भी इंटेलिजेंस को मिली थी जिसे साझा नहीं किया जा सकता है. कार्रवाई करते हुए प्रतिबंधित वर्दी के कपड़े को भी जब्त किया गया है और दो लोगों को हिरासत में लिया गया है जिन्हें सदर पुलिस के हवाले किया गया है'₹ - ऋषभ झा, एसपी, एटीएस.

जमशेदपुर, रांची, कोलकाता में 800 करोड़ का फर्जी जीएसटी घोटाले पर ईडी का जबरदस्त रेड

14000 करोड़ का फर्जी बिल में 90 से ज्यादा सेल कंपनियां

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

जमशेदपुर , लगातार ईडी , एसीबी , सेल टैक्स व इनकमटैक्स का कारवाई का कर्मभूमि बना झारखंड में ईडी ने 14,325 करोड़ फर्जी जीएसटी बिल घोटाले पर 800 करोड़ टैक्स क्रेडिट का दाबा किया था ।जिस कारण छापेमारी कोलकाता , रांची, जमशेदपुर आदि नौ जगह पर बृहस्पतिवार सुबह सेही चली । 90 सेल कंपनियों के जरिये ये फर्जी कारोबार झारखंड से लेकर महानगर कोलकाता तक फैला हुआ मिला ईडी अधिकारियों को ।

जी एस टी घोटाले के ये छापे गुरूवार सुबह जमशेदपुर के शिव कुमार देवड़ा, सुमित गुप्ता सहित कई आरोपियों के घरों पर छापा मारा है। ईडी का आरोप है कि इन सभी ने करीब 14 हजार करोड़ रुपए के फर्जी जीएसटी इनवॉइस बनाकर घोटाला किया है। इन सभी आरोपियों ने 90 से ज्यादा शेल

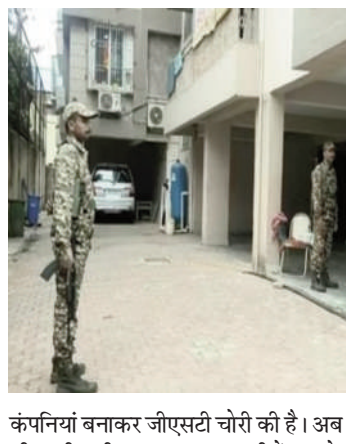

कंपनियां बनाकर जीएसटी चोरी की है। अब जीएसटी की अलग-अलग टीमें इनके ठिकानों पर पहुंचकर तलाशी कर रही हैं।

गुरुवार सुबह ईडी के अधिकारियों के टीम अलग-अलग शहरों में छापा मारने के लिए पहुंची। इस दौरान आरोपियों के ठिकानों पर तलाशी अभियान चल रहा है। ईडी का आरोप है कि इन सभी ने कुल 14,325 करोड़ रुपए के फर्जी जीएसटी इनवॉइस बनाकर, 800 करोड़ रुपए से ज्यादा का गलत तरह से इनपुट टैक्स क्रेडिट का दावा किया था। आरोप है कि गलत तरह से आईटीसी का दावा करके करीब 800 करोड़ रुपए का जीएसटी घोटाला किया है। अब ईडी की अलग-अलग टीमें इस मामले में तलाशी के लिए आरोपियों के ठिकानों पर पहुंची हैं।

ईडी ने कार्रवाई करते हुए रांची से कारोबारी विवेक नरसरिया को जीएसटी फ्रॉड केस में गिरफ्तार किया है। इस दौरान ईडी की दूसरी टीम कोलकाता पहुंची और वहां के कारोबारी शिव देवड़ा और जमशेदपुर में एक टीम ने कारोबारी सगे भाई अमित और सुमित गुप्ता के ठिकानों पर छापा मारा है। जीएसटी विभाग ने पहले भी अमित, सुमित और शिव को गिरफ्तार किया था।

मिली जानकारी के अनुसार, इन सभी कारोबारियों ने 90 से ज्यादा शेल कंपनियां बनाकर जीएसटी चोरी की है। नरसरिया मनीष ट्रेडिंग कंपनी का संचालक है। पिछले साल भी जीएसटी फर्जीवाड़े का मामला डीजीजीई द्वारा पकड़ा गया।

मलोट में नई राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी का उद्घाटन

परिवहन विशेष न्यूज

मलोट में बीएसएनएल टेलीफोन एक्सचेंज के पास लिबर्टी शोरूम के ऊपर दूसरी मंजिल पर एक भव्य नई राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी का उद्घाटन किया गया। इसमें छात्रों को पढ़ाई के लिए बहुत ही आरामदायक माहौल मिलेगा। इसमें छात्रों को एसी और वाई-फाई की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। विद्यार्थियों को सभी प्रकार की परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन दिया जाएगा। इस अवसर पर श्री विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य, श्री अशोक नारंग व श्री धीरज गुप्ता ने कहा कि इस पुस्तकालय की सीटें सीमित हैं तथा पुस्तकालय शुरू होने से अब तक अनेक विद्यार्थी पंजीकरण करवा चुके हैं। यह पुस्तकालय मलोट क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023